हमारे बेजोड़ परिणाम देने वाले उत्पाद

पशुपालकों के लिए जनहित में प्रकाशित

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

आरोग्यं रक्षाम:
Animax Pharma

ऐनिमैक्स फार्मा प्रा० लि०
120, पहली मंजिल, आर जी मॉल, सैक्टर-9,
रोहिणी, नई दिल्ली - 110085
ग्राहक सेवा नम्बर : 09891321775
Email : animaxpharma@gmail.com
Visit us : www.animaxpharma.in

design@9216070680

उत्पादन पुस्तिका : 2024

पशु स्वास्थ्य की सेवा में
आरोग्यं रक्षाम:
Animax Pharma

पशु पालकों को सरल व बोल-चाल की भाषा में समझाने का प्रयास

राष्ट्र के अन्न दाता

तथा

मेरे माता जी व पिता जी को

समर्पित

विषय सूची

शीर्षक		पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना		1
पशुओं में नस्ल सुधार क्यों और कैसे ?		2-3
पशुओं से हर साल एक बच्चा क्यों और कैसे ?		4-7
बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर	(भारत का सबसे बढ़िया चिलेटिड खनिज मिश्रण)	8-11
सिमलेज बोलस	(दूध उतारने व दूध बढ़ाने के लिए)	12-15
अडर-एच	(अडर की सम्पूर्ण देखभाल के लिए)	16-18
अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने का तरीका		19
यूट्राविन	(जेर गिराने व गर्भाशय की सफ़ाई के लिए)	20-21
कूलमैक्स पॉउडर	(गर्मी से राहत प्रदान करने के लिए)	22-23
डाइजामैक्स फोर्ट बोलस	(भूख बढ़ाने के लिए)	24-27
एनपीसी फोर्ट बोलस	(दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न को दूर करने के लिए)	28
मिनलाइस-स्ट्रॉन्ग सोप	(बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाने के लिए)	29
डाइजामैक्स पॉउडर	(शक्तिशाली सूक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार)	30-35
बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं में गर्भ ठहराने का तरीका		36-37
एनरबूस्ट पॉउडर	(पशुओं में ऊर्जा की कमी का एक समाधान)	38-43
जस्टाप्रोजन पॉउडर	(सुरक्षित गर्भकाल के लिए)	44-46
न्यूक्लियोटोन पॉउडर	(नई कोशिकाओं के निर्माण के लिए)	47-49
मिनवर्म	(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)	50-51
मिनफ्लुक-डीएस	(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)	52-53
पुबरऐड पॉउडर	(बछड़ा/बछिया को जल्दी तैयार करने के लिए)	54-57
पशुओं को नए दूध करवाने के तुरन्त बाद ठण्डा टीका नहीं लगवाना चाहिए		58-59
टोक्सऑउट पॉउडर	(दाना-चारा में उपस्थित फफूंद को बाहर निकालने के लिए)	60-63
माइक्रोटोन	(पशुओं के छोटे बच्चों की मृत्यु दर समाप्त करने के लिए)	64-65
सिमलेज हर्ब्स बोलस	(दूध उतारने के लिए)	66-71
दूध का रिकार्ड रखने का तरीका		72-73
गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स	(प्रोटीन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट)	74-76
अडर-एच गोल्ड	(अयन संबंधित विकारों को दूर करने के लिए)	77-79
मिनफरलिव	(रक्त की मात्रा बढ़ाने व लिवर को सुरक्षित रखने के लिए)	80-83
पशुओं के छोटे बच्चों की देखभाल करने का तरीका		84-85
मुर्राह भैंस		86
साहिवाल गाय		87
होली के आस-पास पशुओं को हीट में लाने का तरीका		88-89
अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने का तरीका		90-91
पशु पालन में रखी जाने वाली सावधानियाँ		92

प्रस्तावना

जब हमारी कम्पनी के अधिकारी सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में गए और पशु पालकों से वार्तालाप की तो सभी पशुपालक मित्रों का कहना था कि किसी भी कम्पनी की कोई ऐसी पुस्तिका नहीं है जो सरल भाषा में हो तथा जिसे पढ़कर हमें पशुओं की समस्याओं के बारे में थोड़ा-बहुत ज्ञान हो जाए। पाकिस्तान सीमा से लगते राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के पशुपालकों से लेकर नेपाल सीमा से लगते उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के पशुपालकों को एक ऐसी पुस्तिका की तलाश थी जिसे पढ़कर उन्हें पशुओं की समस्याओं के बारे में कुछ सामान्य ज्ञान हो जाए।

आपकी कम्पनी ने पशुपालकों की इस जरूरत को समझा और नतीजा इस पुस्तिका के रुप में आपके सामने है। हम अपने प्रयास में कितने सफल रहे, इसकी जानकारी देना मत भूलना क्योंकि हर प्रयास में कुछ न कुछ सुधार की गुंजाइश रहती ही है। जैसा कि दुनिया का सबसे तेज धावक बनने के लिए बोल्ट ने किया। 100 और 200 मीटर की रेस को विश्व रिकार्ड के साथ जीतने के बाद बोल्ट ने कहा कि मैंने हर बार अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने का प्रयास किया और अगली बार उसमें और अधिक सुधार का प्रयास किया। इसी प्रकार इस प्रयास में सुधार हेतु हमें आपके सुझावों का इस नम्बर पर इंतजार रहेगा। (Even the best can be amended.)

अक्टूबर 12, 2024

डॉ० बिजेन्द्र कुमार
(पीएच. डी.)
09416052820 (मो.)

पशुओं में नस्ल सुधार क्यों और कैसे ?

पशुपालक मित्रों, जीवित प्राणियों में नस्ल का बहुत महत्त्व होता है। प्रत्येक नस्ल की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। जो केवल उसी नस्ल में देखने को मिलती हैं, अन्य किसी नस्ल में नहीं।

नस्ल क्या होती है?

ऐसे जानवरों का समूह जिनके पैदा होने का स्थान एक होता है तथा जिनमें अपने कुछ विशेष गुण होते हैं जो उन्हें उसी जाति के जानवरों से अलग करते हैं, नस्ल कहलाती है।

उदाहरण के तौर पर मुर्राह नस्ल की भैंस एक ब्यांत में 4,500 लीटर तक दूध देती है जबकि अन्य नस्ल की भैंसें जैसे नीली-रावी, कुण्डी, भदावरी, तराई, महसाना, सुरती जाफराबादी, टोडा और नागपुरी आदि इतना दूध नहीं देतीं। इसी प्रकार अमेरिकन नस्ल की गाय (जरसी, होलसटिन-फ्रीजियन) ज्यादा दूध देती हैं जबकि हमारी साहीवाल, गिर, रेड-सिन्धी, थारपारकर, डिओनी, राठी, खिलाड़ी या नागौरी नस्ल की गाय कम दूध देती हैं।

पशु प्रजनन विज्ञान में एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा हम कम दूध देने वाली नस्ल की भैंस को मुर्राह नस्ल की भैंस बना सकते हैं। इस विधि को क्रोस ब्रीडिंग कहते हैं। अर्थात् जब एक ही जीव की दो नस्लों का आपस में मिलान करवाते हैं तो इसे क्रोस ब्रिडिंग कहते हैं। इसमें कम अच्छी नस्ल की मादा को अच्छी नस्ल के नर से मिलवाते हैं। अच्छी नस्ल के साण्ड के वीर्य को हम कृत्रिम गर्भाधान के द्वारा भी प्रयोग कर सकते हैं।

कृत्रिम गर्भाधान क्या होता है?

यह वह विधि है जिसमें मादा पशु को साण्ड से न मिलवाकर कृत्रिम तरीके से मादा पशु की बच्चादानी में बीज रखते हैं।

कृत्रिम गर्भाधान से होने वाले लाभः

- कम अच्छी नस्ल को आसानी से अच्छी नस्ल बनाया जा सकता है।
- गाय को जब साण्ड से नए दूध करवाते हैं तो साण्ड वजाइना में सीमन छोड़ता है जबकि कृत्रिम गर्भाधान में हम सीमन बच्चेदानी के मुहाने पर छोड़ते हैं। इस प्रकार सीमन को वजाइना से लेकर बच्चेदानी के मुहाने तक की यात्रा नहीं करनी पड़ती, अतः गर्भधारण की सम्भावना बढ़ जाती है।

क्रोस ब्रीडिंग द्वारा कम अच्छी नस्ल की भैंस को अच्छी नस्ल की भैंस में कैसे तब्दील कर सकते हैं?

		कम अच्छी नस्ल की भैंस (उदाहरण के लिए नागपुरी भैंस)	X	मुर्राह झोटा
(50 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ1	X	मुर्राह झोटा
(75 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ2	X	मुर्राह झोटा
(87.5 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ3	X	मुर्राह झोटा
(93.75 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ4	X	मुर्राह झोटा
(96.875 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ5	X	मुर्राह झोटा
(98.4375 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ6	X	मुर्राह झोटा
(99.22 प्रतिशत मुर्राह)	←	एफ7	X	मुर्राह झोटा

इस प्रकार उपरोक्त सूची से आपको ज्ञात हो गया होगा कि सातवीं पीढ़ी में नागपुरी भैंस 99.22 प्रतिशत मुर्राह बन जाती है।

पशुओं में गर्भावस्था का समय

पशु का नाम	गर्भावस्था का समय
बिल्ली/ कुत्तिया	2 महीने ± 2 दिन
भेड़-बकरी	5 महीने ± 5 दिन
गाय	9 महीने ± 9 दिन
भैंस	10 महीने ± 10 दिन
घोड़ी	11 महीने ± 11 दिन
ऊँटनी	14 महीने ± 14 दिन
हथिनी	24 महीने ± 24 दिन
सुअरी	3 महीने, तीन सप्ताह ± 3 दिन

पशुओं से हर साल एक बच्चा क्यों और कैसे ?

पशुपालक मित्रों, एक अच्छी गाय / भैंस वह है जो हर साल एक बच्चा दे। पशु प्रजनन वैज्ञानिक गाय / भैंस के एक ब्यॉंत को 305 दिन का मानते हैं। इसके पीछे उनका तर्क है कि 5 महीने 30 दिन के और 5 महीने 31 दिन के। इस प्रकार दस महीनों के 305 दिन बन जाते हैं। गाय का गर्भकाल 9 महीने ± 9 दिन और भैंस का गर्भकाल 10 महीने ± 10 दिन होता है। अर्थात् गाय का गर्भकाल भैंस से एक महीना कम होता है। अगर हम भैंस से हर साल एक बच्चा लेने में कामयाब हो जाते है तो गाय से तो आसानी से कामयाब हो सकते हैं क्योंकि गाय का गर्भकाल भैंस से एक महीना कम होता है।

उदाहरण के तौर पर मान लो कि आपकी भैंस पहली जनवरी को ब्याई है तो आने वाले एक साल में उसका व्यवहार इस प्रकार होना चाहिएः

सूची क्रमांक 1.

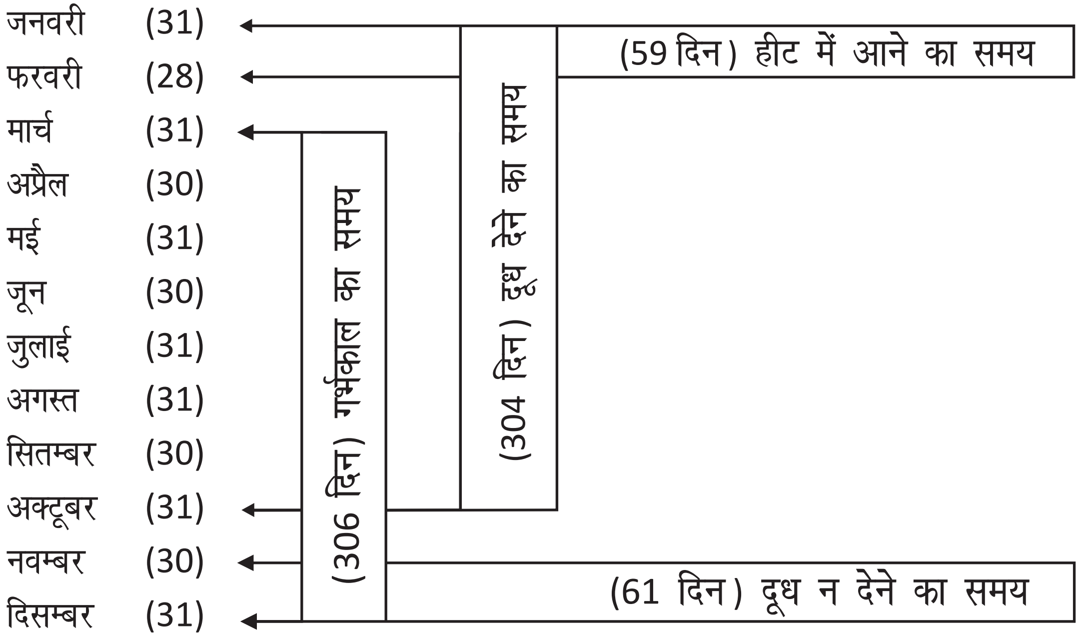

- ➢ एक जनवरी से 31 अक्टूबर (304 दिन) = दूध देने का समय
- ➢ एक जनवरी से 28 फरवरी (59 दिन) = हीट में आने का समय
- ➢ एक मार्च से 31 दिसम्बर (306 दिन) = गर्भकाल का समय
- ➢ एक नवम्बर से 31 दिसम्बर (61 दिन) = दूध न देने का समय

उदाहरण के तौर पर मान लो कि आपकी गाय पहली जनवरी को ब्याई है तो आने वाले एक साल में उसका व्यवहार इस प्रकार होना चाहिएः

सूची क्रमांक 2.

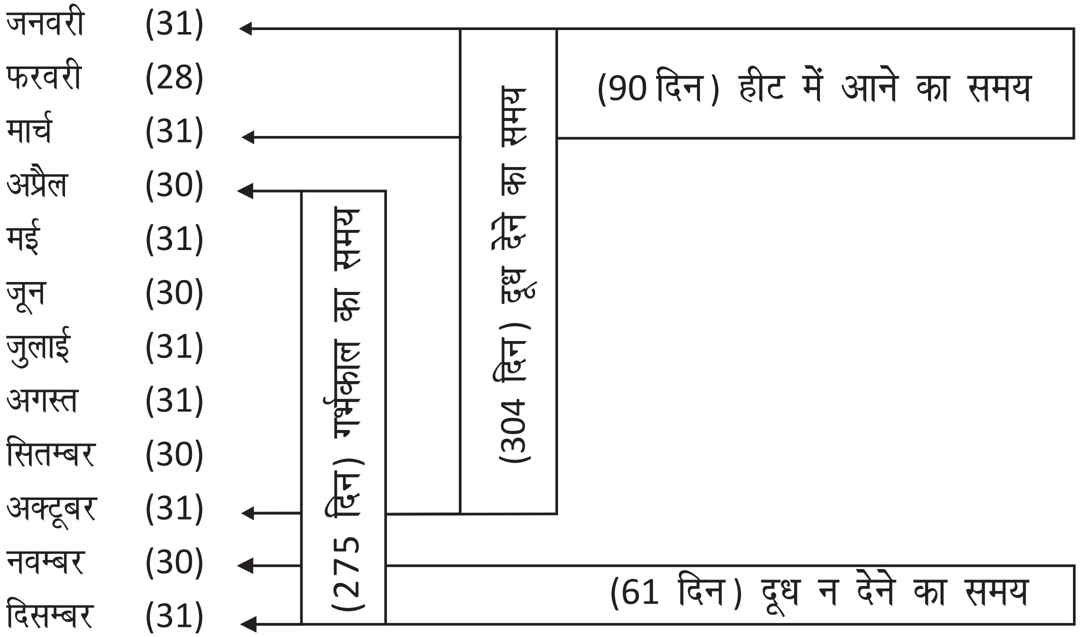

- ➢ एक जनवरी से 31 अक्टूबर (304 दिन) = दूध देने का समय
- ➢ एक जनवरी से 31 मार्च (90 दिन) = हीट में आने का समय
- ➢ एक अप्रैल से 31 दिसम्बर (275 दिन) = गर्भकाल का समय
- ➢ एक नवम्बर से 31 दिसम्बर (61 दिन) = दूध न देने का समय

देहात में पशुओं में बांझपन की एक बहुत बड़ी समस्या है। ज्यादातर पशु ब्याने के 6-7 महीने बाद ही हीट में आते हैं और हमारे पशुपालक इसकी परवाह भी नहीं करते हैं। मित्रों, अगर ब्याने के बाद 2 महीने के अन्दर-अन्दर आपकी भैंस हीट में नहीं आती है तो आपको उस भैंस से काफी नुकसान हो रहा है। और आपको इसका एहसास भी नहीं होता क्योंकि आपने कभी गहराई से व्यापारी की तरह हिसाब लगाया ही नहीं। आमतौर पर हम एक भैंस का दूध 5-6 ब्याँत तो पीते ही है। अगर कोई भैंस हर साल एक बच्चा देती है तो हमें उस भैंस से पाँच साल में पाँच बच्चे व पूरे पाँच ब्याँत का दूध मिलता है। जो भैंस हर साल एक बच्चा देती है, सामान्यतः उसका दूध न देने का समय (DRY PERIOD, ड्राई पीरियड) दो महीने का होता है। लेकिन जो भैंस ब्याने के बाद समय से हीट में न आकर देरी से हीट में आती है तो उसका ड्राई पीरियड भी ज्यादा होता है। अर्थात् जो भैंस चार महीने देरी से हीट में आती है तो उसका ड्राई पीरियड दो महीने का न होकर ज्यादा होगा। अगर एक नम्बर सूची के अनुसार हिसाब लगाये तो उसका ड्राई पीरियड चार महीने का होगा। अगर एक भैंस चार महीने देरी से हीट में आती है तो आने वाले 5 साल में उसका व्यवहार इस प्रकार होगाः

जनवरी पहला बच्चा	जनवरी	जनवरी	जनवरी	**जनवरी** चौथा बच्चा
फरवरी	फरवरी	फरवरी	फरवरी	फरवरी
मार्च	मार्च	मार्च	मार्च	मार्च
अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल	अप्रैल
मई	**मई** दूसरा बच्चा	मई	मई	मई
जून	जून	जून	जून	जून
जुलाई	जुलाई	जुलाई	जुलाई	जुलाई
अगस्त	अगस्त	अगस्त	अगस्त	अगस्त
सितम्बर	सितम्बर	**सितम्बर** तीसरा बच्चा	सितम्बर	सितम्बर
अक्टूबर	अक्टूबर	अक्टूबर	अक्टूबर	अक्टूबर
नवम्बर	नवम्बर	नवम्बर	नवम्बर	नवम्बर
दिसम्बर	दिसम्बर	दिसम्बर	दिसम्बर	दिसम्बर

अर्थात् अगर एक भैंस ब्याने के बाद 4 महीने से देरी में हीट में आती है तो आपको उससे पाँच साल में पाँच बच्चे न मिलकर चार बच्चे ही मिलेगें। इस प्रकार चार महीने देरी से हीट में आने के कारण आपको एक भैंस से निम्नलिखित नुकसान होते हैः

1) एक बच्चा कम मिलता हैः इस नुकसान का कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता क्योंकि बच्चे तो बेशकीमती होते हैं। एक कटिया 26 लाख की भी बिक सकती है तथा एक झोटा 1 करोड़ का भी बिक सकता है।

2) एक ब्याँत का दूध कम मिलता हैः एक भैंस सामान्यतः एक ब्याँत में 3500 लीटर दूध तो देती ही है। आजकल दूध की कीमत 60 रुपये प्रति लीटर है। इस प्रकार हमें एक ब्याँत का दूध न मिलने के कारण 3500 x 60 = 2,10,000 रुपये का नुकसान होता है।

3) ड्राई पीरियड 8 महीने ज्यादा होता हैः अगर एक भैंस एक ब्याँत में 3500 लीटर दूध देती है तो वह आठ महीने में 2800 लीटर दूध देगी। इस प्रकार ज्यादा ड्राई पीरियड होने से 2800 x 60 = 1,68,000 रुपये का नुकसान होता है।

इस प्रकार अगर एक भैंस समय से हीट में न आकर अगर मात्र चार महीने देरी से ही हीट में आती है तो हमें पाँच साल में एक बच्चा कम व 2,10,000 + 1,68,000 = 3,78,000 रुपये का नुकसान होता है। अब बात आती है कि इस नुकसान से कैसे बचा जा सकता है? इसके लिए हमको कोई विशेष प्रयास नहीं करने हैं। आपको केवल अपने पशुओं को 30-35 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड रोज़ाना खिलाना है और इस नुकसान से छुटकारा पाना है। अब बात आती है कि 35 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड खिलाने से आपका प्रति पशु कितना खर्चा बढ़ जाता है? बायोबीऑन गोल्ड 20 किलोग्राम की कीमत 3755 रुपये है।

20,000 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड की कीमत = 3755 रुपये

1 ग्राम .... $= \dfrac{3755}{20,000}$ रुपये

35 ग्राम .... $= \dfrac{3755 \times 35}{20,000}$ रुपये

= 6.57 रुपये

बायोबीऑन गोल्ड का एक भैंस का एक दिन का खर्चा = 6.57 रुपये

बायोबीऑन गोल्ड का एक भैंस का 365 दिन का खर्चा = 6.57 x 365 = 2398.05 रुपये

= 2398.05 x 5 = 11,990.25 रुपये

इस प्रकार बायोबीऑन गोल्ड का एक भैंस का 5 साल का खर्चा 11,990.00 रुपये है और फायदा 3,78,000 रुपये व एक बच्चा ज्यादा मिलने का है।

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर

(भारत का सबसे बढ़िया चिलेटिड खनिज मिश्रण)

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर वैज्ञानिकों द्वारा की गई दो खोजों के आधार पर बना हैः

1) केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार के वैज्ञानिकों की टीम ने डॉक्टर दलीप लाल के नेतृत्व में मिट्टी की जाँच करके खनिज मिश्रण बनाने का एक शुद्ध (खांटी) भारतीय फार्मूला तैयार किया। बायोबीऑन गोल्ड डॉक्टर दलीप लाल की टीम द्वारा बताये गये उसी फार्मूला के आधार पर ही बना है।

2) राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के वैज्ञानिक डॉक्टर टी. प्रसाद ने खोज के दौरान पाया कि चिलेटिड अवस्था में जिंक, मैंगनीज और कॉपर खिलाने से पशुओं में ज्यादा दूध बढ़ता है, बांझपन व बार-बार गाभिन होने की समस्या दूर होती है तथा छोटे बच्चों में रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। जबकि साधारण अवस्था में जिंक, मैंगनीज और कॉपर खिलाने के कारण पशुपालकों को ज्यादा खर्चा उठा कर भी कम लाभ मिलता है।

बायोबीऑन गोल्ड के प्रत्येक 1 किलो 200 ग्राम में मिलता हैः

डाइकैल्शियम फॉस्फेट	928 ग्राम
मैग्नीशियम कार्बोनेट	40 ग्राम
जिंक विद अमाइनो एसिड चिलेटस	10 ग्राम
मैंगनीज विद अमाइनो एसिड चिलेटस	4 ग्राम
कॉपर विद अमाइनो एसिड की चिलेटस	3 ग्राम
पोटाशियम आयोडाइड	1 ग्राम
मनन ओलिगोस्केराइड	50 ग्राम
बेसिलस सटिलिस	20 ग्राम

जब वैज्ञानिकों ने विभिन्न गाँवों में बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर पशुओं को खिलाया तो इसके बहुत ही बढ़िया परिणाम सामने आएः

- 70 प्रतिशत भैंसे व झोटियाँ हीट में आ गईं।
- छोटे पशुओं में जल्दी वजन बढ़ा।
- दुधारू पशुओं में अच्छा दूध बढ़ा।

इस प्रकार बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर दूध बढ़ाने के साथ-साथ पशुओं को गर्मी में भी लाता है।

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर की खूबियाँ इस प्रकार हैंः

1) बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर पशु को डाले गए दाने-चारे को अच्छी प्रकार से हज़म करता है

बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर में *बेसिलस सिटिलिस* नामक बैक्टीरिया डाला गया है। इसके एक ग्राम में 50 लाख बैक्टीरिया के गुच्छे (ढाणियाँ) बनाने की क्षमता होती है अतः आप अपने पशुओं को जो भी दाना-चारा डालेंगे यह बैक्टीरिया उसे आसानी से हज़म करने में पशु की मदद करता है।

2) बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर दाने-चारे में उपस्थित बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं को बाहर निकालता है

हम अपने पशुओं के लिए सूखा चारा बहुत ज्यादा मात्रा में (गेहूँ का तूड़ा या ज्वार-बाजरा के गद्दे) इकट्ठा रखते हैं ताकि हमें बार-बार तंग न होना पड़े। कोई भी वस्तु जब काफी समय तक स्टोर की जाती है तो उसमें बीमारी फैलाने वाले जीवाणु लग जाते हैं जैसे गेहूँ में सुरसी, चने में घुन और सूखे चारे में फफूँदी। आम का अचार तो हर घर में मिल जाता है। अगर हम अचार को जल्दी-जल्दी न सम्भालें तो उस पर मटमैली रंग की परत जम जाती है। यह मटमैली रंग की परत नुकसान पहुँचाने वाली फफूँदी होती है। साल भर का स्टोर किया हुआ गेहूँ का तूड़ा जब खत्म होने को होता है तो वह पीला पड़ जाता है। यह पीलापन फफूँदी के कारण होता है। बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर में मनन ओलिगोसेक्राइड डाला गया है। मनन ओलिगोसेक्राइड बीमारी फैलाने वाले जीवाणुओं के ऊपर चिपक कर उन्हें गोबर के रास्ते बाहर निकाल देता है जिसके कारण बीमारी फैलाने वाले जीवाणु अपना विषैलापन नहीं छोड़ पाते और परिणामस्वरूप पशु को दस्त नहीं लगते तथा दूध उत्पादन बढ़ जाता है।

3) चिलेसन क्या होती है?

हम जब भी कोई खनिज तत्त्व साधारण अवस्था में खिलाते हैं तो वह पशु के पेट में जाकर किसी अन्य खनिज तत्त्व के साथ क्रिया करके गोबर के रास्ते बाहर निकल जाता है। हमने खनिज तत्त्व खिलाया तो इसलिए था कि वह खून में घुलकर पशु का उत्पादन बढ़ाएगा लेकिन उत्पादन बढ़ाना तो दूर वह गोबर के रास्ते बाहर निकल आता है। इस प्रकार खनिज तत्त्व पर हमारा खर्चा बेकार गया। खनिज तत्त्वों की पशु के पेट में जाकर आपस में क्रिया न हो इसके लिए खनिज तत्त्वों की आयोनिक अवस्था पर अमाइनो एसिड की परत चढ़ा दी जाती है ताकि जब खून में अमाइनो एसिड घुले तो उसके साथ वह खनिज तत्त्व भी घुल जाए जिससे पशु का उत्पादन बढ़े और हमारे पैसों की पूरी वसूली हो जाए। बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर में जिंक, मैंगनीज और कॉपर का अमाइनो एसिड से चिलेसन किया गया है।

4) डीसीपी कैल्शियम

दुनिया में कैल्शियम का सबसे अच्छा माध्यम डीसीपी है। इस प्रकार बायोबीऑन गोल्ड में दुनिया का सबसे अच्छा कैल्शियम डाला गया है। बायोबीऑन गोल्ड में डाला गया डीसीपी इनओरगेनिक और हाइड्रेटिड प्रकृति का है।

5) कैल्शियम - फास्फोरस की उपयुक्त मात्रा

एक लीटर दूध में 1.1 ग्राम कैल्शियम होता है। दूध में कैल्शियम का आधा फॉस्फोरस भी होता है। इस प्रकार एक लीटर दूध में 1.1/2 = 0.55 ग्राम फॉस्फोरस होता है। अतः एक लीटर दूध में 1.1 + 0.55 = 1.65 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस होता है। 20 लीटर दूध देने वाले पशु के शरीर से दूध के जरिये कैल्शियम-फॉस्फोरस निकलता है = 1.65 x 20 = 33 ग्राम

बायोबीऑन गोल्ड की खुराक है = 50 ग्राम

50 ग्राम बायोबीऑन गोल्ड में कैल्शियम-फॉस्फोरस मिलता है = $\frac{928 \times 50}{1200}$ = 38.67 ग्राम

इस प्रकार 20 लीटर दूध देने वाले पशु को 33 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस चाहिए जबकि बायोबीऑन गोल्ड की 50 ग्राम खुराक में 38.67 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस मिलता है।

लिक्विड कैल्शियम के प्रत्येक 100 एम.एल. में होता है:

कैल्शियम	1,650 मिलीग्राम	विटामिन डी-3	8,000 आई.यू.
फॉस्फोरस	825 मिलीग्राम	विटामिन बी-12	100 माइक्रोग्राम

अगर इसे 5 लीटर में निकालना हो तो आप उपरोक्त को 50 से गुणा कर दीजिए। इस प्रकार आपको पाँच लीटर कैल्शियम के पूरे जार में मिलता है:

कैल्शियम	82,500 मिलीग्राम	विटामिन डी-3	4,00,000 आई.यू.
फॉस्फोरस	41,250 मिलीग्राम	विटामिन बी-12	5000 माइक्रोग्राम

पाँच लीटर लिक्विड कैल्शियम = 82,500 + 41,250
= 123.75 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस

बायोबीऑन गोल्ड = 928 ग्राम कैल्शियम-फॉस्फोरस

बायोबीऑन गोल्ड का एक पैकेट = $\frac{928}{123.75}$ = 7.49 लिक्विड कैल्शियम के जार

निम्नलिखित परिस्थितियों में बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए:

- बांझपन दूर करने के लिए।
- जब पशु खुलकर हीट में ना आए।
- जब पशु हीट में आने के बाद पुकारता न हो।
- जब पशु बार-बार गाभिन होता हो।
- जब पशु के पेशाब में खुन आने लग जाए तो सहायक इलाज के रूप में।

खुराकः

बछड़ा/बछिया के लिए : 30 से 40 ग्राम रोज़ाना

बड़े पशुओं के लिए : 50 से 60 ग्राम रोजाना

1 टन फीड में 1.2 किलोग्राम बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर मिलाना है।

उपलब्धताः 1 किलो 200 ग्राम, 5 किलोग्राम, 10 किलोग्राम व 20 किलोग्राम

बायोबीऑन गोल्ड- ज्यादा दूध व ज्यादा बच्चे, बायोबीऑन गोल्ड के वायदे सच्चे

सिमलेज बोलस

(कैल्शियम की पूर्ति करके दूध बढ़ाने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पशुओं में कैल्शियम का बहुत महत्त्व होता है। हर एक लीटर दूध में 1.1 ग्राम से 1.2 ग्राम कैल्शियम होता है। अर्थात ज्यादा दूध देने वाले पशु को ज्यादा कैल्शियम की आवश्यकता होती है। पशुओं मे कैल्शियम की पूर्ति के लिए सिमलेज बोलस का इस्तेमाल करें।

सिमलेज की प्रत्येक बोलस में हैः

ट्राइबेसिक कैल्शियम फास्फेट	4.8 ग्राम
विटामिन डी-3	10,000 आई.यू.
मैग्नीशियम	20 मिलीग्राम
विटामिन बी-12	100 माइक्रोग्राम
विटामिन ई	25 मिलीग्राम
विटामिन एच (बॉयोटिन)	100 माइक्रोग्राम
एल. लाइसिन	125 मिलीग्राम
लेप्टाडिनिया रेटीकूलाटा (जीवन्ती)	350 मिलीग्राम
एसपेरेगस रेसिमोसस (शतावरी)	2500 मिलीग्राम

कुछ पशुपालक, पशुओं में कैल्शियम की पूर्ति के लिए लिक्विड कैल्शियम भी पिलाते हैं। लिक्विड कैल्शियम के प्रत्येक 100 एम.एल. में होता हैः

कैल्शियम	1,650 मिली ग्राम
फॉस्फोरस	825 मिली ग्राम
विटामिन डी-3	8,000 आई.यू.
विटामिन बी-12	100 माइक्रोग्राम

अगर इसे 5 लीटर में निकालना हो तो आप उपरोक्त को 50 से गुणा कर दीजिए। इस प्रकार आपको पाँच लीटर कैल्शियम के पूरे जार में मिलता हैः

कैल्शियम	82,500 मिली ग्राम
फॉस्फोरस	41,250 मिली ग्राम
विटामिन डी-3	4,00,000 आई.यू.
विटामिन बी-12	5000 माइक्रो ग्राम

सिमलेज की एक बोलस में 4.8 ग्राम ट्राईबेसिक कैल्शियम फास्फेट मिलता है और सिमलेज के एक डिब्बे में 20 गोलियाँ आती हैं। इस प्रकार आपको सिमलेज के पूरे डिब्बे में 96,000 मि.ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है।

5 लीटर लिक्विड कैल्शियम में 1,23,750 मि. ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है। इस प्रकार सिमलेज बोलस का पूरा डिब्बा लगभग 4.00 लीटर लिक्विड कैल्शियम के बराबर है। मज़ेदार बात यह है कि 5 लीटर कैल्शियम का जार आपको 100 रुपये से लेकर 800 रुपये तक मिलता है यानि कि कैल्शियम का कोई निश्चित रेट ही नहीं है। यह आप लोगों के साथ खिलवाड़ हो रहा है।

लिक्विड कैल्शियम केवल मात्र दूध बढ़ाती है। जबकि सिमलेज बोलस दूध तो बढ़ाती ही है इसके साथ-साथ यह पशु के पावस को, पशु की दूध धारण करने की क्षमता को, दूध की गुणवत्ता को बढ़ाने के अलावा दूध कोशिकाओं की मुरम्मत भी करती है।

कई बार आप कैल्शियम में विटामिन की छोटी शीशी भी मिलाते हैं। विटामिन की छोटी शीशी के प्रत्येक एम.एल. में आपको मिलता हैः

विटामिन ए	12,000 आई.यू.
विटामिन डी-3	6,000 आई.यू.
विटामिन ई	48 मिलीग्राम
विटामिन बी-12	20 माइक्रोग्राम

सिमलेज बोलस में आपको विटामिन ए को छोड़कर बाकि तीन विटामिन मिल जाते हैं। आप पाँच लीटर कैल्शियम के जार में 300 एम. एल. विटामिन की शीशी मिलाते हैं जिसकी कीमत आप 350 रुपये अदा करते हैं। इस प्रकार आप 800 रुपये कैल्शियम पर और 350 रुपये विटामिन पर अर्थात् कुल 1150 रुपये खर्च करते हैं जबकि सिमलेज बोलस पर आपको केवल 360 रुपये खर्च करने पड़ेंगे।

हमारा काम आपको जागृत करना है। जिस लाभ के लिए आप 1150 रुपये खर्च करते हैं वही लाभ आपको 360 रुपये में उपलब्ध है।

सिमलेज बोलस	लिक्विड कैल्शियम
• सिमलेज बोलस खिलाने के अनेक फायदे हैं।	• लिक्विड कैल्शियम पिलाने के कुछ ही फायदे हैं।
• सिमलेज बोलस के एक डिब्बे में आपको 96 ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है जो लगभग 4.00 लीटर लिक्विड कैल्शियम के बराबर है।	• 5 लीटर कैल्शियम में आपको 123.75 ग्राम कैल्शियम-फास्फोरस मिलता है।
• विटामिन मिलाने की आवश्यकता नहीं है।	• विटामिन की छोटी शीशी मिलानी पड़ती है।
• इसकी कीमत मात्र 360 रुपये निश्चित है।	• एक तो इसकी कोई निश्चित कीमत नहीं है, दूसरे कैल्शियम और विटामिन मिलाकर आपको लगभग 1150 रुपये देने पड़ते हैं।
• बोलस में होने के कारण pH का कोई चक्कर नहीं है।	• इसकी pH अम्लीय होती है अर्थात् सामान्य से कम। सामान्य से कम pH में जब विटामिन मिलाते हैं तो थोड़े ही समय बाद विटामिन नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार आपके विटामिन मिलाने के पैसे बेकार चले जाते हैं।
• पशु को खिलाना आसान है।	• पशु को खिलाना थोड़ा मुश्किल है।

दूध बढ़ाने के साथ-साथ सिमलेज बोलस के और भी फायदें हैं:

(क) सिमलेज बोलस दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाती है।

(ख) सिमलेज बोलस दूध की गुणवत्ता को बढ़ाती है।

(ग) सिमलेज बोलस दूध कोशिकाओं की मुरम्मत करती है।

सिमलेज बोलस दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाती है

सिमलेज बोलस में उपस्थित विटामिन एच लेवटी की दूध कोशिकाओं में फैलने और सिकुड़ने की क्षमता प्रदान करके लेवटी में दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाती है।

सिमलेज बोलस दूध की गुणवत्ता को बढ़ाती है

सिमलेज बोलस में उपस्थित विटामिन ई, एल-लाइसिन व विटामिन बी-12 दूध की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं अर्थात् दूध को गाढ़ा बनाने में मदद करते हैं। जब पशु को थनैला रोग हो जाता है तो दूध में मरी हुई कोशिकाएं आने लगती हैं जिससे दूध का स्वाद बिगड़ जाता है। सिमलेज बोलस थनैला रोग के दौरान दूध में मरी हुई कोशिकाएं आने से रोककर दूध की गुणवत्ता को बनाये रखती है।

सिमलेज बोलस दूध कोशिकाओं की मुरम्मत करती है

जब हम सुबह-शाम दूध निकालते हैं तो थन की कुछ कोशिकाओं को नुकसान होता है क्योंकि देहात में मुट्ठी से दूध न निकालकर थन पर अँगूठा लगाकर दूध निकाला जाता है। यह नुकसान ताजा ब्याए पशु में ज्यादा होता है। थन की इन कोशिकाओं के नुकसान को बचाने के लिए सिमलेज बोलस में मैग्नीशियम डाला गया है। मैग्नीशियम टिशू रिपेयर का काम करता है अर्थात् दूध कोशिकाओं की मुरम्मत करके दूध दूहने से कोशिकाओं को होने वाले नुकसान से बचाता है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में केवल सिमलेज बोलस ही खिलाएँ:

- जब पशु को थनैला रोग हो गया हो।
- जब पशु बच्चा गिरा दे।
- जब पशु अनियमित रूप (खड़ मारता हो) से दूध दे।
- जब पशु पिछले ब्याँत से कम दूध देता हो।
- जब मौसम में बदलाव आ रहा हो।
- जब पशु दूध चढ़ाता (डोकले करता) हो।
- जब पशु ब्याने के तुरन्त बाद दूध न दे।

खुराक:

एक बोलस सुबह एक शाम दस दिनों तक

उपलब्धता: एक डिब्बे में 20 बोलस

सिमलेज बोलस: कैल्शियम की पूर्ति करके दूध बढ़ाने के लिए।

अडर-एच

(अडर की सम्पूर्ण देखभाल के लिए)

पशुपालक मित्रों, थनैला रोग पर दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने बहुत काम किया है। शोध के पश्चात् वैज्ञानिकों का मत है कि

(1) जब पशुओं के शरीर में ब्याने से दो महीने पहले और ब्याने के दो महीने बाद तक विटामिन ई की कमी हो जाती है तो थनैला रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

(2) विटामिन सी थनैला रोग में सूजन को कम करता है।

थनैला रोग होने पर हमारे बड़े-बूढ़े नीम्बू का रस व खाण्ड देते थे। नीम्बू के रस में एस्कोरबिक एसिड होता है। एस्कोरबिक एसिड को विटामिन सी भी कहते हैं। इस प्रकार हमारे बड़े-बूढ़ों व वैज्ञानिकों के विचार आपस में मिलते हैं। अडर-एच मे विटामिन ई व सी दोनों ही मिलते हैं। अतः अगर ब्याने से दो महीने पहले आप पशुओं को अडर-एच पिलाएँगे तो थनैला रोग होने कि संभावना समाप्त हो जाएगी क्योंकि अडर-एच विटामिन ई की कमी को नहीं होने देगा। इस प्रकार अडर-एच थनैला रोग में बहुत ही उपयोगी हैं।

अडर-एच के प्रत्येक एम.एल. में मिलता हैः

विटामिन ए	20,000 आई.यू.	विटामिन डी-3	10,000 आई.यू.
विटामिन सी	50 मिलीग्राम	विटामिन ई	50 मिलीग्राम
विटामिन एच	12.5 माइक्रोग्राम		

विटामिन एच अडर की दूध ग्रंथियो में फैलने और सिकुड़ने की क्षमता प्रदान करके अडर की दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है। उदाहरण के तौर पर आप एक गुब्बारा लें। उसमें थोड़ी सी हवा भर कर निकाल दें। हवा निकालने के बाद अगर आप उस गुब्बारे में फिर से हवा भरेंगे तो आप पाएगें कि जहाँ तक पहले हवा भरी गई थी वहाँ तक तो गुब्बारा आसानी से फूल जाता है उसके बाद हवा भरने में थोड़ा जोर लगाना पड़ता है। इस गुब्बारे की हवा फिर से निकालकर देखेगें तो आप पाऐगे कि जहाँ तक दुबारा हवा भरी गई थी वहाँ तक गुब्बारा लचीला हो गया है और वहाँ तक हवा फिर से आसानी से भरी जा सकती है। इस प्रकार बार-बार हवा भरने व निकालने के कारण गुब्बारे में लचीलापन आ जाता है और गुब्बारें में हवा का दवाब भी बढ़ जाता है। ठीक इसी प्रकार विटामिन एच लेवटी की दूध ग्रंथियों में फैलने और सिकुड़ने की क्षमता प्रदान करके लेवटी की दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है। इस प्रकार अडर एच लेवटी रुपी बर्तन के आकार को बढ़ा देती है।

थनैला रोग से होने वाले नुकसानः

- थनैला रोग के परिणामस्वरूप आपको दूध का बहुत ज्यादा नुकसान होता है।
- कई बार थन खत्म हो जाता है या थन सिकुड़ कर छोटा (चढ़ जाता है) हो जाता है।
- थनैला रोग के इलाज पर बहुत अधिक खर्च आता है।

पशुपालक मित्रों, जब भी आपके पशु को थनैला रोग हो जाए तो आप उसे इलाज के साथ-साथ रोजाना 10 एम.एल. अडर-एच अवश्य पिलायें क्योंकि जो इलाज आप करवा रहे हैं, उससे केवल इन्फैक्शन समाप्त होता है। इन्फैक्शन के कारण थन की कोशिकाओं का जो नुकसान हुआ है, उसके लिए आप कुछ नहीं देते। अडर-एच थन की कोशिकाओं की मुरम्मत करता है जिससे थन मरेगा नहीं, चढ़ेगा नहीं और दूध पूरा आएगा। अगर आपने थन मरने से बचा लिया तो समझो पशु की आधी कीमत बचा ली।

जिस पशु का थन पिछले ब्यॉंत में खत्म हो जाता है उस पशु को अगर गर्भावस्था के आठवें, नौवें और दसवें महीने में 10 एम.एल. अडर-एच हर रोज़ 10 दिनों तक पिलाया जाए तो थन खुलने के 50 प्रतिशत अवसर होते हैं। इसी तरीके से आप असमान (टेढ़ी) लेवटी को भी सीधा कर सकते हैं।

कई बार पशुपालक मित्रों को लगता है कि पशु के ब्याने का महीना भर रह गया है लेकिन इसकी लेवटी को देखकर लगता ही नहीं कि यह बच्चे को जन्म देने वाली है। इस प्रकार के पशुओं को अगर आप 10 एम.एल. अडर-एच 25 दिन तक रोज़ाना पिलाएँगे तो पशुओं की बड़ी अच्छी लेवटी बन जाएगी क्योंकि अडर-एच दूध कोशिकाओं में लचीलापन लाकर दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाता है।

पशुपालक मित्रों, जैसा कि आप जानते हैं पशुओं में सबसे ज्यादा दूध तीसरे ब्यॉंत में होता है। लेकिन अगर आप खारकी (पहली बार ब्याने वाली) झोटी को गर्भावस्था के सातवें, आठवें और नौवें महीने तथा इसी प्रकार दूसरे ब्यॉंत में ब्याने से पहले 10 एम.एल. अडर-एच पिलाएँगे तो आपका पशु दूसरे ब्यॉंत में ही सबसे ज्यादा दूध देने लगेगा। इस प्रकार एक पशु से आप लगभग 500 से 1000 लीटर ज्यादा दूध लेने में कामयाब हो जाएँगे।

कई भैसों की त्वचा बड़ी खुरदरी होती है तथा कइयों का रंग थोड़ा कम काला (चामरा) होता है। इस प्रकार के पशुओं को अडर-एच देने से त्वचा एकदम मुलायम और रंग एकदम काला स्याह हो जाता है।

ज्यादा दूध देने वाले पशु जब ब्याने के नजदीक होते हैं, तो उनके थनों से दूध अपने आप टपकने लगता है क्योंकि दूध के भार के कारण थन की स्फिंकटर मसल ढीली हो जाती है जिससे पशुओं का दूध टपकना शुरु हो जाता है। अडर-एच स्फिंकटर मसल को मजबूती प्रदान करके दूध के टपकने को रोकती है। अतः दूध टपकने वाले पशुओं को आप 10 एम.एल. अडर-एच 10 दिनों तक पिलाएँ।

कई बार पशुओं के सींग भुरने लगते हैं और खुरों में दरारें पड़ने लगती हैं। ऐसे पशुओं को भी आप अडर-एच पिलायें ताकि सींगो का भुरना तथा खुरों का चटकना बन्द हो जाए।

डेयरी में जो साण्ड/झोटा गर्भाधान के लिए रखें जाते हैं उनकी गाय/ भैंस खाली रहने लगती हैं क्योंकि लगातार गर्भाधान के कारण उनके वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या कम हो जाती है। अतः गर्भाधान करने वाले साण्ड/झोटा को अडर-एच अवश्य पिलायें ताकि उनके द्वारा गर्भाधान की गई गाय/भैंस खाली न रहें क्योंकि अडर-एच शुक्राणुओं की संख्या को बढ़ाता है।

पशु की बच्चेदानी में किसी भी प्रकार का संक्रमण होने की अवस्था में थनैला रोग होने की संभावना भी बढ़ जाती है क्योंकि बच्चेदानी का संक्रमण ही तो अयन में फैलता है। अतः पशु की बच्चेदानी में किसी भी प्रकार का संक्रमण होने पर अडर-एच अवश्य पिलाएं जिससे बच्चेदानी का संक्रमण ठीक हो जाता है और पशु को थनैला रोग होने की संभावना भी खत्म हो जाती है।

खुराकः 10 एम.एल. रोजाना

उपलब्धताः 100 एम.एल., 250 एम.एल., 500 एम.एल., 1 लीटर तथा 2 लीटर

अडर-एचः लेवटी की दूध धारण करने की क्षमता को बढ़ाने के लिए

अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने का तरीका

(जब प्रसव के दौरान पशु को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है)

पशुपालक मित्रों, कई बार, पशु को प्रसव के दौरान कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जैसे किः- पशु का बच्चा फँस जाए या पशु की जेर अटक जाए या पशु का छटाव शुरु न होने पाए। जब भी प्रसव के दौरान आपके पशु का बच्चा फँस जाए तो बच्चा सुलझाने के लिए आपको तुरन्त डॉक्टर साहब को बुलाना चाहिए। डॉक्टर साहब पहले दिन बच्चा सुलझाते हैं और दूसरे दिन जेर निकालने आऐगें। इसी प्रकार जब पशु की जेर अटक जाती है तो हमें जेर निकलवाने के लिए डॉक्टर साहब को बुलाना चाहिए। उपरोक्त परिस्थितियों में पशु को दूध से चलाने के लिए निम्नलिखित तरीके का पालन करना चाहिए।

पहला कदमः

बच्चेदानी में दवाई रखवानाः प्रसव के बाद 15-20 दिन तक बच्चेदानी का मुँह खुला रहता है। अतः उपरोक्त परिस्थितियों में हमें यूट्राविन-ओजेड 100-100 एम.एल. तीन दिन तक बच्चेदानी में रखवानी चाहिए ताकि बच्चेदानी का संक्रमण (बीमारी) ठीक हो जाए। बच्चेदानी के संक्रमण के कारण ही थनैला रोग होने की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए बच्चेदानी के संक्रमण को ठीक करना निहायत ही जरुरी है। इसके साथ पहले दिन से ही मिनफरलिव 100 एम०एल० सुबह-शाम दिन दिनों तक पिलाएँ।

दूसरा कदमः

चौथे दिन से पशु को 250 एम.एल. यूट्राविन 8 दिनों तक अवश्य पिलायें ताकि पशु का छटाव शुरु हो जाए क्योंकि जब तक पशु का छटाव शुरु नहीं होगा तब तक पशु दूध से भी नहीं चलेगा।

तीसरा कदमः

जब आपको लगता है कि आपका पशु मैले से चलने लग गया है तो फिर 1 किलोग्राम एनरबूस्ट की चार खुराक बनाकर 250 ग्राम सुबह-शाम दो दिन तक खिलाएँ। अगर एनरबूस्ट पॉउडर की चार खुराक खिलाने के बाद पशु का दूध बढ़ जाता है तो फिर चौथे कदम को अपनाना चाहिए नहीं तो यहीं रुक जाना चाहिए।

चौथा कदमः

एनरबूस्ट पॉउडर 100 ग्राम, सिमलेज दो बोलस और दो बोलस सिमलेज हर्ब्स सुबह-शाम खिलाएँ। इस प्रकार पशु के साथ मेहनत करके प्रसव के दौरान होने वाली कठिनाइयों के बावजूद भी आप पशु का दूध बढ़ा सकते हैं।

यूट्राविन

(जेर गिराने व गर्भाशय की सफ़ाई के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब पशु की जेर अटक जाती है तो उसके परिणामस्वरूप आपको निम्नलिखित नुकसान होते हैंः

- पशु दूध से नहीं चलता।
- पशु देरी से गाभिन होता है।
- पशु के गर्भाशय में बीमारी हो जाती है जिससे दूध के साथ-साथ आपको एक बच्चा भी कम मिलता है।

उदाहरण के तौर पर अभी आपका पशु ब्याने के छः महीने बाद गाभिन होता है। अगर यही पशु ब्याने के दो महीने बाद गर्मी में आ जाए तो हमारे चार महीने बच जाते हैं। एक ब्याँत के चार, दूसरे के चार और जोड़ दें तो आठ महीने तथा तीसरे के चार और जोड़ दें तो 12 महीने हो जाते हैं। बारह महीने पशु का एक ब्याँत होता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि अगर पशु ब्याने के छः महीने बाद गर्मी में न आकर दो महीने बाद गाभिन होता है तो हमें उसी पशु से तीन बच्चे न मिलकर चार बच्चे मिलेंगे अर्थात् आपको एक ब्याँत का दूध व एक बच्चा ज़्यादा मिलता है। इस प्रकार दो ब्याँत का अन्तर (इन्टरकाविंग पीरियड) कम करके हमें दोहरा लाभ होता है।

पशुपालक मित्रों, जैसे एक फसल लेने के बाद दूसरी फसल लेने के लिए हम खेत को दोबारा जोतते हैं, दोबारा बीज बोते हैं और दोबारा खाद-पानी लगाते हैं उसी प्रकार पशु से भी एक बच्चा मिलने के बाद दूसरा बच्चा लेने के लिए हमें दोबारा पशु का ख्याल रखना चाहिए। देहात में एक कहावत है कि “100 डांगर 100 के और एक डांगर भी 100 का”। अतः अगर आप कम पशु रखकर उनकी अच्छी देखभाल करते हैं तो आपको लाभ उतना ही होगा जितना आपको ज्यादा पशु और कम देखभाल करने पर होता है।

पशुपालक मित्रों, आप अपने पशु को ब्याने के तुरन्त बाद यूट्राविन अवश्य पिलायें। इससे पशु को अनेक लाभ होंगेः

- पशु आसानी से जेर डाल देगा।
- पशु के गर्भाशय की सफाई होगी।
- पशु के गर्भाशय को बीमारी नहीं लगेगी।
- पशु पूरे दूध पर आ जाएगा।
- पशु समय से गाभिन होगा।

युट्राविन एक आयुर्वेदिक औषधि है जो बच्चेदानी की सफाई के साथ-साथ दूध भी बढ़ाती है।

यूट्राविन के खास फायदेः

- गर्भाशय की मासंपेशियों में संकुचन पैदा करके पशु की आसानी से जेर डालने में मदद करती है।
- बच्चेदानी को गीला रख कर बच्चेदानी की पूरी सफाई करती है।
- बच्चेदानी में किसी भी प्रकार के इन्फैक्शन या मवाद की संभावना को समाप्त करती है।
- पशु को पूरे दूध पर लाती है।
- ब्याने के पश्चात् जनन अंगों को पुनः अपनी सामान्य अवस्था में लाकर अगले गर्भ धारण के लिए तैयार करती है जिससे पशु के दो ब्याँतों का समय (इन्टरकाविंग पीरियड) कम हो जाता है।

खुराकः

जेर गिराने के लिएः

बड़े पशुओ में : 250 मि.ली. हर 2 घण्टे बाद।

छोटे पशुओ में : 100 मि.ली. हर 2 घण्टे बाद।

गर्भाशय की सफाई के लिएः

बड़े पशुओ में : 100 मि.ली. रोजाना 10 दिनों तक।

छोटे पशुओ में : 50 मि.ली. रोजाना 10 दिनों तक।

उपलब्धताः 1 लीटर

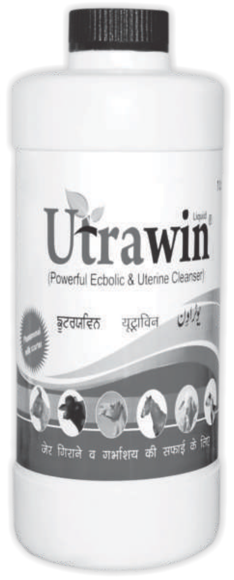

युट्राविनः जेर गिराने व गर्भाशय की सफ़ाई के लिए

कूलमैक्स पॉउडर

(गर्मी से राहत प्रदान करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, अपने पशुओं को गर्मी से राहत दिलाने के लिए आप कूलमैक्स पॉउडर का ही प्रयोग करें। जून-जुलाई में उत्तर भारत में मानसून की बरसात शुरू हो जाती है जिसके कारण वातावरण में उमस हो जाती है। उमस वाली गर्मी सहन करना बहुत ही मुश्किल होता है। जैसा कि देहात में कहावत भी हैः "के मारे साझे का काम, के मारे भादों का घाम"

जब पशु गर्मी से बेहाल हो जाता है तो

- पशु के शरीर का तापमान बढ़ जाता है।
- पशु कम चारा खाता है।
- पशु का दूध कम हो जाता है।

कूलमैक्स पॉउडर पशु को गर्मी से राहत प्रदान करके सामान्य तापमान पर लाता है। जिससे पशु पुनः सामान्य चारा खाने लगता है और गर्मी की वजह से कम होने वाले दूध को वापिस लाता है। कूलमैक्स पॉउडर के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता हैः

कैल्शियम लैक्टेट	1 ग्राम
पोटाशियम क्लोराइड	4 ग्राम
मैग्नीशियम सल्फेट	4.5 ग्राम
सोडियम क्लोराइड	0.8 ग्राम
सोडियम बाइकार्बोनेट	0.7 ग्राम
सोडियम सिटरेट	3 ग्राम
डैक्सट्रोज	39.1 ग्राम
ओरगेनिक क्रोमियम	0.9 ग्राम
वाटर सोल्यूबल कारबोहाइड्रेट	41 ग्राम
लैक्टोबैसिलस स्पोरोजिनस	1500 मिलियन स्पोरस
विटामिन सी	4.0 ग्राम

कूलमैक्स के लाभः

- पशु को गर्मी से राहत प्रदान करता है।
- पशु को वापिस सामान्य चारे पर लाता है।
- पशु को वापिस पूरे दूध पर लाता है।
- दस्तों में पशु के शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है।
- सर्दियों में छोटे पशुओं को ताकत प्रदान करता है।

खुराकः	बड़े पशुओं मेंः	100 ग्राम दिन में दो बार
	छोटे पशुओं मेंः	20-30 ग्राम दिन में दो बार
	मुर्गियों मेंः	10 ग्राम 100 मुर्गियों के लिए

उपलब्धताः 500 ग्राम, 1 किलोग्राम व 5 किलोग्राम

कूलमैक्स पॉउडरः गर्मी से राहत के लिए।

डाइजामैक्स फोर्ट बोलस

(भूख बढ़ाने के लिए)

पशुपालक मित्रों, आपने अनुभव किया होगा की जब पशु तनाव में हो या पशु को एन्टीबायोटिक का टीका लगाते हैं तो पशु का दूध कम हो जाता है। कारण, तनाव से या एन्टीबायोटिक लगने से पशु के पेट में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या कम हो जाती है। लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु पशुओं की चारा हज़म करने में मदद करते हैं। लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं के कारण ही दूध से दही बनती है। दूध से दही बनाने में लैक्टोबेसिलस नामक बैक्टिरिया सहायक होता है। अतः लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु जीवित प्राणियों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। पशु के पेट में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ाने के लिए आप डाइजामैक्स फोर्ट बोलस का प्रयोग करें। डाइजामैक्स फोर्ट की प्रत्येक बोलस में मिलता हैः

लाइव इस्ट कल्चर	:	17.5 बिलियन सीएफयू
प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरुडनरिचि	:	100 मिली ग्राम
बोविजाइम	:	500 मिली ग्राम
सी फ्लोरा	:	1000 मिली ग्राम

जब भी आप पशु को ज्यादा मात्रा में गेहूँ, गेहूँ का दलिया या बाजरा-ज्वार की कड़वी खिलाते हैं तो पशु के पेट में तेजाब (लैक्टिक एसिड) बनना शुरू हो जाता है। तेजाब बनने से पशु के पेट की pH सामान्य से कम हो जाती है, जिससे पशु दाना-चारा छोड़ देता है। डाइजामैक्स में उपस्थित लाइव इस्ट कल्चर फरमन्टेसन की प्रक्रिया द्वारा रुमन की pH को सामान्य बनाकर पशु को पुनः दाने-चारे पर लाती है। डाइजामैक्स फोर्ट की एक बोलस में 17.5 बिलियन लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनाने की क्षमता होती है। एक बिलियन में 100 करोड़ होते है इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट की एक बोलस से 17.5 x 100,00,00,000 अर्थात् $\frac{175 \times 1000000000}{10}$ = 175 करोड़ लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनाने की क्षमता होती है। डाइजामैक्स फोर्ट की दो बोलस की खुराक है। इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट की दो बोलस से 350 करोड़ लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनेगें। इतनी ज्यादा मात्रा में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे बनने से फरमन्टेसन की प्रक्रिया तुरन्त शुरू हो जाती है और परिणामस्वरुप रुमन की pH सामान्य हो जाती है। लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं का यह बायोमास प्रोटीन का बहुत अच्छा साधन होता है। जिससे पशु को उच्च कोटि का प्रोटीन उपलब्ध होता है और परिणामस्वरुप पशु की उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है

फरमन्टेसन की प्रक्रिया के दौरान रुमन में वोलेटाइल फैटी एसिड्स व कुछ अन्य एसिड्स भी बनते हैं। वोलेटाइल फैटी एसिड्स तीन प्रकार के होते हैंः एसिटिक एसिड, प्रोपियोनिक एसिड और ब्यूटाइरिक एसिड। जब एसिटिक एसिड

बनता है तो पशु के दूध में फैट की मात्रा बढ़ जाती है। प्रोपियोनिक एसिड पशु को दूध उत्पादन के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है। ब्यूटाइरिक एसिड रुमन की दीवारों को मजबूती प्रदान करता है जिससे रुमन में फरमन्टेसन की प्रक्रिया सुचारु रूप से होती रहती है।

प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरुडनरिचि पेट में बनने वाले तेजाब को प्रोपियोनिक एसिड में बदलकर दूध उत्पादन के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है। और एन्टीबायोटिक लगाने के कारण होने वाले दूध के नुकसान की भरपाई करता है।

बोविज़ाइम विभिन्न प्रकार के एन्ज़ाइम पैदा करके पाचन क्रिया में पशु की मदद करता है। उदाहरण के तौर पर जब हम पशु को गेहूँ, जौ या बाजरा खिलाते हैं तो यह अमाइलेज नामक एन्ज़ाइम पैदा करके गेहूँ, जौ और बाजरे को हज़म करता है। जब हम पशु को खल, बिनौला या चाट खिलाते हैं तो बोविज़ाइम लाइपेज नामक एन्ज़ाइम पैदा करके खल, बिनौला और चाट को हज़म करने में पशु की मदद करता है।

बीमारी के कारण पशु में कमज़ोरी आना स्वाभाविक है। सी-फ्लोरा में उपस्थित पोषक तत्व पशु के शरीर में होने वाली क्रियाओं-प्रक्रियाओं को बढ़ावा देकर पशु की कमज़ोरी को दूर करते हैं।

जब पशु को बदहज़मी हो जाती है तो उसके गोबर में अनपचा दाना-चारा आने लगता है। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस का अद्भुत फार्मूला पशु की पाचन क्रिया को सुचारू बनाकर बदहज़मी ठीक करता है जिससे अनपचा दाना-चारा गोबर में नहीं आता। अतः जब भी आप अपने पशुओं के गोबर में अनपचा दाना-चारा देखें तो उसे तुरन्त डाइजामैक्स फोर्ट बोलस खिलाएँ ताकि पशु के शरीर को सारा दाना-चारा लग जाए।

जब हम पशु को ज्यादा खल या बिनौला डालने लगते हैं तो कुछ समय बाद पशु खल-बिनौला खाना छोड़ देता है क्योंकि पशु के लिवर के चारों तरफ फैट जमा हो जाती है जिससे पशु चिकनी चीजें खानी छोड़ देता है। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस में उपस्थित बोविजाइम, लाईपेज नामक एन्ज़ाइम पैदा करके लिवर के चारों तरफ जमा फैट को हज़म करके पशु को पुनः खल-बिनौला पर लाती है। अतः जब भी आपका पशु खल-बिनौला या चिकनी चीजें खाना छोड़ दे तो आप उसे तुरन्त डाइजामैक्स फोर्ट बोलस खिलाएँ ताकि आपका पशु फिर से इन्हें खाने लग जाए।

जब पशु को अफ़ारा हो जाए तो आप सहायक इलाज के तौर पर डाइजामैक्स फोर्ट बोलस अवश्य खिलाएँ। अफ़ारा होने का कारण होता है पशु के पेट में हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ जाना। जिसके कारण पशु का पेट मिथेन नामक हानिकारक गैस से भर जाता है। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस में 17.5 बिलियन लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं के गुच्छे होते हैं जो पशु के पेट में जाकर हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को कम कर देते हैं जिससे हानिकारक गैस बनना कम हो जाती है और पशु का अफ़ारा ठीक हो जाता है।

पशुपालक मित्रों, अगर आप नियमित रूप से अपने पशु को एक डिब्बा डाइजामैक्स फोर्ट बोलस प्रत्येक महीने खिला रहे हैं तो आपको अनेक लाभ होंगे तथा आपके ऊपर कोई अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ेगा। नीचे लिखे उदाहरण से आपको समझने में आसानी होगी।

जब पशु को थनैला रोग हो जाता है तो उसे एन्टीबायोटिक लगना ही लगना है। कुछ तो थनैला रोग के कारण दूध कम हो जाता है और कुछ एन्टीबायोटिक लगने के कारण। देहात में एक कहावत है ''दुबली नै दो आषाढ़''। उदाहरण के तौर पर थनैला रोग से पहले आपका पशु 10 लीटर दूध रोजाना देता है। थनैला रोग होने पर यही पशु 5-6 लीटर दूध देने लगेगा क्योंकि दो-ढ़ाई लीटर दूध थनैला रोग कम कर देगा और दो-ढ़ाई लीटर दूध एन्टीबायोटिक का टीका कम कर देता है। थनैला रोग में अगर आप इलाज के साथ-साथ डाइजामैक्स फोर्ट बोलस देंगे तो यह एन्टीबायोटिक के कारण कम होने वाले दो-ढ़ाई लीटर दूध की मात्रा में कमी नहीं होने देगी और आपको 5-6 लीटर की बजाए 7½-8 लीटर दूध मिलेगा। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस दो सुबह दो शाम तीन दिन तक देते हैं अर्थात् आपको कुल 12 बोलस देनी हैं। चार बोलस की कीमत 60 रुपये है। इस प्रकार 12 बोलस की कीमत हुई 180 रुपये। डाइजामैक्स फोर्ट बोलस देने से तीन दिन में आपको 6 से 7½ लीटर दूध का फायदा हुआ। एक लीटर दूध अगर आप 60 रुपये का भी लगाएँ तो आपको 360-450 रुपये का लाभ हुआ अर्थात् जितने रुपये आपने डाइजामैक्स फोर्ट बोलस पर खर्च किए उससे ज्यादा रुपये का आपको लाभ भी हुआ। इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट बोलस अपनी कीमत स्वयं निकालती है जिससे आपके ऊपर कोई अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ता।

इस प्रकार डाइजामैक्स फोर्ट बोलस पशुओं के लिए बहुत ही उपयोगी है। अतः आप डाइजामैक्स फोर्ट बोलस का एक डिब्बा हरदम अपने पास रखें और इसे निम्नलिखित परिस्थितियों में इस्तेमाल करेंः

- दूध बढ़ाने के लिए।
- जब पशु तनाव में हो।
- जब पशु को एन्टीबायोटिक लगाया जाए।
- जब पशु दाना-चारा छोड़ दे।
- जब पशु को बदहजमी हो जाए।
- जब पशु के पेट में तेजाब बनने लगे।
- जब पशु खल-बिनौला खाना छोड़ दे।

- जब पशु को अफ़ारा हो तो सहायक इलाज के रूप में।
- जब पशु अचानक ज्य़ादा दलिया/चाट खा जाए।
- जब पशु को नया भूसा (तूड़ा) डाला जाए।
- जब पशु की आंतड़ियों में सूजन हो।
- जब पशु को गोबर का बंध पड़ जाए।

खुराकः बडे पशुओं में : 1-2 बोलस दिन में दो बार।

छोटे पशुओं में : ½-1 बोलस दिन में दो बार

उपलब्धताः एक स्ट्रिप में चार बोलस,

एक डिब्बें में बीस स्ट्रिप

डाइजामैक्स फोर्ट बोलसः

एंटीबायोटिक उपचार से कम हुए लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को बढ़ाने के लिए।

एनपीसी फोर्ट बोलस

(दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न को दूर करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब भी आपका पशु दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न से पीड़ित हो तो आप उसे तुरन्त एनपीसी फोर्ट बोलस खिलाएँ ताकि पशु को 10 मिनट के अन्दर-अन्दर राहत मिल जाए। एनपीसी फोर्ट की प्रत्येक बोलस में है:

निमुसलाइड	:	750 मिली ग्राम
पैरासिटामोल	:	1500 मिली ग्राम
क्लोरजोक्साजोन	:	1000 मिली ग्राम

निम्नलिखित परिस्थितियों में एनपीसी फोर्ट बोलस का इस्तेमाल करें:

- जब पशु को बुखार/तेज बुखार हो।
- जब पशु का शरीर अकड़ जाए।
- जब बछ़डे का बधियाकरण करवायें।
- जब पशु शरीर दिखाता हो।
- जब पशु का कोई आप्रेशन हो।
- जब पशु को ब्याने में कठिनाई हो।
- जब पशु की जेर निकलवाई जाए।
- जब थनों में सूजन हो।
- जब पशु को गठिया बाव हो।
- जब पशु को लंगडा बुखार हो।
- जब काफ के सींग तलवायें।

खुराकः बड़े पशुओं में : दो बोलस दिन में दो बार,

छोटे पशुओं में : एक बोलस दिन में दो बार

उपलब्धताः एक स्ट्रिप में चार बोलस, एक डिब्बें में पन्द्रह स्ट्रिप

एनपीसी फोर्ट बोलसः दर्द, बुखार, सूजन व जकड़न से दस मिनट में राहत के लिए

मिनलाइस-स्ट्रॉन्ग वेट सोप

(बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाने के लिए)

पशुपालक मित्रों, हमारे पशु बाहरी परजीवी जैसे कि जूँ, ढ़ेरे व चीचड़ आदि से काफी परेशान रहते हैं। ये परजीवी पशुओं का खुन चुसते रहते हैं। जिससे उनकी उत्पादन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जूँ, ढ़ेरे व चीचड़ आदि से अपने पशुओं को निजात दिलाने के लिए आप मिनलाइस-स्ट्रॉन्ग वेट सोप का इस्तेमाल करें।

मिनलाइस-स्ट्रॉन्ग वेट सोप परमैथरिन 8 प्रतिशत व एलोविरा 2 प्रतिशत के मिश्रण से बना है। परमैथरिन बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाता है और अलोविरा त्वचा को मुलायम रखता है।

पशु के शरीर को थोड़ा गर्म पानी से भिगोकर उसके ऊपर मिनलाइस-स्ट्रॉन्ग वेट सोप रगड़ कर तब तक लगाये जब तक की झाग न बन जाए। मिनलासस वेट सोप लगाने के दस मिनट बाद पशु को नहला दें। नहलाने के बाद आप पायेगें कि सभी प्रकार के बाहरी परजीवी गायब हो चुके हैं।

उपलब्धताः 75 ग्राम

मिनलाइस-स्ट्रॉन्ग वेट सोप : बाहरी परजीवियों से छुटकारा दिलवाने के लिए

डाइजामैक्स पॉउडर

(शक्तिशाली सूक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार)

पशुपालक मित्रों, डाइजामैक्स पॉउडर शक्तिशाली सूक्ष्म जीवाणुओं का भण्डार है। ये शक्तिशाली सूक्ष्म जीवाणु हर प्रकार के दाने-चारे को हज़म करने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के तौर पर फरवरी - मार्च में जब गेहूँ का तूड़ा समाप्ति कि ओर अग्रसर होता है तो आप लोग अपने पशुओं को धान की पराली खिलाते हैं। धान की पराली में पशुओं के शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्त्व बहुत कम मात्रा में होते हैं। अतः जब आप धान की पराली खिलाते हैं तो पशुओं का दूध व फैट दोनों कम हो जाते हैं। जैसे हम लोग स्वादहीन भोजन को मन मार कर खाते हैं वैसे ही पशु भी धान की पराली को मन मार कर खाते हैं। डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित शक्तिशाली सूक्ष्म जीवाणु धान की पराली से भी रस निकाल लेते हैं जिससे पशुओं का दूध व फैट दोनों कम नहीं होते।

डाइजामैक्स पॉउडर के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता है:

फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर	:	33.5 ग्राम
बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स	:	6.75 बिलियन सीएफयू
बेसिलस सिटीलिस	:	6.75 बिलियन सीएफयू
प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि	:	6.75 बिलियन सीएफयू
एचएससीएएस बेस	:	पर्याप्त मात्रा
(हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एलुमिनोसिलिकेट)		

फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर बिल्कुल तैयार कल्चर होती है। जब भी हम कोई लाइव इस्ट कल्चर पशु को देते हैं तो वह रुमन में जाकर फरमेन्टेसन की प्रक्रिया को शुरू करने में पशु की मदद करती है जबकि फरमेन्टिड लाइव इस्ट कल्चर पशु के रुमन में जाकर समय खराब किये बिना तुरन्त रुमन की pH को सामान्य बना देती है।

बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स, लिक्विफाइंग अमाइलेज पैदा करके गेहूँ, जौ, ज्वार व बाजरा से मिलने वाले स्टार्च को हज़म करता है। ***बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स,*** सबटिलिजम एन्ज़ाइम भी पैदा करता है। यह एन्ज़ाइम चने, बिनौला व बरसीम से मिलने वाले प्रोटीन को हज़म करने में उत्प्रेरक का काम करता है। इन सब के अलावा ***बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स,*** विभिन्न प्रकार के एन्ज़ाइम पैदा करके पशु के दाने-चारे से रस निकालने का काम भी करती है।

प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि, जैसा इसका नाम वैसा इसका काम। अर्थात् ***प्रोपिनियमबैक्टिरियम,*** प्रोपिनियम नाम का एक बैक्टीरिया है जो पशुओं के पेट में बनने वाले तेजाब को प्रोपियोनिक एसिड में बदल देता है। प्रोपियोनिक एसिड पशु को दूध उत्पादन के लिए ऊर्जा प्रदान करके पशु का दूध बढ़ाता है। इस प्रकार ***प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरूडनरिचि,*** हानिकारक तेज़ाब को दूध बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है। हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एलुमिनोसिलिकेट पशु के दाने-चारे में पाए जाने वाले हानिकारक जीवाणुओं (जैसे अचार में फ़ूंद लग जाता है) को गोबर के रास्ते बाहर निकाल देता है जिससे हानिकारक सूक्ष्म जीवाणु अपना दुष्प्रभाव नहीं छोड़ पाते और पशु की उत्पादन क्षमता बढ़ जाती है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में डाइजामैक्स पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

जब पशु के पेट में अधिक झाग होने की वजह से अफ़ारा बन जाए

जब पशु को अफ़ारा हो जाए तो आप सहायक इलाज के तौर पर डाइजामैक्स पॉउडर अवश्य खिलाएँ। अफ़ारा होने का कारण होता है पशु के पेट में हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या बढ़ जाना। यह हानिकारक जीवाणु मिथेन नामक हानिकारक गैस को अधिक मात्रा में बनाते हैं। जिसके कारण पशु का पेट मिथेन गैस से भर कर फूल जाता है। डाइजामैक्स पॉउडर में बहुत अधिक मात्रा में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु होते है जो पशु के पेट में जाकर हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या को कम कर देते हैं जिससे हानिकारक गैस बनना बंद हो जाती है और पशु का अफ़ारा ठीक हो जाता है।

जब पशु के पाचन तंत्र में नया तूड़ा खिलाने के कारण बाधा आने लग जाए

नए तूड़े में फाइबर अधिक होता है जिसकी वजह से लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं को नया तूड़ा हज़म करने के लिए 20 से 48 घण्टे का समय लगता है। हम सुबह जो नया तूड़ा पशुओं को खिलाते हैं वह शाम तक हज़म नहीं हो पाता क्योंकि रूमन के लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं को इसे हज़म करने के लिए कम से कम 20 घण्टे का समय चाहिए। अब होता यह है कि सुबह खिलाया हुआ नया तूड़ा तो शाम तक हज़म हुआ नहीं और ऊपर से शाम को फिर हमने नया तूड़ा खाने के लिए पशु को डाल दिया। जब सुबह खिलाया हुआ नया तूड़ा शाम तक हज़म नहीं हुआ तो शाम को खिलाया हुआ नया तूड़ा अगले दिन सुबह तक कैसे हज़म हो सकता है? इस प्रकार धीरे-धीरे बहुत सारा अनपचा नया तूड़ा पशु के पेट में इकट्ठा होता रहता है और यह पशु के पेट के हिस्से (ओमेज़म व एबोमेज़म) में ठूँस-ठूँस कर भर जाता है और आगे आँत में नहीं जा पाता परिणामस्वरूप पशु को गोबर का बन्ध पड़ जाता है। आज के समय में बन्ध की समस्या पहले से अधिक आने लगी है क्योंकि आजकल तूड़ा थ्रैसर की बजाए कम्बाइन से कटाई करने के बाद दूसरी मशीनों से बनाया जाता है जो तूड़े की लंबाई ज्यादा काटती है, इसको पचा पाना और भी मुश्किल होता है। नया तूड़ा हज़म न होने के बावजूद पशु गोबर करने के लिए जोर लगाता है। ज्यादा जोर लगाने के कारण पशु की आँतड़ियों में सूजन आ जाती है,

जिससे बन्ध की समस्या और भी बिगड़ जाती है। डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणुओ की किस्में विभिन्न प्रकार के एन्जाइम (सेल्युलेज व हैमीसेल्युलेज आदि) पैदा करके जटिल से जटिल शूगर को भी हज़म कर देती हैं। जिसकी वजह से पशु के पेट में इकट्ठा अनपचा फाइबर हज़म हो जाता है और परिणामस्वरूप पशु का गोबर का बन्ध खुल जाता है।

जब पशु को किटोसीस हो जाए

जब पशु के शरीर से खर्च होने वाली ऊर्जा पशु को मिलने वाली ऊर्जा से ज्यादा होती है तो पशु अपने शरीर में जमा पोषक तत्त्वों को पिघलाकर आवश्यक ऊर्जा की पूर्ति करने लगता है। लगातार पोषक तत्त्वों को पिघलाकर ऊर्जा की पूर्ति करने के कारण पशु के खून व पेशाब में किटोन बोडिज़ आना शुरू हो जाती है। अतः जब पशु के शरीर से किटोन बोडिज़ आना शुरू हो जाए तो सहायक उपचार के रूप में डाइजामैक्स पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि डाइजामैक्स पॉउडर पशुओं द्वारा खाए गए दाने-चारे को अच्छी प्रकार से पाचन करके पशु को ऊर्जा प्रदान करता है। ***प्रोपिनियमबैक्टिरियम फरुडनरिचि*** पेट में बनने वाले तेजाब को प्रोपियोनिक एसिड में बदलकर पशु को ऊर्जा प्रदान करती है।

एसिडोसिस / अलकेलोसिस

रुमन की pH का सामान्य से कम हो जाना एसिडोसिस तथा रुमन की pH का सामान्य से ज्यादा हो जाना अलकेलोसिस कहलाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि बीमारी के कारण पशु के रुमन व माइक्रोफ्लोरा के तालमेल में कमी आ जाती है। तालमेल में इस कमी के कारण फरमन्टेसन की प्रकिया सुचारु रूप से नहीं हो पाती। इस प्रकार फरमन्टेसन की प्रक्रिया में कमी के कारण रुमन में उपस्थित दाना-चारा अनपचा रह जाता है। अगर यह अनपचा दाना-चारा कार्बोहाइड्रेट से भरपूर है तो रुमन की pH सामान्य से कम होगी और अगर यह अनपचा दाना-चारा प्रोटीन से भरपूर है तो रुमन की pH सामान्य से ज्यादा हो जाएगी। डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित सभी प्रकार के प्रोबायोटिक्स फरमन्टेसन की प्रकिया को सुचारू करके रुमन में उपस्थित अनपचे दाने-चारे को हज़म कर देते हैं जिससे रुमन की pH सामान्य हो जाती है औैर पशु पुनः दाने-चारे पर आ जाता है। इस प्रकार डाइजामैक्स पॉउडर एसिडोसिस या अलकेलोसिस की समस्या को दूर कर देता है।

जब पशु ने काफी दिनों से कुछ न खाया हो

जब पशु लम्बे समय तक बीमार रहता है तो बीमारी की वजह से भूख न लगना स्वाभाविक है। पशु मालिक को तसल्ली तब होती है जब पशु चरने लगता है। डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित फरमेन्टिड लाइव यीस्ट कल्चर रुमन में काफी दिनों से पड़े हुए अनपचे दाने-चारे को हज़म करके पशु की भूख को जागृत करने का काम करती है।

जैसे-जैसे काफी दिनों से पड़ा हुआ अनपचा दाना-चारा हज़म होने लगता है वैसे-वैसे पशु अपनी सामान्य खुराक पर आने लगता है। इस प्रकार डाइजामैक्स पॉउडर पुराने से पुराने ऐनोरेक्सिया को भी ठीक कर देता है।

जब पशु बहुत ज्यादा सुखा अनाज या दलिया खा जाए

देहात में कभी-कभी एक समस्या आती है। पशु को खिलाने के लिए हमने गर्म चाट-दलिया को ठण्डा करने के लिए रखा होता है। अचानक पशु अपनी बेल तुड़वा कर उस दलिया-चाट को खा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप पशु दाना-चारा छोड़ देता है। कभी-कभी पशु को अचानक अनाज का ढेर मिल जाता है तो वह उसे खाने लगता है। बहुत ज्यादा मात्रा में अनाज खाने के कारण पशु दाना-चारा छोड़ देता है। क्योंकि बहुत ज्यादा अनाज खाने के कारण पशु के पाचन तन्त्र में बहुत कम मात्रा में लार बनती है। लार का काम रुमन की pH को सामान्य बनाना होता है। फरमन्टेशन की प्रकिया के उपरान्त रुमन में वोलेटाईल फैटी एसिडस व अन्य कुछ एसिडस बनते हैं। बहुत कम मात्रा में लार बनने के कारण रुमन की pH सामान्य से कम रह जाती है। अतः जब भी पशु अचानक ज्यादा सुखा अनाज या दलिया खा जाए तो उसे डाइजामैक्स पॉउडर अवश्य खिलाएँ ताकि रुमन की pH सामान्य हो जाए और पशु फिर से सामान्य खुराक पर आ जाए।

जब पशुओं को ज्यादा मात्रा में यूरिया उपयोग की गई फ़सल खिलाई जाए

आजकल ज्यादा पैदावार लेने के चक्कर में फसलों में यूरिया खाद का अन्धाधुन्ध उपयोग किया जा रहा है। अन्धाधुन्ध यूरिया उपयोग की गई फ़सलें जब पशुओं को खिलाई जाती है तो पशु के दूध में मानक स्तर (70 मिलीग्राम प्रति 100 मिलीलीटर) से अधिक यूरिया आने लगती है। जब पशु के दूध में मानक स्तर से ज्यादा यूरिया आने लगती है तो दूध खरीदने वाली संस्थाएँ दूध खरीदने से मना कर देती हैं और परिणामस्वरूप पशुपालक को आर्थिक नुकसान होने लगता है। रुमन में उपस्थित लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु इस यूरिया को अमोनिया गैस में परिवर्तित कर देते है। फिर यह अमोनिया गैस लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं द्वारा माइक्रोबियल प्रोटीन बनाने में उपयोग की जाती है जिससे पशु को उच्च कोटि का प्रोटीन मिलता है। जब रुमन में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं की पर्याप्त संख्या नहीं होती तो लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु इस अमोनिया गैस का इस्तेमाल माइक्रोबियल प्रोटीन बनाने में नहीं कर पाते और परिणामस्वरूप यह अमोनिया गैस रुमन में अवशोषित हो जाती है। जब यह अमोनिया गैस खून के माध्यम से लिवर में पहुँचती है तो लिवर इसे फिर से यूरिया में परिवर्तित कर देता है क्योंकि लिवर का एक काम शरीर से टोक्सिनस निकालना भी है और परिणामस्वरूप पशु के दूध व पेशाब में यूरिया की मात्रा मानक स्तर से बढ़ जाती है। जब पशु के पाचन तन्त्र में यूरिया का स्तर मानक स्तर से बढ़ जाता है तो पशु की नाक व पेशाब से एक तीखी दुर्गन्ध भी आने लगती है। अतः जब पशु के दूध में मानक स्तर से ज्यादा यूरिया आने लग जाए तो पशु को तुरन्त डाईजामैक्स पॉउडर खिलाना चाहिए। ताकि मानक स्तर से ज्यादा यूरिया दूध में आना

समाप्त हो जाए और पशु का दूध बिकने लग जाए।

जब पशुओं को ज्यादा मात्रा में फलीदार (लैग्युमीनस) हरा-चारा खिलाया जाए

जब पशु को ज्यादा मात्रा में फलीदार हरा चारा जैसे कि बरसीम या लोबिया आदि खिलाया जाता है तो पशु के रुमन में दो तरह से अमोनिया गैस बनती है। उदाहरण के तौर पर उत्तर भारत में बरसीम खिलाने का रिवाज है। बरसीम की जल्दी व ज्यादा फुटाव के लिए यूरिया खाद का उपयोग किया जाता है। जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि पशु के रुमन में उपस्थित लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु इस यूरिया को अमोनिया गैस में बदल देते है। दूसरा कारण है, बरसीम से बहुत ज्यादा मात्रा में क्रुड प्रोटीन मिलता है। लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु इस क्रुड प्रोटीन को अमोनिया गैस में परिवर्तित कर देते हैं। इस प्रकार बरसीम खिलाने से रुमन में दो तरह से अमोनिया गैस बनती है। फिर यही अमोनिया गैस रुमन में अवशोषित होकर खून के माध्यम से जब लिवर तक पहुँचती है तो लिवर इसे फिर से यूरिया में परिवर्तित कर देता है। डाइजामैक्स पॉउडर खिलाने से इसमें मौजूद प्रोबायोटिक्स अधिक मात्रा में बनी हुई अमोनिया गैस को प्रोटीन मे बदल देते हैं जिससे पशु का दूध व वज़न दोनों बढ़ जाते हैं और अमोनिया गैस से यूरिया बनने की प्रक्रिया विफल हो जाती है।

आँतड़ियों में सूजन

पशु की आँतड़ियों में सूजन के मुख्यतः दो कारण होते है। पहला तो पेट के कीड़ों द्वारा आँतड़ियों में डेरा जमा लेने के कारण और दूसरा हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं (जैसे बैक्टीरिया व फफूंद) द्वारा आँतड़ियों में डेरा जमा लेने के कारण। पेट के कीड़े पशु का रक्त चुसते रहते है जिससे पशु की आँतड़ियों में घाव हो जाते है और परिणामस्वरूप पशु की आँतड़ियों में सूजन आ जाती है। आँतड़ियों में सूजन के कारण पशु को गोबर का बन्ध भी पड़ सकता है। डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित हाइड्रेटिड सोडियम कैल्शियम एल्युमिनोसिलिकेट आँतड़ियों में उपस्थित फफूंद पर चिपककर फफूंद को गोबर के रास्ते बाहर निकाल देता है जिससे पशु की आन्तड़ियाँ फफूंद से मुक्त हो जाती है। इसमें मौजूद प्रोबायोटिक्स बीमारी फैलाने वाले हानिकारक जीवाणुओं की संख्या कम कर देते है और पाचन करने वाले लाभकारी जीवाणुओं की संख्या बढ़ा देते हैं तथा आँतड़ियों में इन्फैक्शन व सूजन को खत्म कर देते हैं। इस प्रकार डाइजामैक्स पॉउडर पशु की आँतड़ियों की सूजन को दूर करता है।

जब पशु में बार-बार थनैला रोग होने लग जाए

डाइजामैक्स पॉउडर में मौजूद *बेसिलस सिटीलिस* थनैला रोग होने से रोकती है और पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। वर्ष 2022 में हुई जापान की खोज में पाया गया की जिन पशुओं में थनैला

रोग बार-बार होने की शिकायत थी उनको *बेसिलस सिटीलिस* खिलाने से थनैला रोग पर लगाम लग गई। साथ ही जिन पशुओं को थनैला रोग हो गया था उनमें यह थनैला रोग ठीक करने में सहायक औषधि का काम करती है।

जब पशु बार-बार बीमार रहने लग जाए

डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित बेसिलस *अमाइलोलिक्विफेसियन्स एन्टीबोडिज़* पैदा करके पशुओं में रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करती है जिससे पशु बार-बार बीमार नहीं होता है। थनैला रोग में जब पशुओं के दूध में ज्यादा मात्रा में कोशिकाएँ आने लगती है तो *बेसिलस अमाइलोलिक्विफेसियन्स* दूध में ज्यादा कोशिकाओं को आने से रोक कर दूध की गुणवत्ता को बनाए रखती है।

जब पशु को ज्यादा मात्रा में कच्ची ज्वार खिला दी जाए

जून में पशुओं के लिए हरे चारे का ज्यादातर अभाव ही रहता है। क्योंकि बरसीन खत्म हो चुकी होती है और ज्वार की फसल तैयार नहीं होती है। ऊपर से उत्तर भारत में जून में वर्षा भी कम होती है। कुल मिलाकर खेती को पानी कम ही मिल पाता है। कुछ पशुपालक हरे चारे की पूर्ति के लिए अपने पशुओं को कच्ची ज्वार ही डालना शुरु कर देते हैं। कच्ची ज्वार के तने में ज्यादा मात्रा में नाइट्रेट होता है जिसे पशु नाइट्राइट में बदल देता है। नाइट्राइट पशुओं लिए हानिकारक होता है। इसलिए ज्यादा मात्रा में कच्ची ज्वार खाने के कारण कुछ पशु दाना-चारा छोड़ देते है। अतः जब पशु को ज्यादा मात्रा में कच्ची ज्वार खिला दी जाए तो उन्हें तुरन्त डाइजामैक्स पॉउडर खिलाना चाहिए क्योंकि डाइजामैक्स पॉउडर में उपस्थित ***प्रोपियोनिबैक्टीरियम फरुडनरिचि*** नाइट्रेट को नाइट्रोजन गैस में बदल देती है जिससे रुमन में नाइट्राइट नहीं बनता और परिणामस्वरूप पशु फिर से दाना-चारा खाने लगता है। जिससे पशु का दूध उत्पादन भी बढ़ जाता है।

खुराकः बडे पशुओं के लिए 10 से 20 ग्राम रोज़ाना
छोटे पशुओं के लिए 5 से 10 ग्राम रोज़ाना

उपलब्धता : 300 ग्राम, एक किलोग्राम व पाँच किलोग्राम

डाइजामैक्स पॉउडरः पाचन तन्त्र की देखभाल के लिए

बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं में गर्भ ठहराने का तरीका

पशुपालक मित्रों, पशुओं का बार-बार गाभिन होना एक बहुत बड़ी समस्या है। बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं से पशुपालकों को बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान होता है। कई बार पशुपालक ऐसे पशुओं से तंग आकर उन्हें कौड़ियों के दाम बेच देते हैं। अब आपको बार-बार गाभिन होने वाले पशुओं से तंग नहीं होना है बल्कि एक अन्तिम प्रयास के रूप में नीचे बताए गए तरीके को अपनाना है।

पशुओं के बार-बार गाभिन होने के मुख्यतः दो कारण होते हैः

पहला पशुओं की बच्चेदानी में इन्फैक्शन (बीमारी) हो जोना।

दूसरा पशुओं की बच्चेदानी में कुछ अनियमितताएँ होना।

पहला कदम

बार-बार गाभिन होने वाले पशु जब हीट में आए तो इस बार उनमें बीज नहीं रखवाना चाहिए बल्कि लगातार तीन दिनों तक 100 एम० एल० यूट्राविन-ओजेड बच्चेदानी में रखवाएँ।

दूसरा कदम

चौथे दिन से बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर 1.2 कि० ग्रा० तथा जस्टाप्रोजन 1 कि० ग्रा० का मिश्रण बनाकर रोजाना 130 ग्राम 17 दिनों तक खिलाएँ।

तीसरा कदम

इस बार पशु जब हीट में आए तो आप बीज रखवायें तथा 50 ग्राम जस्टाप्रोजन 16 दिनों तक खिलायें। अगर पशुपालक इस तरीके को अपनाएंगे तो उम्मीद है कि आपका पशु गर्भधारण करेगा तथा आपकी आस सफल होगी।

उपरोक्त तरीके को आप इस प्रकार भी समझ सकते हैं। गाय / भैंस 21 दिन बाद हीट में आती है।

1 2 3	पहले तीन दिन 100 एम. एल. यूट्राविन-ओजेड रोज़ाना बच्चेदानी में रखवायें और 70 ग्रा० रोज़ाना के हिसाब से न्यूक्लियोटोन पॉउडर तीन दिनों तक खिलाएँ।
4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20	बायोबीऑन गोल्ड + जस्टाप्रोजन 1.2 कि० ग्रा० 1 कि० ग्रा० इस मिश्रण का रोज़ाना 130 ग्राम 17 दिनों तक खिलायें।
21	बीज रखवायें तथा 50 ग्राम जस्टाप्रोजन रोज़ाना 16 दिनों तक खिलायें।

एनरबूस्ट पॉउडर

(पशुओं में ऊर्जा की कमी का एक समाधान)

पशु पालक मित्रों, जब पशु दूध देना बन्द कर देता है तो हम पशुओं के रखरखाव पर बहुत कम ध्यान देते हैं और उसे पौष्टिक आहार भी देना बन्द कर देते हैं। जबकि गर्भावस्था के अन्तिम तीन महीनों में पशुओं को बच्चे के विकास के लिए पौष्टिक आहार की बहुत ज्यादा आवश्यकता होती है।

दूसरा, आपने गौर किया होगा कि जब पशु बच्चा जनता है तो देहात में प्रसव के तुरन्त बाद पशु को रूखा-सूखा खाने को देते है जबकि प्रसव के दौरान पशु के शरीर से बहुत ज्यादा ऊर्जा निकलती है और परिणामस्वरूप प्रसव के उपरान्त पशु दबाव में होता है और उसका 80 से 100 किलोग्राम तक वज़न कम हो जाता है। पशु को फिर से अपना सामान्य वज़न प्राप्त करने में लगभग 22 सप्ताह तक का समय लग जाता है।

तीसरा, जब पशु दूध के अपने उच्चतम स्तर को प्राप्त करता है तो उसे बहुत ज्यादा ऊर्जा की आवश्यकता होती है लेकिन पशु को जो खुराक दी जाती है उससे उसकी ऊर्जा की पूर्ति नहीं हो पाती है और परिणामस्वरूप पशु में ऊर्जा की कमी रह जाती है। इस प्रकार प्रसव से पहले जब पशु दूध देना बन्द कर देता है तब से लेकर प्रसव के दौरान व प्रसव के बाद दूध के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने तक का जो समय है वह ऊर्जा की कमी का समय है। ऊर्जा की कमी के कारण पशु निम्नलिखित तरीके से व्यवहार करता हैः

ज्यादा दूध देने वाले पशुओं को

⬇

जब कम खुराक मिलती है तो

⬇

इससे पशुओं में ऊर्जा की कमी हो जाती है

⬇

ऊर्जा की पूर्ति के लिए पशु शरीर में जमा पोषक तत्वों को पिघलाने लगता है

⬇

जिससे पशु कमजोर हो जाता है

⬇

जिससे पशुओं में कई प्रकार की समस्याएँ आ जाती है। जैसेः कीटोसीस, कम दूध देना व देरी से हीट में आना।

पशुओं में ऊर्जा की पूर्ति के लिए देहात में सरसों का तेल या देशी घी खिलाने का रिवाज है। लेकिन वास्तव में देशी घी या सरसों का तेल खिलाने से पशुओं को कोई लाभ नहीं होता बल्कि हानि ही होती है और पशुपालकों के पैसे व्यर्थ चले जाते हैं।

पशुओं को देशी घी या सरसों का तेल खिलाने के कारण निम्नलिखित नुकसान होते हैः

1) घी या तेल के कारण रुमन में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या कम हो जाती है।

2) घी या तेल की फाइबर पर एक परत जम जाती है जिसके कारण लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु फाइबर

   का पाचन अच्छी प्रकार से नहीं कर पाते हैं।

3) फाइबर का पाचन कम होने के कारण पशु को कम ऊर्जा मिलती है।

निगेटिव एनर्जी बैलन्स क्या होती है ?

जब पशु के शरीर को मिलने वाली ऊर्जा पशु के शरीर से खर्च होने वाली ऊर्जा से कम होती है तो ऊर्जा की इस कमी को निगेटिव एनर्जी बैलन्स कहते हैं। लगातार कम ऊर्जा मिलने के कारण पशु कमज़ोर हो जाता है। उदाहरण के तौर पर जब किसी व्यक्ति की आय कम और खर्चा ज्यादा हो तो उसे घर खर्च चलाने के लिए पैसे उधार लेने ही पड़ेंगे। लगातार पैसे उधार लेने के कारण एक दिन ऐसा आएगा कि वह व्यक्ति कर्ज में डूब जाएगा। जब तक उसे बाहर से आर्थिक मदद नहीं दी जाएगी तब तक उसका कर्जा नहीं उतरेगा और वह व्यक्ति कर्जवान ही रहेगा। ठीक इसी प्रकार निगेटिव एनर्जी बैलन्स में जब तक पशु की बाहर से ऊर्जा की पूर्ति नहीं की जाएगी तब तक वह पशु कमज़ोर ही रहेगा और उसकी उत्पादन क्षमता कम ही रहेगी।

निगेटिव एनर्जी बैलन्स के लक्षण

1) ब्याने के बाद पशु बिल्कुल भी दूध नहीं देता।

2) ब्याने के बाद पशु बहुत कम दूध देता है।

3) पशु पिछले ब्याँत की अपेक्षा कम दूध देता है।

4) पशु के दूध में फैट की मात्रा कम होती है अर्थात् पशु का दूध बिल्कुल पानी जैसा पतला होता है।

5) दूध देने के कारण पशु कमज़ोर रहता है। (देहात में कहते है कि हमारा पशु दूध से कटता है।)

6) पशु के शरीर की हड्डियाँ दिखाई देती हैं।

7) पशु देरी से हीट में आता है।

निगेटिव एनर्जी बैलन्स में ऊर्जा की प्राप्ति के लिए एनरबूस्ट पॉउडर का प्रयोग करें। एनरबूस्ट पॉउडर के प्रत्येक एक किलोग्राम में मिलता हैः

रुमन बाइपास फैट	:	150 ग्राम
रुमन बाइपास प्रोटीन	:	10 ग्राम
कैल्शियम प्रोपियोनेट	:	20 ग्राम
फरमेन्टिड इस्ट कल्चर	:	50 ग्राम
अवेलेबल कैल्शियम	:	15 ग्राम

रुमन बाइपास फैट और प्रोटीन वह फैट और प्रोटीन होते हैं जो रुमन में उपस्थित लाभकारी सूक्ष्म जीवाणुओंको बाइपास करके सीधे छोटी आँत में हज़्म हो जाते हैं। रुमन बाइपास फैट और प्रोटीन देने से पशुओं का दूध उत्पादन बढ़ता है, दूध में फैट की मात्रा बढ़ती है तथा पशुओं की प्रजनन क्षमता भी बढ़ती है। जब हमारे घरों में बहू को बच्चा होने वाला होता है तो हमारी माताएँ अगली पीढ़ी आने के चाव में बहू के खाने के लिए एक-दो महीना पहले से ही घी जोड़ना शुरू कर देती हैं। घी, फैट ही तो होता हैं। घी खाने से बहूरानी को ऊर्जा मिलती है, इसलिए जच्चा को घी खिलाने का रिवाज़ है। इसी प्रकार प्रत्येक जच्चा पशु को एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए ताकि पशु को भरपूर मात्रा में ऊर्जा मिल सके और पशु ब्याने के तनाव से मुक्त हो जाए।

रुमन में फरमन्टेसन की प्रक्रिया के बाद तीन प्रकार के वोलेटाइल फैटी एसिड्स बनते हैः एसिटिक एसिड, प्रोपियोनिक एसिड और ब्यूटाइरिक एसिड। प्रोपियोनिक एसिड पशु को दूध उत्पादन के लिए ऊर्जा प्रदान करता है जिससे पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है। कैल्शियम प्रोपियोनेट, प्रोपियोनिक एसिड बनाकर पशु के दूध उत्पादन को बढ़ाने में सहायता करता है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में एनरबूस्ट पॉउडर का इस्तेमाल करेंः

1) कीटोसिस जब पशु के शरीर से खर्च होने वाली ऊर्जा पशु को मिलने वाली ऊर्जा से ज्यादा होती है तो पशु अपने शरीर में जमा पोषक तत्त्वों को पिघलाकर आवश्यक ऊर्जा की पूर्ति करने लगता है। लगातार पोषक तत्त्वों को पिघलाकर ऊर्जा की पूर्ति करने के कारण पशु के खून व पेशाब में किटोन बोडिज़ आना शुरू हो जाती है। अगर किटोन बोडिज़ की शरीर से बहुत अधिक मात्रा में निकासी हो जाए तो पशु बेहोश भी हो सकता है। अतः जब पशु के शरीर से किटोन बोडिज़ आना शुरू हो जाए तब पशुओं को एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए ताकि पशुओं के शरीर की ऊर्जा की पूर्ति हो जाए और पशुओं के शरीर से किटोन बोडिज़ आना बन्द हो जाए।

2) मिल्क फीवर जब पशु मिल्क फीवर में आ जाता है तो आप उसे कैल्शियम की बोतल चढ़वाते हैं। कैल्शियम की बोतल चढ़वाने के बाद भी कुछ पशु दुबारा से मिल्क फीवर में आ जाते हैं तथा कुछ पशु दूध से नहीं चल पाते। अतः अपने पशु को कैल्शियम की बोतल चढ़वाने के बाद एक पैकेट एनरबूस्ट अवश्य खिलाएँ। इससे दो लाभ होगें। एक तो आपका पशु फिर से मिल्क फीवर में नहीं आएगा और दूसरा आपका पशु दूध से भी चल जाएगा। अगर आप ब्याने से लगभग 15 दिन पहले अपने पशु को एनरबूस्ट खिलाना शुरू कर देगें तो आपका पशु मिल्क फीवर में आएगा ही नहीं तथा ब्याने के बाद दूध भी पूरा देगा।

3) दूध बढ़ाने के लिए वैज्ञानिकों का मानना है 10 लीटर से ज्यादा दूध देने वाले प्रत्येक पशु में निगेटिव एनर्जी बैलन्स होता ही होता है। अतः आप प्रत्येक उस पशु को जो 10 लीटर से ज्यादा दूध देता है ब्याने के 15 दिन पहले से लेकर ब्याने के बाद 30 दिनों तक एनरबूस्ट खिलाएंगे तो आपके पशु मे ऊर्जा की कमी नही रहेगी और पशु पूरा दूध देगा।

4) जब ब्याने के बाद पशु बिल्कुल भी दूध न दे या जब पशु पिछले ब्याँत से कम दूध दे जब पशु बहुत ज्यादा निगेटिव एनर्जी बैलन्स का शिकार हो जाता है तो वह पशु ब्याने के बाद या तो बिल्कुल भी दूध नहीं देता या फिर बहुत कम दूध देता है। इसका एक कारण तो होता है, ब्याने के दिन तक पशु का दूध निकालना। यदि साल के 365 दिनों का विभाजन करें तो एक गाय / भैंस से 305 दिन दूध लेना चाहिये तथा बाकि 60 दिन उसे सूखा छोड़ देना चाहिये ताकि वह पशु बच्चे के विकास के लिए तथा अगले ब्याँत में दूध उत्पादन के लिए जरूरी ऊर्जा की भरपाई कर सके। जो पशुपालक ब्याने से 15-20 दिन पहले तक अपने पशु से दूध लेते रहते हैं उन्हें फिर अगले ब्याँत में दूध नहीं मिलता है। अतः ऐसे सभी मामलों में एनरबूस्ट पॉउडर का प्रयोग करें और अपने पशु से अच्छी मात्रा में दूध प्राप्त करें।

5) जब पशु के शरीर की हड्डियाँ दिखाई देती हों कई पशु जब तक दूध देते हैं तब तक कमज़ोर रहते हैं अर्थात् उनकें शरीर की हड्डियाँ दिखाई देती हैं। देहात में कहते है कि हमारा पशु दूध से कटता है। इसका मतलब है कि पशु को दूध उत्पादन के लिए जो ऊर्जा चाहिए वह ऊर्जा उसे खुराक से नहीं मिल रही है। लगातार ऐसा होने के परिणामस्वरूप पशु के शरीर की हड्डियाँ दिखाई देने लगती है। जब पशु दूध देने के कारण हड्डियाँ दिखाता हो तो उसे तुरन्त एनरबूस्ट पॉउडर खिलाना चाहिए ताकि उसकी ऊर्जा की जरूरत पूरी हो जाए और पशु स्वस्थ दिखाई देने लगे।

6) जब पशु का गर्भपात हो जाए या पशु समय से पहले बच्चा जन दे कई बार जब पशु गर्भावस्था के छेवें, सातवें या आठवें महीने में बच्चा फैंक देता है तो उसे दूध पर लाना बड़ा मुश्किल होता है। पशुपालक चाहते हैं कि किसी भी तरह से पशु दूध पर आ जाए ताकि कुछ तो नुकसान कम हो। ऐसे में पशुपालकों को दूध व बच्चे

दोनों का नुकसान होता है। इस प्रकार के मामलों मे एनरबूस्ट पॉउडर 200 ग्राम सुबह - शाम देना चाहिए ताकि पशु को भरपूर ऊर्जा मिल जाए और पशु दूध पर आ जाए।

7) जब पशु तनाव में हो जब भी पशु किसी प्रकार से तनाव में होता है तो उसके शरीर से बहुत ज्यादा ऊर्जा की निकासीहो जाती है परिणामस्वरूप पशु का दूध उत्पादन कम हो जाता है। अतः जब भी आपका पशु किसी भी कारण से तनाव में दिखाई दें तो उसे तुरन्त एनरबूस्ट पॉउडर खिलाना चाहिए ताकि पशु के शरीर को बराबर ऊर्जा मिलती रहे और दूध उत्पादन में कमी न आए। जब व्यापारी बन्धु पशुओं को एक राज्य से दूसरे राज्य में लेकर जाते है तो लम्बी यात्रा के कारण पशु तनाव में आ जाता है और वह पशु दूसरे राज्य में जाकर पूरा दूध नहीं देता। अतः जब भी व्यापारी बन्धु पशुओं को एक राज्य से दूसरे राज्य में लेकर जाए तो दूसरे राज्य में जाने पर पशुओं को एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाएँ ताकि दूसरे राज्य में जाकर भी पशु पूरा दूध देने लग जाए।

8) हीट मे लाने के लिए प्रसव के दबाव के कारण पशु का वज़न 80 से 100 किलोग्राम कम हो जाता है। पशु को अपना सामान्य वज़न फिर से प्राप्त करने मे लगभग 22 सप्ताह तक का समय लग जाता है अगर आप पशु के ब्याने के लगभग 15 दिन पहले एनरबूस्ट खिलाएगें तो पशु पर प्रसव का दबाव कम हो जाएगा और पशु को अपना सामान्य वज़न प्राप्त करने मे 22 सप्ताह का समय न लगकर कम समय लगेगा और परिणामस्वरूप पशु समय पर हीट मे आयेगा।

9) ब्याने के बाद जो पशु देरी से हीट में आते हैं उनका ड्राई पिरियड कम करने के लिए: आमतौर पर पशु को ब्याने के 60 दिन के अंदर- अंदर हीट में आ जाना चाहिये, लेकिन कई पशु 60 दिन में हीट में ना आकर ज्यादा 4-5 महीने बाद हीट में आते हैं जिसके परिणामस्वरूप पशु का "ड्राइ पिरियड" यानि की दूध ना देने का समय भी बढ़ जाता है। यदि ऐसे पशु को आप रोजाना 100 ग्राम एनरबूस्ट पॉउडर खिलाते हैं तो पशु का ड्राइ पिरियड कम हो जाएगा और पशु लंबे समय तक दूध देगा।

10) दूध से फैट की रिकवरी के लिए : एनरबूस्ट पॉउडर दूध से ज्यादा से ज्यादा फैट की रिकवरी में भी सहायता करता है जिससे दूध से ज्यादा से ज्यादा मात्रा में घी प्राप्त होता है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि दूध में फैट की मात्रा भी अच्छी है और लस्सी भी बहुत गाढ़ी बनती है परन्तु दूध से जितनी मात्रा में घी निकलना चाहिए था उतना नहीं निकलता। इसका अर्थ है कि दूध से फैट की सम्पूर्ण रिकवरी नहीं हो पा रही है। अतः जिन पशुओं में दूध में फैट की मात्रा पर्याप्त होने के बावजूद घी कम निकलता है तो उन्हें एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए।

खुराकः

ब्याने से 15 दिन पहले 100 ग्राम दिन में एक बार	=	1500 ग्राम
ब्याने के बाद एक सप्ताह तक 100 ग्राम दिन में दो बार	=	1400 ग्राम
ब्याने के एक सप्ताह बाद से अगले तीन सप्ताह तक 100 ग्राम दिन में एक बार	=	2100 ग्राम
कुल खुराक	=	5000 ग्राम

इस प्रकार एनरबूस्ट पॉउडर की कुल खुराक पाँच किलोग्राम बनती है।

दूध की पैदावार में निरंतरता बनाए रखने के लिए व बाखड़ी पशु का दूध एकदम से कम न हो इसके लिए पशु को रोजाना 100 ग्राम एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाएं।

पशु पालक मित्रों, अगर आप ब्याने से 15 दिन पहले अपने पशुओं को एनरबूस्ट पॉउडर खिलाएंगे तो आपका पशु मिल्क फिवर में नहीं आएगा इस बात की हमारी जवाबदारी है।

उपलब्धताः एक किलोग्राम, पाँच किलोग्राम,
दस किलोग्राम व बीस किलोग्राम

एनरबूस्ट पॉउडरः पशुओं को तुरन्त ऊर्जा प्रदान करने के लिए

जस्टाप्रोजन पॉउडर

(सुरक्षित गर्भकाल के लिए)

पशुपालक मित्रों, जब आपका पशु बार-बार गाभिन होता हो या फिर आपको अपने पशु के गर्भपात होने का डर रहता हो या फिर आपके पशु का बार-बार गर्भपात होता हो तो समझो, आपके पशु की बच्चेदानी में कुछ अनियमितताएँ आ गई हैं। बच्चेदानी की इन अनियमितताओं को दूर करने के लिए जस्टाप्रोजन पॉउडर का प्रयोग करना चाहिए।

जस्टाप्रोजन पॉउडर एक आयुर्वैदिक औषधि है जिसमें 8 प्रकार की जड़ी-बूटियों का मिश्रण है। जस्टाप्रोजन पॉउडर के प्रत्येक 250 ग्राम पैक में मिलता हैः

ट्रापा नटान्स	(शरुनगटक)	6 ग्राम
एसपैरागस रेसमोसस	(शतमूली)	6 ग्राम
मायरिका एस्कुलेंटा	(कठूफल)	6 ग्राम
बम्बुसा अरूडिनेशिया	(शतपर्वा)	2 ग्राम
पूतरनजीवा राक्सबर्गी	(पूतरनजीवा)	4 ग्राम
एलो बार्बडेंसिस	(कलाबोल)	4 ग्राम
निम्फिया स्टेलाटा	(कुमूद)	4 ग्राम
सिरपस ग्रोसस	(कासेरुक)	3 ग्राम

शरुनगटकः बच्चेदानी को गर्भधारण करने के लिए तैयार करती है।

शतमूलीः गर्भाशय के लिए एक बहुत ही ताकतवर औषधी है। इसलिए बच्चेदानी में होने वाली सभी प्रकार की अनियमितताओं को दूर करती है।

कठूफलः यह जनन अंगों में शुक्राणुओं को जीवित रखने का काम करती है। अण्डे व शुक्राणु का मिलन फलोपियन ट्यूब में होता है। अतः यह शुक्राणुओं की वजाइना से लेकर फलोपियन ट्यूब तक की यात्रा को सुरक्षित करती है।

शतपर्वाः गर्भाशय में किसी भी प्रकार के विकार को होने नहीं देती। शुरूआत में भ्रूण की गर्भ में रक्षा करना और पशु को गर्भपात से बचाना इसके मुख्य कार्य है।

पूतरनजीवाः जैसा इसका नाम वैसा इसका काम। वैदिक काल से इस जड़ी-बूटी को उन महिलाओं को देते आ रहे है जिनमें बार-बार गर्भपात होता है। अर्थात् गर्भ में पल रहे बच्चे की रक्षा करना इसका काम है। बच्चेदानी में किसी भी प्रकार की अनियमितता नहीं होने देती।

कलाबोलः इस जड़ी-बूटी से अलोइन नाम का ग्लाइकोसाइड निकलता है जो कि बच्चेदानी के लिए एक ताकतवर औषधि है, जिसके कारण बच्चेदानी अपने सभी कार्य सुचारू रूप से करती रहती है।

कुमुदः भ्रूण की बच्चेदानी से चिपकने में मदद करती है।

कासेरूकः गर्भधारण करने में मदद करती है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में जस्टाप्रोजन पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिएः

प्रोजस्टिरोन हार्मोन की कमी होने परः पशुओं में प्रोजस्टिरोन हार्मोन की कमी के कारण गर्भपात होने लगता है। अतः आप उन्हें गर्भपात से बचाने के लिए प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका लगवाते हैं, जिससे उनकी प्रोजस्टिरोन हार्मोन की तात्कालिक पूर्ति हो जाती है और पशु गर्भपात से बच जाता है। गर्भावस्था के अन्तिम दिनों तक प्रोजस्टिरोन हार्मोन के स्तर को बनाए रखने के लिए आप प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका लगवाने के तुरन्त बाद पशुओं को जस्टाप्रोजन पॉउडर अवश्य खिलवायें ताकि पशु कुदरती तौर पर कोरपस ल्यूटियम व प्लेसन्टा के द्वारा अपने आप प्रोजस्टिरोन हार्मोन बनाने लग जाए और पशु का गर्भ सुरक्षित रहे।

जब पशु शरीर दिखाता होः कई बार गर्भावस्था के दौरान पशु शरीर दिखाने लगता है क्योंकि लगातार गर्भ धारण करने के कारण बच्चेदानी की माँसपेशियाँ ढीली पड़ जाती है। माँसपेशियों में संकुचन पैदा करने के लिए आप उन्हें आई०/वी० कैल्शियम दिलवाते है जिससे माँसपेशियाँ सिकुड़ जाती हैं और पशु शरीर दिखाना बन्द कर देता है। आई०/वी० कैल्शियम तो पशु को फौरी तौर पर राहत प्रदान करता है। जैसे-जैसे पशु में कैल्शियम की कमी होने लगती है वैसे-वैसे पशु फिर से शरीर दिखाने लगता है। अतः आप आई०/वी० कैल्शियम दिलवाने के तुरन्त बाद पशुओं को जस्टाप्रोजन पॉउडर खिलवायें ताकि बच्चेदानी की सभी प्रकार की अनियमितताएँ दूर हो जाए व पशु शरीर दिखाना बन्द कर दें।

जब पशु का गर्भपात होने का खतरा होः कई बार पशु गर्भावस्था के दौरान जेरा सा डालने लगता है, जिसके कारण हमें लगता है कि पशु का गर्भपात होने ही वाला है। अतः जब भी पशु जेरा सा डालने लगे तो उसे तुरन्त जस्टाप्रोजन पॉउडर खिलाना चाहिए ताकि पशु को गर्भपात होने से बचाया जा सके।

जब पशु बार-बार गाभिन होता होः पशु बार-बार गाभिन होने का एक मुख्य कारण होता है पशु की बच्चेदानी में इन्फैक्शन / बीमारी होना। बीमारी को दूर करने के लिए आप या तो बच्चेदानी की सफाई करवाते है या फिर एन्टीबायोटिक लगवाते हैं। बच्चेदानी की सफाई करने से या एन्टीबायोटिक लगवाने से तो केवल बीमारी / इन्फैक्शन दूर

होती है लेकिन बीमारी के कारण बच्चेदानी में जो अनियमितताएँ आ गई है उन्हें दूर करने के लिए आप कुछ नहीं देते हैं। अतः जब पशु की बच्चेदानी में बीमारी के कारण अनियमितताएँ आ जाए तो उन्हें दूर करने के लिए आप जस्टाप्रोजन पॉउडर खिलाएँ।

भेड़ पालक कृपया ध्यान दें: मई-जून में गर्मी के कारण भेड़ों में बहुत ज्यादा संख्या में गर्भपात होने लगता है। अतः अगर आप अपनी सभी गाभिन भेड़ो को अप्रैल में ही जस्टाप्रोजन पॉउडर 5-10 ग्राम खिलाएगें तो मई-जून में गर्भपात होने की सम्भावना काफी कम हो जाएगी। अतः भेड़ों में आस बनाये रखने के लिए जस्टाप्रोजन पॉउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

बीज रखवाने के बाद गर्भपात से बचाने के लिए: बीज रखवाने के बाद पहले 8-16 दिन तक पशुओं में गर्भपात होने का खतरा सबसे ज्यादा रहता है। 8-16 दिन के बीच होने वाले गर्भपात को विज्ञान की भाषा में अरली अम्बरयोनिक डेथ कहते हैं। कई बार तो इतनी जल्दी होने वाले गर्भपात का पता भी नहीं चल पाता और पशु लंबे समय तक खाली रह जाता है। अतः बीज रखवाने के बाद अगले 16 दिन तक पशु को जस्टाप्रोजन पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए।

खुराकः

गर्भपात से बचाने के लिए: 50 ग्राम रोज़ाना 10 दिनों तक गर्भकाल के प्रत्येक महीने खिलाना चाहिए।

जब पशु बार-बार गाभिन होता हो: जब पशु बार-बार गाभिन होता है तो वह प्रत्येक 21 दिन बाद हीट में आता ही आता है। ऐसे पशुओं को बीज रखवाने के तुरन्त बाद 50 ग्राम प्रतिदिन 20 दिनों तक अवश्य खिलाना चाहिए।

उपलब्धताः 250 ग्राम, 500 ग्राम व 1 किलोग्राम

जस्टाप्रोजन पॉउडरः सुरक्षित गर्भकाल के लिए

न्यूक्लियोटोन पॉउडर

(नई कोशिकाओं के निर्माण के लिए)

आजकल के व्यापारिक समय में पशुओं पर ज्यादा उत्पादन देने का दबाव बना हुआ है। उत्पादन के इस स्थाई दबाव के कारण पशुओं के लिए अपना स्वास्थ्य बनाए रखना भी एक चुनौती है। जो पशु इस चुनौती का सामना नहीं कर पाते वे या तो बीमार पड़ जाते हैं या फिर उनका उत्पादन कम हो जाता है।

उदाहरण के तौर पर, आपने गौर किया होगा कि ज्यादा दूध देने वाले पशुओं में ही थनैला रोग होने की सम्भावना ज्यादा होती है। और एक बार थनैला रोग आ जाए तो फिर इससे पीछा छुड़ाना बड़ा मुश्किल होता है।

जब भी पशु को किसी प्रकार का कोई इन्फैक्शन (बीमारी) होता है तो इन्फैक्शन के कारण वहाँ की कोशिकाएँ नष्ट हो जाती हैं। कोशिकाओं के नष्ट होने के कारण ही पशु को ठीक होने में ज्यादा समय लगता है। उदाहरण के तौर पर जिस भी थन में थनैला रोग हो जाता है तो इन्फैक्शन के कारण उस थन की कुछ कोशिकाएँ नष्ट हो जाती हैं और परिणामस्वरूप वह थन सिकुड़ कर छोटा हो जाता है। बहुत ज्यादा कोशिकाओं के नष्ट होने के कारण थन से दूध आना भी बन्द हो जाता है। देहात में कहते है कि यह थन मर गया।

दूसरा, कई बार पशुओं के छोटे बच्चों को बहुत ज्यादा दस्त लग जाते हैं। दस्तों के कारण छोटे बच्चे बड़े कमजोर हो जाते हैं। दस्तों का मुख्य कारण होता है पेट में इन्फैक्शन का होना। इन्फैक्शन के कारण पेट की कुछ कोशिकाएँ नष्ट हो जाती हैं और परिणामस्वरूप बच्चों की हालत में देरी से सुधार होता है।

तीसरा, कई बार पशुओं को चोट लग जाती है और घाव बड़ी देरी से भरता है क्योंकि पशु के शरीर में जिस भी अंग पर घाव होगा वहाँ की कोशिकाएँ नष्ट हो जाती है और परिणामस्वरूप वहाँ पर स्थाई रूप से एक निशान पड़ जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब भी पशु को कोई इन्फैक्शन होगा तो वहाँ पर कोशिकाओं का नुकसान होगा ही होगा। अर्थात् वहाँ की कुछ न कुछ कोशिकाएँ तो अवश्य ही नष्ट होगीं। जितनी जल्दी कोशिकाएँ फिर से बनेगी उतनी ही जल्दी बीमारी दूर होगी। बीमारी के दौरान नई कोशिकाओं के निर्माण के लिए न्यूक्लियोटोन पॉउडर खिलाना चाहिए।

न्यूक्लियोटोन पॉउडर के प्रत्येक 200 ग्राम में मिलता हैः

न्यूक्लियोटाइडस	20 ग्राम
बेसिलस सिटिलिस	50 बिलियन सीएफयू
प्रोटीन बेस	170 ग्राम

न्यूक्लियोटाइडसः यह नई कोशिकाओं के निर्माण को बढ़ाता है। उत्तकों के नुकसान की जल्दी भरपाई करता है और घावों को जल्दी भरने में मदद करता है। न्यूक्लियोटोन पॉउडर में डाले गए न्यूक्लियोटाइडस का मुख्य स्त्रोत सेक्रोमाइसिस सरविसे (प्रोबायोटिक) है।

बेसिलस सिटिलिसः बेसिलस सिटिलिस को सेल फैक्टरी भी कहते है। यह बहुत तेजी से नई कोशिकाओं का निर्माण करता है।

प्रोटीन बेसः यह भी नई कोशिकाओं व उत्तकों को बनाने में सहायक है। प्रोटीन कोलेजन बनाने के लिए आवश्यक होता है जो घाव को बहुत तेजी से ठीक करता है।

सभी प्राणियों का शरीर छोटी-छोटी कोशिकाओं से बना है। प्रत्येक कोशिका प्लाजमा मेम्बरेन, साइटोप्लाजम व न्यूक्लियस से बनी होती है। न्यूक्लियस में डीएनए व हिस्टोन प्रोटीन होता है। न्यूक्लियोटाइडस डीएनए के निर्माण में सहायक होते हैं। इस प्रकार जब भी पशु को इन्फैक्शन, घाव या उत्पादन का दबाव हो तो आप 10 से 20 ग्राम न्यूक्लियोटोन पॉउडर अवश्य खिलायें ताकि आपके पशु में नई कोशिकाओं का निर्माण शुरू हो जाए और पशु जल्दी से ठीक हो जाए।

कई बार आपने गौर किया होगा की ब्याने के तुरन्त बाद तनाव के कारण पशु बिलकुल भी दूध नहीं देता है। हमने लाख कोशिश की किन्तु दूध नहीं आया। इस प्रकार के मामलों में न्यूक्लियोटोन पॉउडर खिलाएँ और पशुओं से सफलतापूर्वक दूध प्राप्त करें।

सुबह-शाम जब हम दूध निकालते हैं तो थन की कोशिकाओं का नुकसान होता है। दूध निकालने के कारण थन की कोशिकाओं के नुकसान की भरपाई के लिए न्यूक्लियोटोन पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिये।

कई बार पशुओं के थन फटने लगते हैं। आपने काफी-कुछ किया लेकिन थन फटने बन्द नहीं हुए। कभी आपने थनों पर मलाई लगाई तो कभी मक्खन लगाया तो कभी कोई मलहम लगाई लेकिन थन फटने बन्द नहीं हुए। अब आपको थनों पर चिकनाई या अन्य कुछ भी लगाने की जरूरत नही है। केवल न्यूक्लियोटोन पॉउडर 20 ग्राम रोज़ाना 10 दिनों तक खिलाएँ और पशुओं के थन फटने से छुटकारा पायें।

न्यूक्लियोटोन पॉउडर एक ऐसा प्रोडक्ट है जो पशु के प्रत्येक इलाज के साथ दिया जा सकता है। अगर आप किसी भी इलाज के साथ देगें तो यह उस इलाज के असर को प्रभावशाली तरीके से बढ़ा देता है। अतः बेहतर परिणाम के लिए इलाज के साथ-साथ न्यूक्लियोटोन पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिये।

निम्नलिखित परिस्थितियों में न्यूक्लियोटोन पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए:-

- थनैला रोग में (अयन सख्त होने, दूध में छेछड़े आने, अयन पर लाल रंग के चकते बनने की अवस्था में अवश्य इस्तेमाल करें।)
- बच्चेदानी में सूजन आने पर
- आंतड़ियो में सूजन आने पर
- छोटे बच्चों को दस्त लग जाने पर
- लगातार बहते हुए घावों को ठीक करने के लिए
- किसी सर्जरी व आप्रेशन के बाद
- किसी एक्सीडेंट में चोट लगने या घाव बनने पर
- सभी प्रकार की संक्रमित रोगों से प्रभावित हुए अंगो के उपचार के लिए
- फाइब्रोसिस के कारण जब पशु के थन गलने सड़ने लग जाए।

खुराकः

बड़े पशुओं में: 10 से 20 ग्राम दिन में एक बार

छोटे पशुओं में: 5 से 10 ग्राम दिन में एक बार

उपल्बधताः 200 ग्राम

न्यूक्लियोटोन पॉउडरः थनैला रोग में थनों को सिकुड़ने से बचाने के लिए

मिनवर्म

(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, जैसा कि आप जानते हैं किसी भी फसल में अगर खरपतवार हो तो वह फसल कमजोर रह जाती है। उसी प्रकार अगर पशु के पेट में कीड़े हों तथा शरीर के ऊपर मच्छर, मक्खी, चीचड़, जूँ, ढेरे व शोरी हो तो उस पशु का विकास पूरी तरह से नहीं हो पाता और वह कमजोर रह जाता है क्योंकि पेट के कीड़े 20 से 30 प्रतिशत तक पशु का दाना-चारा हज़म कर जाते हैं। अगर हमारे बच्चे के पेट में भी जूण हो तो वह कमजोर रहता है। इसी प्रकार पेट में कीड़े होने के कारण पशु भी कमजोर रहता है। पशुओं के पेट में कीड़े होने पर आपको निम्नलिखित लक्षण दिखाई देंगेः

- दूध व वजन में कमी
- बदबूदार व पतला गोबर
- चमड़ी में खुरदरापन एवं चमक में कमी
- आँखों में गीढ़ का आना
- प्रजनन क्षमता में कमी

पेट के कीड़ों के लिए आप पशुओं को दवा देते हैं तथा मच्छर, मक्खी, चीचड़, जूँ, ढेरे व शोरी के लिए आप आइवरमैक्टिन का टीका लगवाते हैं। अब आपको पेट के कीड़ों की दवा व आइवरमैक्टिन दोनों का मिश्रण मिनवर्म में उपलब्ध है।

मिनवर्म में पेट के कीड़ों के लिए एलबन्डाज़ोल तथा शरीर के अन्दर व बाहर दोनों प्रकार के कीड़ों के लिए आइवरमैक्टिन है। पेट के कीड़ों के लिए एलबन्डाज़ोल बाज़ार में उपलब्ध सबसे अच्छी दवा है क्योंकि यह हर प्रकार के कीड़े की हर अवस्था को मारती है। अतः आप पशुओं को हर प्रकार के कीड़ों से छुटकारा दिलाने के लिए मिनवर्म ही पिलवायें।

खुराकः

- एक एम.एल. 4 से 5 कि. ग्राम वजन के लिए
- मिनवर्म छोटे पशुओं के लिए 30 एम.एल. पैक में उपलब्ध है।
- मिनवर्म बड़े पशुओं के लिए 90 एम.एल. पैक में उपलब्ध है।
- मिनवर्म एक लीटर पैक में भी उपलब्ध है। जिससे एक साथ कई पशुओं के पेट के कीड़ों का सफाया हो जाता है।

पेट के कीड़े 20 से 30 प्रतिशत तक पशुओं का दाना-चारा हज़म कर जाते हैं। अतः आइये पेट के कीड़ों की वजह से होने वाले आर्थिक नुकसान की गणना करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम एक पशु को रोज़ाना औसतन 6 किलो ग्राम बाखर

(चाट, चोकर, आटा आदि) 10 किलो ग्राम सूखा चारा तथा 5 किलो ग्राम हरा चारा डालते हैं तो पेट के कीड़ों की वजह से होने वाला नुकसान इस प्रकार हैः

वस्तु का नाम	पेट के कीड़ों से नुकसान (किलो ग्राम में)	वस्तु की दर प्रति किलो ग्राम (₹)	आर्थिक नुकसान (₹)
बाखर (6 किलो ग्राम)	1.2 से 1.8	18	22 से 32
सूखा चारा (10 किलो ग्राम)	2 से 3	3	6 से 9
हरा चारा (5 किलो ग्राम)	1 से 1.5	3	3 से 5
कुल आर्थिक नुकसान			31 से 46 रुपये

इस प्रकार पेट के कीड़ों की वजह से हमें प्रत्येक पशु पर रोजाना 31 से 46 रुपये का नुकसान होता है। तीन महीने में यही नुकसान (31 x 90, 46 x 90) 2790 से 4140 रुपये हो जाता है। तीन महीने में एक बार हमें पशु को पेट के कीड़ों की दवा देनी चाहिए। मिनवर्म 90 एम.एल. की कीमत 83 रुपये है। अतः मात्र 83 रुपये खर्च करके हम 4140 रुपये का नुकसान बचा सकते हैं।

अगर यह 20 से 30 प्रतिशत चारा पेट के कीड़े हज़म नहीं करते तो कुछ न कुछ तो दूध बढ़ता तथा पशु समय से गर्भधारण करता। अतः पेट के कीड़ों की वजह से हमें आर्थिक नुकसान के साथ-साथ दूध का नुकसान तथा देरी से नई पीढ़ी मिलने का नुकसान अर्थात् तीन गुणा नुकसान होता है। अतः पशुपालक मित्रों, आप जागिए और मात्र 83 रुपये खर्च करके 4140 रुपये का नुकसान बचाए।

कृपया ध्यान देंः मिनवर्म गाभिन पशु को नहीं देनी चाहिए।

उपलब्धताः 30 एम० एल० व 1 लीटर

मिनवर्मः सभी प्रकार के पेट के कीड़ों की सभी अवस्थाओं का सफ़ाया करने के लिए

मिनफ्लुक-डीएस

(पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पशुओं के पेट में कई प्रकार के कीड़ें होते हैं। जैसेः गोल कीड़े, चपटे कीड़े, जिगर के कीड़े व रुमनफ्लुक। जो पशुपालक जोहड़ पर अपने पशुओं को पानी पिलाने के लिए ले जाते हैं उन्होनें जोहड़ के किनारे पर पत्तों के आकार तथा शंख के आकार की कुछ बनावटें अवश्य देखी होंगी। पत्तों के आकार की बनावट और कुछ नहीं जिगर का कीड़ा होता है। जिसे लिवरफ्लुक कहते हैं तथा शंख के आकार की बनावट और कुछ नहीं रुमन (पेट) का कीड़ा होता है, जिसे रुमनफ्लुक अर्थात् एम्फिस्टोम कहते हैं।

जिगर का कीड़ा (लिवरफ्लुक)

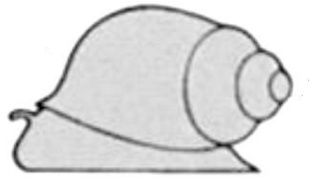

रूमनफ्लुक अर्थात् एम्फिस्टोम

मिनफ्लुक-डीएस जिगर के कीड़े, रुमन के कीड़े, गोल या चपटे कीड़े, सभी प्रकार के कीड़ों पर प्रभावशाली है।

मिनफ्लुक-डीएस की प्रत्येक बोलस में मिलता हैः		
ओक्सिकलोजेनाइड	=	4 ग्राम
लिवामिसोल	=	2 ग्राम

ओक्सिकलोजेनाइड जिगर के कीड़ों व रुमन के कीड़ों को मारती है, तथा लिवामिसोल पेट के अन्य कीड़ों पर असरकारक है। इस प्रकार मिनफ्लुक-डीएस पेट के सभी प्रकार के कीड़ों का सम्पूर्ण सफ़ाया करती है। मिनफ्लुक-डीएस गाभिन पशुओं को भी दे सकते हैं।

खुराकः

- बड़े पशुओं में एक बोलस

उपलब्धताः

- 6 ग्राम की बोलस डिब्बी के साथ

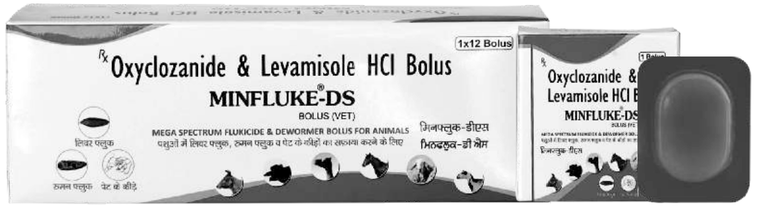

मिनफ्लुक-डीएस सस्पेन्सन के रूप में भी उपलब्ध है

मिनफ्लुक-डीएस सस्पेन्सन के प्रत्येक एम० एल० मे मिलता है	
ओक्सिकलोजेनाइड	6 %
लिवामिसोल	3 %

जब हम अपने पशुओं को मिनफ्लुक बोलस या सस्पेन्सन देते हैं तो पशु दो-तीन दिन तक पतला गोबर करता है। दो-तीन दिन बाद फिर से पशु अपने आप सामान्य गोबर करने लग जाऐगा। अतः पशु का पतला गोबर देखकर आपको घबराना नहीं है बल्कि पशु के गोबर को गौर से देखना है। जब आप गोबर को गौर से देखेगें तो आपको उसमें कीड़े नजर आऐगें। इसका तात्पर्य यह है कि आपके पशु के पेट के कीड़ों का सफाया हो गया है।

खुराकः 1 एम० एल०, 2 किलोग्राम वजन के लिए

उपलब्धताः 15 एम० एल० 100 एम० एल० 1000 एम० एल०

मिनफ्लुक-डीएसः जिगर व पेट के कीड़ों का सफ़ाया करने के लिए

पुबरऐड पॉउडर

(बछड़ा / बछिया को जल्दी तैयार करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पुबरएड दो शब्दों के मिलाप से बना है। **PUBERTY** (पुबरटी) + AID (ऐड) । पुबरटी कहते है यौवन को और एड का अर्थ होता है सहायता करना अर्थात् जो पशुओं के छोटे बच्चों में यौवन (जवानी) लाने में मदद करे उसे पुबरएड कहते हैं। पुबरटी अर्थात यौवन वह अवस्था होती है जब नर पशु उपजाऊ शुक्राणु तथा मादा पशु उपजाऊ अण्डा पैदा करने के लायक हो जाए। बोलचाल की भाषा में पुबरटी वह अवस्था होती है जब नर या मादा पशु बच्चे पैदा करने के लायक हो जाए। छोटे बच्चों को जल्दी यौवन प्राप्त करवाने के लिए पुबरऐड पॉउडर का इस्तेमाल करना चाहिए।

पुबरऐड पॉउडर के प्रत्येक 1 कि० ग्रा० में मिलता है:

डाइकैल्शियम फास्फेट	=	300 ग्राम
जिंक विद अमाइनो एसिड चिलेटस	=	8 ग्राम
मैगनीज विद अमाइनो एसिड चिलेटस	=	3.5 ग्राम
कॉपर विद अमाइनो एसिड चिलेटस	=	0.5 ग्राम
विटामिन ए	=	10,00,000 आई.यू.
विटामिन डी-3	=	2,00,000 आई.यू.
विटामिन ई	=	800 आई.यू.
फरमेन्टिड ईस्ट कल्चर (ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी एसिड के साथ)	=	60 ग्राम
कुरकुमा लोंगा (हल्दी)	=	25 ग्राम
बेस	=	पर्याप्त मात्रा

डाईकैल्शियम फास्फेटः इसमें मौजूद कैल्शियम हड्डियों तथा शरीरिक ढ़ाँचे का विकास करता है, मिल्क फीवर की सम्भावना को कम करता है, मांसपेशियों की कार्यप्रणाली को सुचारू रखता है, गर्भकाल व उसके बाद होने वाली समस्याओं जैसे पशु द्वारा ज़ेर न गिराना, पशु द्वारा शरीर दिखाना तथा ब्याने के बाद जनन अंगों का देरी से अपने स्थान पर वापस आने की सम्भावना को कम कर देता है। इसमें मौजूद फास्फोरस ओवरी को प्रभावित करता है, जिससे पशु की गर्भधारण करने की क्षमता बढ़ जाती है। और फास्फोरस की कमी के कारण होने वाली समस्याऐं जैसे कि पाइका, डाउनर काऊ सिंड्रोम तथा पशुओं के पेशाब में खून आना आदि समाप्त हो जाती हैं।

जिंक विद अमाइनो एसिड चिलेटसः यह अण्डकोष को विकसित करता है तथा शुक्राणुओं के उत्पादन को बढ़ाता है। यह नर पशुओं में सैक्स करने की इच्छा/ उत्तेजना को बढ़ाता है। प्रजनन से सम्बन्धित सभी घटनाएँ सुचारू रुप से होती है तथा त्वचा से सम्बन्धित रोग जैसे कि पैराकैरेटोसिस की रोकथाम करता है।

मैगनीज विद अमाइनो एसिड चिलेटसः मैगनीज स्टेरायड हार्मोनस जैसे इस्ट्रोजन, परोजेस्टिरोन तथा टेस्टोस्टिरोन के बनाने में मदद करता है, जो नर पशुओं में शुक्राणुओं का निर्माण करते हैं तथा मादा पशुओं में हीट चक्र को सामान्य रखते हैं।

कॉपर विद अमाइनो एसिड चिलेटसः कॉपर पशुओं में खून बनाने में सहायक है तथा पशुओं की चमड़ी व बालों के रंग को सामान्य बनाए रखता है।

विटामिन एः यह एंटीइन्फैक्टीव विटामिन है अर्थात् यह बीमारी फैलने से रोकता है। यह शुक्राणुओं को बनाने मे सहायक है और नर पशुओं में सैक्स करने की इच्छा को बनाये रखता है।

विटामिन डी-3ः यह कैल्शियम व फास्फोरस के अवशोषित होने में सहायक है।

विटामिन ईः यह एंटीआक्सीडेंट है तथा एंटीस्टरलिटी विटामिन है। पशुओं में बांझपन नहीं आने देता।

फरमेन्टिड ईस्ट कल्चर (ओमेगा 3 व ओमेगा 6 फैटी एसिड के साथ): फरमेन्टिड ईस्ट कल्चर पशुओं के पाचन तन्त्र को सुचारू रूप से चलाने में मदद करती है। ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी एसिडस LH हार्मोन के स्तर को बढ़ा देते हैं। LH हार्मोन ओवरी पर बनने वाले फोलिकल को विकसित करके अण्डा निकालने में मदद करता है जिसके, परिणामस्वरूप, पशु हीट में आ जाता है।

***कुरकुमा लोंगा* (हल्दी):** यह इम्यूनोमोडुलेटर (रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले), एंटीइनफलेमेटरी (सूजन कम करने वाली), एंटीमाईक्रोबियल (हानिकारक सूक्ष्म जीवाणुओं से बचाव करने वाली) तथा एंटीआक्सीडेंट का काम करती है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में पुबरऐड पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिएः-

जब नर व मादा पशुओं में यौवन व यौन परिपक्वता देरी से आएः

पशुपालक मित्रों, कई बार आपकी बछिया / कटिया 3-4 साल की हो जाती है लेकिन फिर भी वह हीट में नहीं आती है। ठीक इसी प्रकार कई बार आपका बछड़ा / कटड़ा 3-4 साल का हो जाता है फिर भी वह सर्विस देने के लायक नहीं हो पाता है। इन दिनों परिस्थितियों को यौवन/जवानी देरी से आई, कहा जाऐगा। इन दोनों ही परिस्थितियों में पुबरऐड पॉउडर 40 ग्राम प्रतिदिन खिलायें ताकि बछिया/कटिया हीट में आ जाए तथा बछड़ा / कटड़ा सर्विस देने के लायक हो जाए।

कई बार जब आपकी बछिया/कटिया हीट में आती है तो आप उसे कृत्रिम गर्भाधान द्वारा नए दूध करवाते हैं। कृत्रिम गर्भाधान करते समय डॉक्टर साहब कहते हैं कि ए०आई० गन पास करने में दिक्कत आ रही है। इसका तात्पर्य यह है कि अभी बछिया/कटिया के जनन अंग पूरी तरह से विकसित नहीं हुए हैं, इसलिए डॉक्टर साहब को ए०आई० गन पास करने में दिक्कत आ रही है। इस तरह की बछिया/कटिया को तुरन्त पुबरऐड पॉउडर 40 ग्राम रोज़ाना के हिसाब से खिलाएँ ताकि उसके जननांग पूरी तरह से विकसित हो जाए और अगली बार ए०आई० करते समय डाक्टर साहब को कोई दिक्कत न आए तथा प्रसव के दौरान पशु को कोई कठिनाई न आए।

जब नर पशुओं का जोश ठण्डा पड़ जाएः

लगातार सर्विस देने के कारण साण्ड/झोटा का जोश ठण्डा हो जाता है जिसके कारण वे सर्विस नहीं देते और पीछे हटने लगते है। साण्ड/झोटा का जोश फिर से प्राप्त करने के लिए उन्हें 40 ग्राम पुबरऐड रोज़ाना खिलायें ताकि वे नए जोश के साथ सर्विस देने लग जाए। अगर आप साण्ड/झोटा को नियमित रूप से पुबरऐड पॉउडर खिला रहे हैं तो उनका जोश ठण्डा पड़ेगा ही नहीं।

जब नर या मादा बच्चों के शारीरिक विकास व शारीरिक वजन में कमी रह जाएः

कई बार बछिया डेढ़-दो साल की हो जाती है लेकिन देखने में वह 5-6 महीने की ही लगती है। इसका तात्पर्य यह है कि उम्र के अनुपात में उसका शारीरिक विकास नहीं हुआ है। ऐसी बछिया को तुरन्त 40 ग्राम रोज़ाना के हिसाब से पुबरऐड पॉउडर खिलाएँ ताकि उम्र के अनुपात में बछिया की कद-काठी (शारीरिक विकास) हो जाए और उसकी प्रजनन क्षमता बढ़ जाए। ठीक इसी प्रकार बछड़ा डेढ़-दो साल का हो जाता है लेकिन देखने में वह 5-6 महीने का ही लगता है। इस प्रकार के बछड़े को तुरन्त 40 ग्राम रोजाना के हिसाब से पुबरऐड पॉउडर खिलाएँ ताकि उम्र के अनुपात में बछड़े की कद-काठी (शरीर विकसित) हो जाए और वह समय से सर्विस देने के लायक हो जाए।

कई बार पशुओं के बच्चों की कद-काठी तो बढ़िया होती है लेकिन कद-काठी के अनुसार उनका शरीर हल्का रह जाता है। अर्थात् कद-काठी के अनुपात में शरीर का वजन कम होता है। ऐसे बच्चों को तुरन्त पुबरऐड पॉउडर खिलायें ताकि कद-काठी के अनुपात में शारीरिक वजन हो जाए और उनका शरीर गठीला दिखाई देने लग जाए।

पशुपालक मित्रों, अब बात आती है कि पुबरऐड पॉउडर बच्चों को कब से खिलाना शुरु करना चाहिए ? तीन महीने या उससे बड़े बच्चों को पुबरऐड पॉउडर शुरु कर सकते है। ऐसा करने पर हमारे पशुओं के बच्चों की बड़ी अच्छी कद-काठी बन जाएगी व उनका शरीरिक वजन भी बहुत अच्छा हो जाऐगा जिससे उनमें यौवन व यौन परिपक्वता 18 से 20 महीने की उम्र में ही आ जाऐगी। और पशुओं के बच्चे आपके लिए जल्दी ही फलदायक हो जाऐगें। इस प्रकार पशुओं के बच्चों से ज्यादा लाभ प्राप्त करने के लिए उन्हें पुबरऐड पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए।

मेलों में इनाम जीतने वाले पशु तैयार करने के लिएः अगर आप चाहते है कि आपका पशु मेलों या किसी प्रदर्शनी में इनाम जीत कर लाए तो जैसे ही आपका बच्चा तीन महीने का हो जाए उसे पुबरएड खिलाना शुरु कर देना चाहिए ताकि वह प्रदर्शनी में भाग लेकर इनाम जीतने में कामयाब हो जाए।

खुराकः बछिया / कटिया : 40 ग्राम रोज़ाना
बछड़ा / कटड़ा : 40 ग्राम रोज़ाना

उपलब्धताः 1 किलोग्राम, 2.5 किलोग्राम व 5 किलोग्राम

पुबरऐड पॉउडर- यौवन व यौन परिपक्वता लाने के लिए

पशुओं को नए दूध करवाने के तुरन्त बाद ठण्डा टीका नहीं लगवाना चाहिए

कई पशुपालक अपने पशुओं को नए दूध करवाने के तुरन्त बाद ठण्डा टीका (प्रोजस्टिरोन हार्मोन) लगवाते हैं। ठण्डा टीका लगवाने के बाद ज्यादातर पशु खराब हो जाते हैं, और फिर ऐसे पशु 5-6 महीनों तक हीट में नहीं आते। आइए, सबसे पहले आपको पशु के हीट में आने की प्रक्रिया को वैज्ञानिक तरीके से समझाते हैं।

जब पशु को हीट में आना होता है, तो सबसे पहले पशु की हाइपोथेलेमस से GnRH हार्मोन बनता है। GnRH हार्मोन अपना असर एनटिरियर पिच्यूयटरी पर दिखाता है, जिससे पिच्यूटरी ग्लैण्ड से FSH और LH हार्मोन बनते हैं। FSH हार्मोन, जैसा इसका नाम वैसा इसका काम। FSH अर्थात् फोलिकल स्टिमुलेटिंग हार्मोन। FSH का काम ओवरी पर एक फोलिकल बनाना और ओवरी से इस्ट्रोजन हार्मोन बनाना होता है। LH हार्मोन फोलिकल को विकसित करके उससे अण्डा निकालने का काम करता है और परिणामस्वरूप पशु हीट में आ जाता है, और तार दिखाने लगता है। जिस जगह पर फोलिकल बना था उसी जगह पर CL (कारपस ल्यूटियम) बनाने में भी LH हार्मोन का योगदान होता है। CL में ही प्रोजस्टिरोन हार्मोन बनाता है और, परिणामस्वरूप, पशु गर्भ धारण किए रहता है तथा अपना गर्भकाल पूरा करता है।

ओवरी में इस्ट्रोजन हार्मोन बनता है और इस्ट्रोजन हार्मोन के प्रभाव के कारण ही पशु हीट में आता है। इस्ट्रोजन हार्मोन को वैज्ञानिक ऑलराउण्डर हार्मोन भी कहते हैं, क्योंकि यह एक साथ कई जननांगों को प्रभावित करता है। जब इस्ट्रोजन हार्मोन दिमाग पर असर डालता है तो पशु के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है अर्थात् हीट में आने के कारण पशु पुकारने लगता है या दूसरे पशु के ऊपर चढ़ने लगता है।

जब इस्ट्रोजन हार्मोन एनटिरियर पिच्यूयटरी पर अपना प्रभाव डालता है तो FSH और LH हार्मोन बनने लगते हैं। जब इस्ट्रोजन हार्मोन का प्रभाव फलोपियन ट्यूब, बच्चेदानी, सरविक्स, और वजाइना पर होता है तो इन जननांगों से एक तरल पदार्थ निकलता है। यह तरल पदार्थ अण्डे को फलोपियन ट्यूब तक तथा शुक्राणुओं की वजाइना से लेकर फलोपियन ट्यूब तक की यात्रा करने में मदद करता है, जिसके परिणामस्वरूप फलोपियन ट्यूब में अण्डे और शुक्राणुओं का मिलन होता है और एक नया जीव बन जाता है।

पशुपालक मित्रों, अब आप यह बात जान चुके हैं कि इस्ट्रोजन हार्मोन के प्रभाव के कारण ही पशु हीट में आता है तथा इस्ट्रोजन हार्मोन कई अंगों को प्रभावित करता है। अब हमें यह नहीं पता कि पशु में इस्ट्रोजन हार्मोन का असर कब तक रहेगा क्योंकि कोई पशु 12 घण्टे में हीट तोड़ देता है तो कोई-कोई 36 घण्टे तक भी हीट में रहता है। ऊपर से हम

प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका लगवा देते हैं। इस्ट्रोजन और प्रोजस्टिरोन हार्मोन का प्रभाव एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है अगर आपने इस्ट्रोजन हार्मोन का प्रभाव समाप्त होने से पहले प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका लगवा दिया, तो पशु में हार्मोन का सन्तुलन बिगड़ जाता है। इस हार्मोन के सन्तुलन को ठीक होने में 5-6 महीने का समय लग सकता है।

आप प्रोजस्टिरोन हार्मोन का जो टीका लगवाते हैं, वह प्रोजस्टिरोन हार्मोन 2-5 दिन बाद तो CL से बनना ही बनना है तो फिर क्यों हम बेकार में पैसे भी खर्च करें और पशु के खराब होने का खतरा भी मोल लें ? ठण्डा टीका लगवाने से बेहतर है कि आप आपने पशुओं को जस्टाप्रोजन पॉउडर खिलाएँ ठण्डा टीका और जस्टाप्रोजन पॉउडर की तुलना इस प्रकार है:-

प्रोजस्टिरोन हार्मोन (ठण्डा टीका)	जस्टाप्रोजन पॉउडर
• प्रोजस्टिरोन हार्मोन वह हार्मोन है जो मादा पशु के जनन अंगों से स्त्रावित होता है और गर्भावस्था को बनाए रखता है।	• जस्टाप्रोजन पॉउडर एक हार्मोन रहित उत्पाद है जो मादा के जनन अंगों से ही प्रोजेस्टरोन हार्मोन स्त्रावित करवाता है
• प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका बीज रखवाने के 3-7 दिन के बीच में लगाया जाए तो ही अपना प्रभाव दिखाता है।	• जस्टाप्रोजन पॉउडर गर्भावस्था के किसी भी समय खिलाया जा सकता है।
• यदि प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका हीट में आने के 2-3 दिन के अंदर ही लगा दिया जाए तो यह इस्ट्रस साइकिल को छोटा कर देता है जिससे गर्भधारण की दर कम हो जाती है।	• जस्टाप्रोजन पॉउडर मादा के जनन अंगों में होने वाली सभी अनियमितताओं को दूर करके इस्ट्रस साइकिल को सामान्य बना देता है जिससे गर्भधारण की दर बढ़ जाती है।
• प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका LH हार्मोन के स्त्राव को कम कर देता है। LH हार्मोन Corpus Luteum को बनाने व Corpus Luteum से प्रोजस्टिरोन हार्मोन स्त्रावित करवाने के लिए आवश्यक है।	• जस्टाप्रोजन पॉउडर मादा के जनन अंगों को प्रभावित करता है जिससे प्रोजेस्टरोन हार्मोन बनने लगता है। प्रोजेस्टरोन हार्मोन बनने से हार्मोन्स का स्तर उचित व उनकी कार्यप्रणाली संतुलित बनी रहती है।
• यदि पशु के गर्भ में Male बच्चा पल रहा है और उसे प्रोजस्टिरोन हार्मोन का टीका लगा दिया जाए तो यह बच्चे के प्रजनन अंगों पर अपना दुष्प्रभाव डालता है।	• जस्टाप्रोजन पॉउडर एक हार्मोन रहित उत्पाद है इसलिए इसके इस्तेमाल से गर्भ में पल रहे बच्चे पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

टोक्सऑउट पॉउडर

(दाना-चारा में उपस्थित फफूंद को बाहर निकालने के लिए)

पशुपालक मित्रों, पशुओं में वर्तमान समय में आने वाली मुख्य समस्याएँ इस प्रकार हैः-

- पशुओं की प्रजनन क्षमता में कमी आ जाती है। जैसेः-
  - पशु 21 दिन में हीट मे न आकर अनियमित रूप से हीट मे आता है।
  - पशु हीट में काफी कम समय तक रहता है।
  - पशु हीट में काफी लम्बे समय तक रहता है।
  - गर्भ मे पल रहे बच्चे की मृत्यु हो जाती है तथा गाभिन पशु भी हीट के लक्षण दिखाने लगता है।
  - पशुओं की गर्भ धारण करने की क्षमता में कमी आ जाती है।
- पशुओं की खुराक कम हो जाती है।
- पशुओं को रुक-2 कर खूनी दस्त लग जाते हैं या पशु लगातार पतला गोबर करता रहता है।
- पशुओं की चमड़ी व बालों में खुरदुरापन आ जाता है।
- पशुओं पर किसी भी इलाज का कोई असर नहीं होता तथा पशु बार-बार थनैला रोग का शिकार होता रहता है।
- पशुओं का दूध कुछ जमा जमा सा रहता है।

उपरोक्त सभी समस्याओं का कारण है आपके पशुओं के दाने-चारे में फफूंद का उपस्थित होना। देहात में पशुओं के लिए दाना व चारा स्टोर करके रखने की परम्परा है। विशेषकर गेहूँ का तूड़ा या ज्वार-बाजरा की कड़वी। गेहूँ का तूड़ा तो लगभग सालभर का स्टोर करके रखा जाता है। जब भी कोई वस्तु स्टोर करके रखी जाती है तो उसमें नमी के कारण फफूंद लग जाती है। उदाहरण के तौर पर अगर हम अचार को काफी दिनों तक न सम्भालें तो उस पर एक मटमैली रंग की परत जम जाती है। यह मटमैली रंग की परत और कुछ नहीं बल्कि फफूंद होती है।

फफूंद के कारण पशुओं को जो बीमारी होती है उसे माइकोसिस कहते हैं तथा फफूंद जो विषैलापन/ /जहरीलापन पैदा करती है उसे माइकोटोक्सिन कहते हैं। जब पशु माइकोटोक्सिन से युक्त दाना-चारा खा लेता है तो पशु के शरीर में एक विकार उत्पन्न हो जाता है जिसे माइकोटोक्सिकोसिस कहते हैं। माइकोटोक्सिकोसिस के कारण ही उपरोक्त समस्याएं आती हैं।

उपरोक्त सभी समस्याओं को दूर करने के लिए टोक्सऑउट पॉउडर का इस्तेमाल करना चाहिए। टोक्सऑउट पॉउडर नीम लीफ एक्सट्रेक्ट (नीम के पत्तों का रस), सोडियम फोरमेट, फाइलोसिलिकेटस व एक्टीवेटिड चारकोल का मिश्रण है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में टोक्सऑउट पॉउडर का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिएः-

एफलाटोक्सिकोसिसः जब पशु को फफूंद युक्त दाना-चारा खिलाया जाता है तो फफूंद पशु के पेट में जाकर अपना जहरीलापन दिखाती है जिससे पशु का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है क्योंकि फफूंद पशु के पाचन तन्त्र में अपना स्थाई डेरा बना लेती है जिससे पशु का स्वास्थ्य व उत्पादन दोनों ही बिगड़ जाते हैं। जब आपके पास गेहूँ का तूड़ा खत्म हो जाता है तो आप अपने पशुओं को धान की पराली खिलाते हैं। धान की फसल क्योंकि काफी समय से पानी में खड़ी रहती है इसलिए धान की पराली पर फफूंद लगने की ज्यादा सम्भावना होती है। अतः धान की पराली के साथ टोक्सऑउट पॉउडर अवश्य खिलाना चाहिए ताकि पराली पर अगर फफूंद हो तो उसका दुष्प्रभाव कम हो जाए और पशु का स्वास्थ्य व उत्पादन दोनों ही सही सलामत रहें।

जब पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाएः जब पशु को फफूंद युक्त दाना-चारा खिलाया जाता है तो फफूंद पाचन तन्त्र में अपना एक स्थाई डेरा बना लेती है। जिसके कारण पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है।

जब पशुओं के दूध की गुणवत्ता में कमी आ जाएः फफूंद युक्त दाना-चारा खाने से पशुओं के दूध की गुणवत्ता में कमी आ जाती है क्योंकि फफूंद कई प्रकार का विषैलापन छोड़ती है जिसमें से एक एफलाटोक्सिन एम 1(AFM1), दूध में आने लगता है, जिससे दूध की गुणवत्ता में कमी आ जाती है। AFM1 के कारण दूध की दही भी अच्छी तरह से नहीं जमती तथा मक्खन भी कम निकलता है। भारत में दूध में AFM1 के लिए अधिकतम स्वीकार्य सीमा 0.5 पीपीबी (पार्ट्स पर बिलियन) निर्धारित की गई है।

जब AFM1 की मात्रा दूध में मानक स्तर से ऊपर चली जाती है तो दूध लेने वाली संस्थाएं दूध उठाना बंद

कर देती हैं जिससे पशुपालक को आर्थिक नुकसान होता है। अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान एजेंसी की एक रिपोर्ट के अनुसार AFB1 और AFM1 को कैंसर कारक पदार्थों की प्रथम श्रेणी में रखा गया है। कई बार आपने देखा होगा की किसी इंसान में किसी प्रकार का कोई व्यसन नहीं है लेकिन फिर भी उसको कैंसर की शिकायत हो जाती है। यह कैंसर दूध पीने के कारण ही होता है क्योंकि पशु के दूध में AFM1 कैंसर का कारण बनता है। AFM1 दूध पीने के कारण हमारे बच्चों की बढ़ोतरी भी कम होती है। अतः AFB1 व AFM1 रहित सुरक्षित दूध प्राप्त करने के लिए पशु को टोक्सऑउट पॉउडर अवश्य खिलाएं।

जब पशुओं पर किसी भी इलाज का पूरा असर न होः कई बार पशुओं को बार-बार थनैला रोग होता है। कुछ पशु लगातार पतला गोबर करते रहते हैं। कुछ पशुओं के पेशाब में लगातार खून आता रहता है। कई बार ब्याने के तुरन्त बाद पशु दूध से नहीं चलते। कुछ पशुओं की सेहत लगातार गिरती रहती है। कई पशु लाख कोशिशों के बावजूद भी बार-बार गाभिन होते रहते हैं। जब आपका सामना इस प्रकार की समस्याओं से हो तब आपको तुरन्त अपने पशुओं के दाने-चारे की जाँच करवानी चाहिए क्योंकि इस बात की पूरी सम्भावना है कि आप अपने पशुओं को फफूंद युक्त दाना-चारा खिला रहे हैं।

फफूंद के कारण ही आपके पशु पर इलाज का असर नहीं हो रहा है। जब तक फफूंद बाहर नहीं निकलेगा तब तक आपके पशु पर इलाज का कोई असर नहीं होगा। अतः जब आपको लगे कि आपकी कोशिशों का कोई असर नहीं हो रहा है तब एक आखिरी कोशिश टोक्सऑउट पॉउडर के साथ करनी चाहिए ताकि आपके पशु पर इलाज का पूरा असर हो जाए।

जब पशु को बहुत ज्यादा एंटीबायोटिक लगाए जाएंः जब पशु को थनैला रोग हो जाता है तो पशु को विभिन्न प्रकार के एंटीबायोटिक के टीके लगाए जाते हैं क्योंकि थनैला रोग आसानी से ठीक नहीं होता। जब पशु मालिक को लगता है की पशु को थनैला रोग से राहत नहीं मिल रही तो वह बहुत जल्दी- जल्दी डॉक्टर बदलता है। जो भी नया डॉक्टर आता है वह पहले लगाए गए एंटीबायोटिक इन्जेक्शन का फीडबैक नहीं लेता है। किस डॉक्टर ने कौन सा एंटीबायोटिक का टीका लगाया इसकी जानकारी पशुपालक के पास नहीं होती और परिणामस्वरूप नया डॉक्टर भी एंटीबायोटिक लगाकर अपना उपचार शुरू करता है। इस प्रकार पशुपालक जितने डॉक्टर बदलेगा उतना ज्यादा एंटीबायोटिक पशु को लगेगा अर्थात पशु को जरूरत से ज्यादा एंटीबायोटिक लग जाते हैं। पशु के शरीर में एंटीबायोटिक का असर समाप्त होने में काफी समय लगता है और इस एंटीबायोटिक का प्रभाव दूध में भी देखने को मिलता है। दूध में एंटीबायोटिक की मात्रा बढ़ जाने से दूध की गुणवत्ता पर असर पड़ता है। इससे दही भी अच्छी नहीं जमती व घी भी कम निकलता है। कभी-कभी तो दूध से दुर्गंध आने लगती है व दूध का स्वाद

भी बदल जाता है। अतः पशु को एंटीबायोटिक लगवाने के बाद टोक्सआउट पॉउडर अवश्य खिलाएं। टोक्सआउट पॉउडर, दूध में एंटीबायोटिक के स्तर को कम करके दूध की गुणवत्ता में सुधार करता है।

जब पशु को पेट के कीड़ों का सफाया करने वाली दवा की जरूरत से ज्यादा खुराक दे दी जाएः जब पेट के कीड़ों का सफाया करने के लिए पशु को पेट के कीड़ों का सफाया करने की दवा की जरूरत से ज्यादा खुराक दे दी जाती है तो इससे कई बार पशु की मौत भी हो सकती है। अतः जब पशु को ज्यादा मात्रा में पेट के कीड़ों का सफाया करने वाली दवा दे दी जाए तो पशु को टोक्सआउट पॉउडर खिलाना चाहिये ताकि पशु को समय रहते बचाया जा सके।

खुराकः

- बड़े पशुओं मेंः 50 ग्राम दिन मे एक बार।
- छोटे पशुओं मेंः 25 ग्राम दिन मे एक बार।
  एक टन फीड में 1.5 - 2.0 किलोग्राम
  टोक्सऑउट पॉउडर मिलाना है।

उपलब्धताः 1 किलोग्राम, 2 किलोग्राम व 5x5 किलोग्राम

टोक्सऑउट पॉउडरः दाना-चारे में उपस्थित फफूंद को बाहर निकालने के लिए

माइक्रोटोन

(छोटे बच्चों को ताकत प्रदान करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, अपने देश में पशुओं के छोटे बच्चों की मृत्यु दर बहुत ज्यादा है। इसके निम्नलिखित कारण हैः

1) **माइक्रोफ्लोरा की कमीः** पशुओं के छोटे बच्चों में लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु ज्यादा विकसित नहीं होते अतः वे दाना-चारा हजम करने में 20-25 दिन का समय लेते है। अगर किसी वजह से माइक्रोफ्लोरा पर तनाव आ जाए तो छोटे बच्चे कमज़ोर रह जाते हैं।

2) **कम दूध पिलानाः** पशुओं के छोटे बच्चों को 20-25 दिनों तक पर्याप्त मात्रा में दूध पिलाना चाहिए क्योंकि शुरू-शुरू में दूध ही छोटे बच्चों का मुख्य आहार होता है।

3) **पेट के कीड़ेः** पशुओं के छोटे बच्चों को नियमित रूप से पेट के कीड़ों की दवा देनी चाहिए। अगर हम उन्हें पेट के कीड़ों की दवा नहीं देगें तो वे काफी कमजोर हो जाऐंगे। अगर कमजोर बच्चों को पेट के कीड़ों की दवा दी जाती है तो ऐसे बच्चे पेट के कीड़ों को गोबर के रास्ते बाहर नहीं निकाल पाते और परिणामस्वरूप मरे हुए पेट के कीड़े पेट में ही रह जाते हैं। मरे हुए पेट के कीड़े पेट के अन्दर जहरीला पदार्थ फैला देते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। ऐसा विशेष रुप से सर्दियों में बहुत होता है।

पशुओं के छोटे बच्चों को माइक्रोटोन अवश्य पिलाना चाहिए ताकि उनमें कुछ ताकत आ जाए।

माइक्रोटोन के प्रत्येक 5 एम.एल. में मिलता हैः

विटामिन बी$_{2}$	=	1.25 मिलीग्राम
विटामिन बी$_{6}$	=	0.62 मिलीग्राम
विटामिन बी$_{12}$	=	6.25 माइक्रोग्राम
डी-पेन्थीनोल	=	0.65 मिलीग्राम
निकोटिनामाइड	=	18.75 मिलीग्राम
कोलिन क्लोराइड	=	10 मिलीग्राम
एल लाइसिन मोनो हाइड्रोक्लोराइड	=	10 मिलीग्राम

निम्नलिखित परिस्थितियों में माइक्रोटोन का इस्तेमाल करना चाहिएः

1) **छोटे बच्चों में कम विकसित माइक्रोफ्लोरा को विकसित करने के लिएः**
जुगाली करने वाले पशुओं में फरमन्टेसन की प्रक्रिया के बाद बी-कॉम्पलेक्स बनता है, जिससे पशुओं को ताकत मिलती है। जुगली करने वाले पशुओं के छोटे बच्चों का माइक्रोफ्लोरा ज्यादा विकसित नहीं होता। इसलिए बी-कॉम्पलेक्स भी कम बनता है। अतः छोटे बच्चों को ताकत प्रदान करने के लिए माइक्रोटोन अवश्य पिलाना चाहिए ताकि छोटे बच्चों का माइक्रोफ्लोरा विकसित हो जाए।

2) **छोटे बच्चों को पेट के कीड़ों की दवा देने के बादः**
पशुओं के छोटे बच्चों का माइक्रोफ्लोरा ज्यादा विकसित नहीं होता। ऊपर से हमने पेट की कीड़ों की दवा देकर माइक्रोफ्लोरा को और भी तनाव दे दिया। अतः छोटे बच्चों को पेट के कीड़ों की दवा देने के तुरन्त बाद माइक्रोटोन अवश्य पिलाना चाहिए ताकि कम विकसित माइक्रोफ्लोरा का तनाव कम हो जाए।

3) **छोटे बच्चों में वजन बढ़ाने मे लिएः**
अगर पशुपालक नियमित रूप से अपने पशुओं के छोटे बच्चों को माइक्रोटोन पिलायेगें तो उनके बच्चे स्वस्थ रहेगें तथा उनके यहाँ छोटे बच्चों की मृत्यु दर समाप्त हो जाऐगी।

खुराकः
छोटे बच्चों मेंः 10-20 एम. एल.
बड़े पशुओं मेंः 50 एम. एल.

उपलब्धताः
500 एम. एल., 1000 एम. एल. व 5 लीटर

माइक्रोटोनः छोटे बच्चों की संजीवनी

सिमलेज हर्ब्स बोलस

(दूध उतारने के लिए)

पशुओं में दूध उतारने की प्रक्रिया पाँच चरणों में पूरी होती है।

1) पशुओं को दूध उतारने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
2) प्रोत्साहन मिलने के बाद पशु के दिमाग तक सन्देश जाता है।
3) सन्देश मिलने के बाद दिमाग से ऑक्सिटोसिन हार्मोन पैदा होता है।
4) ऑक्सिटोसिन हार्मोन मायोएपिथिलियल कोशिकाओं को प्रभावित करता है।
5) पशु का दूध उतर जाता है।

दूध निकालने की प्रक्रिया पशु को दूध देने के लिए प्रोत्साहित करने से शुरु होती है। जब हम दूध निकालने की तैयारी करते हैं तो कुछ तो पशु हमारी तैयारी देखकर ही अन्दाजा लगा लेता है कि अब दूध देने का समय हो गया है। इसके अलावा पशु को दूध उतारने के लिए कई तरह से प्रोत्साहन मिल सकता है। कुछ पशुओं को यह प्रोत्साहन बच्चे को देखने से या बच्चे को दूध पिलाने से मिलता है। कुछ पशुओं को दूध निकालने से पहले चाट डालने से मिलता है। कुछ पशुओं को दूध निकालने से पहले थनों को मालिश करने से या लेवटी को धोने से प्रोत्साहन मिलता है।

एक बार जब पशु को उसकी आशा के अनुसार प्रोत्साहन मिल जाता है तो उसकी थनों की तंत्रिकाओं के माध्यम से हाइपोथेलेमस तक सन्देश पहुँचता है। सन्देश मिलने के बाद पिटयूटरी ग्रंथि से ऑक्सिटोसिन हार्मोन रीलिज होता है। यह ऑक्सिटोसिन हार्मोन रक्त के माध्यम से प्रवाहित होकर स्तन ग्रंथियों तक पहुँचता है । एल्वियोलस के चारों तरफ मायोएपिथिलियल कोशिकाएँ होती है। ऑक्सिटोसिन हार्मोन इन मायोएपिथिलियल कोशिकाओं को अपना निशाना बनाता है। दूसरे शब्दों में ऑक्सिटोसिन हार्मोन मायोएपिथिलियल कोशिकाओं को प्रभावित करता है जिससे मायोएपिथिलियल कोशिकाओं में संकुचन पैदा होती है। इस संकुचन के फलस्वरूप प्रत्येक एल्वियोलस से दूध निचुड़कर पहले तो छोटी वाहनियों में फिर बड़ी वाहनियों से होते हुए ग्रंथियों की टंकी में आ जाता है। एल्वियोलस से टंकी में दूध निचुड़ कर आने की घटना को ही 'पावस' कहते है।

वाहनियों से होते हुए दूध थन की टंकी में आता है। टंकी से जब दूध नीचे थन में आता है तो दूध के दबाव के कारण थन दूध से भर जाता है। जिससे थन फूल कर मोटा हो जाता है। पावस की प्रक्रिया शुरु होने

के 60 से 90 सेकण्ड के बाद थन दूध से भरकर मोटा हो जाता है। लेवटी से दूध खाली करने तक ऑक्सिटोसिन का प्रभाव जरूरी होता है। अगर पशु में प्रयाप्त मात्रा में या बिल्कुल भी ऑक्सिटोसिन नहीं बनता है तो उसका 80 प्रतिशत तक दूध नहीं निकल पाता है।

कई बार जब पशु दूध नहीं देता है तो हम उसे डराते या पीटते हैं। डराने से या पीटने से पशु के शरीर में एड्रिनेलिन हार्मोन पैदा होता है। एड्रिनेलिन हार्मोन ऑक्सिटोसिन हार्मोन के प्रभाव को कम कर देता है। अतः हमें पशु को डराना या पीटना नहीं चाहिए।

सिमलेज हर्ब्स बोलस उपरोक्त पाँच चरणों को प्रभावित करके पशु की दूध उतारने में मदद करती है। अतः जब पशु किसी भी कारण से दूध नहीं उतारता है तो पशु को सिमलेज हर्ब्स बोलस खिलाकर दूध उतारने को प्रयास करना चाहिए।

सिमलेज हर्ब्स की प्रत्येक बोलस में मिलता है।	
एलिमन्टल कैल्शियम	300 मिलीग्राम
एलिमन्टल फास्फोरस	150 मिलीग्राम
विटामिन ए	6300 आई० यू०
विटामिन डी3	630 आई० यू०
विटामिन एच	100 माइक्रोग्राम
लेप्टाडेनिया रेटिकुलाटा (जीवन्ती)	1800 मिलीग्राम
एसपैरागस रेसमोसस (शतावरी)	500 मिलीग्राम
विदानिया सोम्निफेरा (अश्वगन्धा)	1300 मिलीग्राम
नार्डोस्टैचिस जटामांसी (जटामांसी)	600 मिलीग्राम
राउवोल्फिया सर्पेटिना (शर्पगन्धा)	100 मिलीग्राम
वेलेरियाना वालिची (तगर)	100 मिलीग्राम
ट्राइगोनेला फोनम-ग्रेकम (मेंथी)	1000 मिलीग्राम

जीवन्ती, शतावरी, अश्वगन्धा और मेंथी पशुओं में दूध के निर्माण को बढ़ाती है जबकि जटामांसी, शर्पगन्धा और तगर मानसिक समस्याओं को दूर करके पशु की दूध उतारने मे मदद करती है।

जीवन्तीः- यह पशुओं में दूध के स्त्राव व निर्माण को बढ़ाकर पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है।

शतावरीः- यह पशुओं में दूध के स्त्राव को बढ़ाती है। दुग्ध कोशिकाओं को विकसित करती है। यह खुन में

प्रोलेक्टिन हार्मोन के स्तर को बढ़ाकर पशुओं की दूध उतारने में मदद करती है। साथ में शतावारी दूध ग्रंथियों के कोशकीय विभाजन को भी बढ़ाती है जिससे पशुओं की दूध धारण करने की क्षमता बढ़ जाती है।

अश्वगन्धाः यह पशुओं में दूध के स्त्राव को बढ़ाती है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट गुण होने के कारण यह पशुओं को गर्मी के दुष्प्रभाव से बचाकर पशुओं के प्रदर्शन में सुधार लाती है।

मेथीः मेथी को काफी पुराने समय से दवा के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। यह पशुओं में दूध के स्त्राव के बढ़ाती है। यह शरीर के अन्दर की ग्रंथियों की कार्यप्रणाली में सुधार करके ग्रोथ हार्मोन, थाइरोइड हार्मोन और प्रोलेक्टिन हार्मोन के स्तर को बढ़ाकर पशुओं में दूध बढ़ाती है।

जटामांसीः इसकी मुख्य गतिविधि एंटीऑक्सीडेंट होती है जिससे यह तनाव दूर करती है। यह पशुओं में रोगों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाती है। पशुओं को तसल्ली देती है तथा अवसाद से बचाती है।

शर्पगन्धाः यह पशुओं की मानसिक परेशानियों को दूर करती है। पशुओं को उदासी से बचाती है, चिन्ता को दूर करती है और दूध न उतारने के मानसिक कारणों को दूर करती है।

तगरः यह एंटीऑक्सीडेंट का काम करती है तथा पशु को तनाव में भी कार्य करने के लिए प्रेरित करती है और सूजन को दूर करती है। यह पशुओं की मानसिक परेशानियों को दूर करके पशु की दूध उतारने में मदद करती है।

सिमलेज हर्ब्स का निम्नलिखित परिस्थितियों में अवश्य इस्तेमाल करना चाहिएः

1) • जब पशु मानसिक परेशानियों के कारण दूध न दे जैसे किः
   - बच्चा मर जाने के कारण
   - पशु का स्थान या मालिक बदल जाने के कारण

• जब पशु मानसिक तनाव या घबराहट, के कारण दूध न दे जैसे किः
   - टीकाकरण के कारण
   - मौसम में बदलाव के कारण
   - पशु के इलाज के कारण
   - जब ट्रक में या अन्य किसी वाहन में लेकर जाया जाए

2) जब दूध दुहते समय पशु दूध चढ़ा जाएः जब पशु तनाव में होता है या जब पशु को पीटा जाता है तो पशु की एड्रिनल ग्रंथि से एड्रिनेलिन हॉर्मोन का स्त्राव होता है जो पशु की दूध वाहिनियों में उपस्थित अल्फा एड्रिनोरिसैप्टर पर जुड़ जाता है। जिस से दूध वाहिनियों में सकुंचन पैदा होता है और दूध एल्वियोलाई से दूध की टंकी में नहीं पहुँच पाता और पशु मालिक को लगता है की पशु ने दूध चढ़ा लिया है। कुछ समय बाद जब एड्रिनेलिन हॉर्मोन का प्रभाव कम होता है तो दूध एल्वियोलाई से दूध की टंकी में आ जाता है और पशु मालिक को लगता है की पशु फिर से पावस गया है।

सिमलेज हर्ब्स में उपस्थित जटामांसी, शर्पगन्धा और तगर पशु को शांत रखते हैं जिसकी वजह से एड्रेनेलीन हॉर्मोन रिलिज़ नहीं होता और दूध एल्वियोलस से दूध की टंकी में पहुँच जाता है और पशु दूध नहीं चढ़ाता है। अतः जब पशु दूध चढ़ा जाए या पशु बार-बार पावसता हो तो सिमलेज हर्ब्स बोलस का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए।

3) पशु को ऑक्सिटोसिन इन्जेक्शन से छुटकारा दिलाने के लिएः पशु किसी भी कारण से दूध नहीं उतारता है तो पशुपालक इन्जेक्शन लगाकर दूध निकालने लगता है। लगातार ऐसा अभ्यास करने के कारण पशु ऑक्सिटोसिन इन्जेक्शन का आदी हो जाता है और बगैर टीका लगाए दूध नहीं उतारता। पशु की ऑक्सिटोसिन के टीके की आदत छुड़ाने के लिए पशु को दूध निकालने से 30-45 मिनट पहले दो बोलस सिमलेज हर्ब्स की खिलाएँ और फिर 30-45 मिनट बाद दूध निकालने का प्रयास करें। ऐसा करने से थोड़ी देर बाद पशु पावस जाता है और आप आसानी से दूध निकाल सकते हैं। फिर यही प्रक्रिया शाम को दोहराएँ। इस प्रकार पशु की ऑक्सिटोसिन के टीके की आदत छुड़ा सकते हैं।

4) जब पशु दूध देने में आना-कानी करता हो या पशुपालक द्वारा पीटा जाएः पशु का दुग्धकाल दस महीने का माना गया है। कई बार जब पशु अपने दुग्धकाल के नोवें या दसवें महीने में होता है तो पशु दूध देने में आना-कानी करने लगता है। जब पशु दूध देने में आना-कानी करता है तो पशुपालक उसे डराता, धमकाता या पीटता है। डराने, धमकाने या पीटने के कारण पशु की पिच्यूटरी ग्रंथि से एड्रिनेलिन हॉर्मोन का स्त्राव होता है। एड्रिनेलिन हॉर्मोन, ऑक्सिटोसिन हॉर्मोन के प्रभाव को कम कर देता है। जिसके कारण पशु दूध नहीं उतारता। अतः जब पशु दूध देने में आना-कानी करे तो उसे डराने, धमकाने या पीटने की बजाए सिमलेज हर्ब्स खिलाना चाहिए, ताकि पशु दूध उतारने में सफल हो जाए।

5) जब पशु को दुग्ध प्रतियोगिता में लगाया जाए: कई बार जब पशुपालक अपने पशुओं को दूध प्रतियोगिता के लिए लेकर जाता है तो उसकी गाय/भैंस स्थान बदल जाने के कारण तनाव में आ जाती है और अपना पूरा दूध न देकर कुछ कम दूध देती है। जिसके कारण गाय/भैंस पुरस्कार जीतने में सफल नहीं हो पाती। अतः जब पशुओं को दुग्ध प्रतियोगिता में लगाया जाए तो आप सिमलेज हर्ब्स का इस्तेमाल करें। ताकि स्थान बदल जाने के कारण पशु का तनाव दूर हो जाए और पशु पुरस्कार जीतने में कामयाब हो जाए जिससे पशुपालक को उसकी मेहनत का पूरा फल मिल जाता है।

6) जब पशु को एक राज्य से दूसरे राज्य में लेकर जाया जाए: कई बार जब पशु को एक राज्य से दूसरे राज्य में लेकर जाया जाता है तो वह उतना दूध नहीं देता जितना अपने गृह राज्य में दे रहा था। इसके मुख्यतः दो कारण हैं - पहला तो तनाव के कारण और दूसरा स्थान व मालिक बदल जाने पर मानसिक परेशानी के कारण। सिमलेज हर्ब्स दोनों ही कारणों को दूर करके पशु को गृह राज्य जितना दूध देने के लिए प्रोत्साहित करती है।

जब पशु किसी भी कारण से दूध नहीं उतारता है तो पशुपालक इन्जेक्शन लगाकर दूध निकालने लगता है। लगातार ऐसा अभ्यास करने के कारण पशु ऑक्सिटोसिन इन्जेक्शन का आदि हो जाता है। पशुपालकों को जहाँ तक हो सके वहाँ तक पशु को इन्जेक्शन लगाकर दूध नहीं निकालना चाहिए क्योंकि ऑक्सिटोसिन इन्जेक्शन मानव व पशु दोनों के लिए हानिकारक है। ऑक्सिटोसिन इन्जेक्शन पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (1960) की धारा 12 के तहत प्रतिबंधित है। खाद्य और उपभोज्य पदार्थ मिलावट अधिनियम और औषधि नियंत्रण कानूनों के अनुसार, किसी पंजीकृत चिकित्सक के प्रिस्क्रिप्शन के बिना इसे नहीं बेचा जा सकता है। यह दवा न केवल गायों को जल्दी बांझ बना देती है बल्कि पशु की आयु को भी कम कर देती है।

मेनका गाँधी (पशु-अधिकारों की चैम्पियन) के अनुसार, पशुओं में लगातार ऑक्सिटोसिन के इस्तेमाल से महिलाओं में स्तन और प्रोस्टेट कैंसर हो सकता है। वहीं, डॉक्टर परमिंदर सिंह, एंडोक्राइनोलॉजिस्ट (लुधियाना), ऑक्सिटोसिन के मानव पर होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में सचेत करते हैं, "1990 के दशक में, 16 साल की उम्र में लड़कियों में मासिक धर्म होता था। इस उम्र

में भारी कमी आई है, और आजकल चिंतित माता-पिता हमारे पास आते हैं जब उनकी बेटियों में 9 या 10 साल की उम्र में समय से पहले ही यौवन के लक्षण दिखाई देते हैं। लड़कों में गाइनेकोमेस्टिया (स्तन के आकार में वृद्धि) के मामले सामने आ रहे हैं।" इसके अलावा डॉक्टर शशांक जोशी, एंडोक्राइनोलॉजिस्ट (लीलावती हॉस्पिटल, नई दिल्ली) व डॉक्टर ऊषा श्रीराम, एंडोक्राइनोलॉजिस्ट (चेन्नई) भी ऑक्सिटोसिन इंजेक्शन के मानव पर होने वाले दुष्प्रभाव की पुष्टी करते हैं कि ऑक्सिटोसिन इंजेक्शन एंडोक्राइन सिस्टम को प्रभावित करता है। इसके इस्तेमाल से बच्चों में शारीरिक विकार पैदा होते हैं व पुबरटी की औसत आयु भी कम हो जाती है।

कई बार जब पशु का बच्चा मर जाता है तो पशु मानसिक रुप से परेशान हो जाता है और पशु दूध नहीं उतारता है। इसी प्रकार जब पशु का मालिक बदल जाता है तो भी पशु दूध नहीं उतारता है। दोनों ही परिस्थितियों में सिमलेज हर्ब्स का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि पशु आसानी से दूध उतारने में सफल हो जाए।

ऑक्सिटोसिन इंजेक्शन को ना 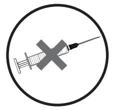 सिमलेज हर्ब्स को हाँ

खुराकः-

दो बोलस सुबह दो बोलस शाम, पाँच दिनों तक

(दूध निकालने से 30 से 45 मिनट पहले)

उपलब्धताः एक डिब्बे में 20 बोलस

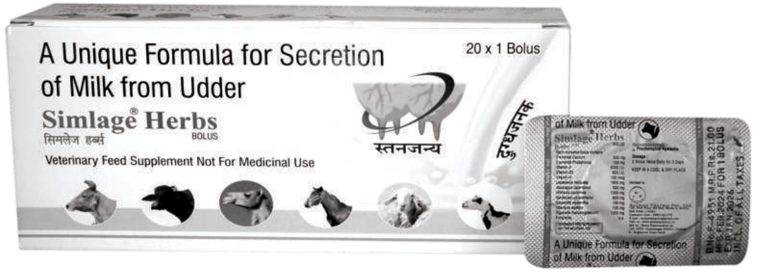

सिमलेज हर्ब्स बोलसः दूध उतारने में सहायक

दूध का रिकार्ड रखने का तरीका

दुधारु पशु का नाम / पहचान: ....

माह:

1		2		3		4		5		6		7		8		9		10	
सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम

11		12		13		14		15		16		17		18		19		20	
सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम

21		22		23		24		25		26		27		28		29		30		31	
सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम

दूध का रिकार्ड रखने का तरीका

दुधारु पशु का नाम / पहचान: ....

माह:

1		2		3		4		5		6		7		8		9		10	
सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम

11		12		13		14		15		16		17		18		19		20	
सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम

21		22		23		24		25		26		27		28		29		30		31	
सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम	सुबह	शाम

गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स

(प्रोटीन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट)

पशुपालक मित्रों, फास्फोरस की शरीर को ज्यादा मात्रा में जरूरत होती है। यह शरीर में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लगभग 80 प्रतिशत फास्फोरस शारीरिक ढ़ाँचे में पाया जाता है। यह हड्डियों और दाँतो का मुख्य घटक होता है और बाकी फास्फोरस प्रोटीन और फैट के साथ पूरे शरीर में विस्तार से फैला होता है। पशुओं में फास्फोरस की कमी की अवस्था में गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स का इस्तेमाल करना चाहिए।

गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स के प्रत्येक 100 ग्राम में मिलता हैः

50 ग्राम प्रोटीन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट

पशुपालक मित्रों, गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स के खास फायदे इस प्रकार हैः-

- गोल्डफोस पशुओं के शरीर में जल्दी अवशोषित होता है, पशुओं को ज्यादा उपलब्ध होता है तथा दाने-चारे में स्थिर रहता है। ग्रेन्यूल्स (दानेदार) होने के कारण गोल्डफोस जमता नहीं है।
- पशुओं में फास्फोरस की कमी को होने से रोकता है तथा फास्फोरस की कमी हो जाने पर उसे दूर (ठीक) करता है।
- पशुओं के पेशाब में रक्त आने से रोकता है। यदि रक्त आने लग जाए तो उसे दूर (ठीक) करता है।
- पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार करता है और उनके शारीरिक विकास को बढ़ाता है।
- प्रोटीन से लेपित होने के कारण पशुओं को उच्च कोटि का बाइपास प्रोटीन प्रदान करता है।
- रुमन के वातावरण पर दुष्प्रभाव नहीं डालता है। जैसा इसका नाम, सोडियम एसिड फास्फेट, वैसा इसका काम। अर्थात् सोडियम एसिड फास्फेट को खिलाने से पशुओं के रुमन की pH एसिडिक (सामान्य से कम) हो जाती है। जब रुमन की pH सामान्य से कम या ज्यादा हो जाए तो फरमन्टेशन की प्रक्रिया सुचारू रूप से नहीं हो पाती है और परिणामस्वरूप पशु अस्थाई तौर पर दाना-चारा छोड़ देता है। इसलिए गोल्डफोस को प्रोटीन से लेपित किया गया है जिससे रुमन में उपस्थित लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु गोल्डफोस पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाते क्योंकि गोल्डफोस सीधा छोटी आँत में अवशोषित होता है। इस प्रकार गोल्डफोस खिलाने से पशु दाना-चारा नहीं छोड़ता है।

निम्नलिखित परिस्थितियों में गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिएः

जब पशुओं के पेशाब में खून आने लग जाएः जब पशु के शरीर में फास्फोरस की बहुत ज्यादा कमी हो जाती है तो

उसके पेशाब में खून आने लगता है। देहात में कहते हैं कि हमारा पशु लाल पेशाब कर रहा है। लाल पेशाब यानि पशु के शरीर में फास्फोरस की बहुत ज्यादा कमी होना। अतः जब भी पशु लाल पेशाब करने लग जाए तो उसे तुरन्त 100 ग्राम गोल्डफोस सुबह-शाम खिलाएँ ताकि पशु के शरीर में फास्फोरस की पूर्ति हो जाए और पशु सामान्य पेशाब करने लग जाए। इसके बाद 1.2 कि०ग्रा० बायोबीऑन गोल्ड में 500 ग्राम गोल्डफोस मिलाकर रोज़ाना 100 ग्राम खिलाएँ ताकि पशुओं में फिर से लाल पेशाब आने की सम्भावना ही समाप्त हो जाए।

जब पशु सामान्य खुराक के अलावा लकड़ी, कपड़ा, मिट्टी या अन्य कोई न खाने योग्य पदार्थ खाने लग जाएः
जब पशु के शरीर में फास्फोरस की बहुत ज्यादा कमी हो जाती है तो वह लकड़ी, कपड़ा, मिट्टी या अन्य कोई न खाने योग्य वस्तु खाने लग जाता है। कुछ पशु दीवार या खोर चाटने लग जाते हैं। जब पशु न खाने योग्य वस्तु खाने लग जाए तो उन्हें तुरन्त गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स खिलाना चाहिए ताकि पशु न खाने योग्य वस्तुएं खाना छोड़ दे।

जब पशु बांझपन का शिकार हो जाएः कैल्शियम और फास्फोरस दो मुख्य खनिज तत्व होते हैं। इनमें से अगर एक भी खनिज तत्व की पशु के शरीर में कमी है तो पशु हीट में नहीं आऐगा। अतः पशुओं के शरीर में कैल्शियम-फास्फोरस की पूर्ति के लिए 1.2 कि०ग्रा० बायोबीऑन गोल्ड में 500 ग्राम गोल्डफोस मिलाकर, इस मिश्रण का 100 ग्राम सुबह-शाम खिलाएँ ताकि पशु के शरीर में कैल्शियम-फास्फोरस की पूर्ति रहे और इन दोनों मुख्य खनिज तत्वों के कारण पशु मे कोई समस्या न आने पाए।

जब पशु मिल्क फीवर में आ जाएः जब पशु मिल्क फीवर में आ जाता है तो हम उसकी नस में कैल्शियम की बोतल लगवाते हैं। आई वी कैल्शियम देने मे बाद अगर हम सावधानी के तौर पर पशु को एक डिब्बा गोल्डफोस का खिला देगें तो पशु की फिर से मिल्क फीवर में आने की सम्भावना ही समाप्त हो जाऐगी और प्रजनन के बाद घटित होने वाले घटनाएँ भी सामान्य रूप से होती रहेंगी।

जब पशु के थनों से दूध अपने आप टपकने लग जाएः ज्यादा दूध देने वाले पशु जब ब्याने के नजदीक होते हैं, तो उनके थनों से दूध अपने आप टपकने लगता है, विषेशकर संकर नस्ल की गाय, क्योंकि दूध के भार के कारण थन की स्फिंकटर मसल ढीली हो जाती है जिससे पशुओं का दूध टपकना शुरु हो जाता है। पशुओं का दूध अपने आप टपकने से रोकने के लिए उन्हें तुरन्त अडर-एच के साथ गोल्डफोस खिलायें ताकि थनों की स्फिंकटर मसल को मजबूती प्रदान हो जाए और आपने आप दूध टपकना बन्द हो जाए।

जब पशु स्वयं का पेशाब पीने लग जाएः कुछ पशुओं में जब फास्फोरस की कमी हो जाती है तो वे अपना

ही पेशाब पीने लग जाते हैं। पशुओं की इस गन्दी आदत को छुड़वाने के लिए उन्हें तुरन्त गोल्डफोस खिलाना चाहिए ताकि वे अपना पेशाब पीना बन्द कर दें।

जब पशु की त्वचा लाल-लाल हो जाएः कई बार जब हम अपने पशुओं को लिक्विड कैल्शियम पिलाते हैं तो कुछ समय बाद लिक्विड कैल्शियम के कारण पशुओं की त्वचा थोड़ी लाल-लाल हो जाती है क्योंकि कुछ लिक्विड कैल्शियम में कैल्शियम-फास्फोरस का सही अनुपात नहीं मिलता है और परिणामस्वरूप पशु की त्वचा लाल-लाल हो जाती है। पशु की त्वचा को एकदम काली स्याह बनाने के लिए उन्हें तुरन्त गोल्डफोस खिलाना चाहिए ताकि ऐसे पशुओं में फास्फोरस की पूर्ति हो जाए और उनकी त्वचा भी काली स्याह हो जाए।

सावधानी के तौर परः 1.2 कि०ग्रा० बायोबीऑन गोल्ड में 500 ग्राम गोल्डफोस मिलाकर 50 ग्राम सुबह-शाम खिलाएँ। ऐसा करने से पशु के शरीर में कैल्शियम-फास्फोरस की कभी भी कमी नहीं होगी और पशु की दिनचर्या सामान्य रूप से जारी रहेगी।

जब पशु को शुगर केन टॉप खिलाया जाएः देहात में, खासकर गन्ना बेल्ट में शुगर केन टॉप का इस्तेमाल हरे चारे के रूप में किया जाता है। शुगर केन टॉप में बहुत कम मात्रा में फास्फोरस होता है जिसके कारण पशु में फास्फोरस की कमी हो जाती है। इसके अलावा शुगर केन टॉप में मेटालिक आयन्स होते हैं जो अन्य दाने-चारे से भी फास्फोरस को अवशोषित नहीं होने देते। अतः जब भी पशु को शुगर केन टॉप खिलाएं तो फास्फोरस की कमी को पूरा करने के लिए गोल्डफोस अवश्य खिलाएं।

खुराकः

बड़े पशुओं मे 100 ग्राम रोज़ाना

छोटे पशुओ में 30 ग्राम रोज़ाना

फीड में मिलाने के लिएः

एक किलोग्राम फीड में 40 ग्राम गोल्डफोस मिलाना है।

उपलब्धताः 500 ग्राम व एक किलोग्राम

गोल्डफोसः पशुओं में फास्फोरस की कमी को दूर करने के लिए प्रोटीन लेपित सोडियम एसिड फास्फेट

अडर-एच गोल्ड

(अयन संबंधित विकारों को दूर करने के लिए)

पशुपालक मित्रों, देहात में पशु की लेवटी देखकर ही पशु की कीमत आंकी जाती है। कई बार आपने देखा होगा कि पशु की लेवटी में कुछ असामान्य कमियाँ आ जाती हैं जैसे की लेवटी का आकार असामान्य होना, लेवटी का शिथिल पड़ जाना, थनों का आकार असामान्य होना या फिर लेवटी पर गहरे रंग के चकते व घाव हो जाना, इत्यादि। पशुपालक पशु के अयन को लेकर बहुत गंभीर होते हैं, इसके बावजूद भी अयन में उपरोक्त विकार आ जाते हैं। अयन में विकार आने का तात्पर्य है दूध उत्पादन में कमी व पशु की मूल कीमत से कम कीमत मिलना। अतः जब भी पशु की लेवटी में कुछ असामान्य विकार दिखाई देने लगें तो अडर-एच गोल्ड का इस्तेमाल करना चाहिए।

अडर-एच गोल्ड विटामिन और ट्रेस मिनरलस युक्त एक प्रभावशाली उत्पाद है। अडर-एच गोल्ड में बाजार में उपलब्ध किसी भी अन्य उत्पाद से ज्यादा विटामिन एच (1200 माइक्रोग्राम) मिलता है जोकि लेवटी में होने वाली सभी समस्याओं व विकृतियों को दूर करके अयन को स्वस्थ बनाता है जिसके परिणामस्वरुप पशु का दूध उत्पादन बढ़ जाता है और पशु की औसत से ज्यादा कीमत पशुपालक को मिलती है।

अडर-एच गोल्ड के प्रत्येक एम०एल० में मिलता हैः

विटामिन एच (बायोटिन)	1200 माइक्रोग्राम
विटामिन ई	800 मिलीग्राम
विटामिन सी	50 मिलीग्राम
विटामिन ए	30,000 आई०यू०
विटामिन डी3	20,000 आई०यू०
क्रोमियम	0.2 मिलीग्राम
सिलेनियम	0.2 मिलीग्राम
जिंक	18 मिलीग्राम
मिथाइलकोबालामिन	1200 माइक्रोग्राम

निम्नलिखित परिस्थितियों में अडर-एच गोल्ड का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिएः

जब लेवटी का आकार असामान्य हो जाएः कई बार पशुओं की लेवटी के अगले व पिछले भाग के आकार में असमानता आ जाती है यानि की एक भाग छोटा व दूसरा भाग आकार में बड़ा लगता है। इस अवस्था में प्रसव से एक महीना पहले अडर-एच गोल्ड का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए जिससे लेवटी सामान्य आकार की हो जाए।

जब लेवटी का आकार सामान्य से छोटा रह जाएः कई पशुओं की लेवटी व थनों का आकार छोटा रह जाता है जिससे दूध उत्पादन कम होता है व थनों से दूध निकालने में भी कठिनाई आती है। अतः पशु के अयन के सम्पूर्ण विकास के लिए अडर-एच गोल्ड का अवश्य इस्तेमाल करना चहिए।

जब पशु के थनों में सूजन आ जाएः यह समस्या पहली या दूसरी बार ब्यानें वाले पशुओं में ज्यादा होती है आमतौर पर प्रसव से पहले अयन में रक्त का प्रवाह अत्यधिक बढ़ जाता है। परन्तु कई बार अत्यधिक रक्त प्रवाह के कारण थनों की बाहरी कोशिकाओं में द्रव्य इक्ट्ठा होने लग जाता है जिसके कारण थनों पर सूजन आ जाती है, इस अवस्था को 'अडर एडिमा' भी कहते हैं। अतः जब भी पशु के थनों में सूजन दिखाई देने लग जाए तो अडर-एच गोल्ड का अवश्य इस्तेमाल करना चहिए। अडर-एच गोल्ड में उपस्थित विटामिन एन्टीआक्सीडेंट का काम करते हैं जिससे थनों की सूजन उतर जाती है।

जब पशु के थनों से लगातार दूध टपकने लग जाएः जब पशु प्रसव के नजदीक होता है तो उनके थनों से दूध अपने आप टपकने लगता है। यह समस्या क्रोस ब्रीड गायों में ज्यादा होती है। पशु के थनों से दूध टपकने का मुख्य कारण है विटामिन एच की कमी होना। विटामिन-एच, किरेटिन को बनाने के लिए आवश्यक है जोकि दूध निकालने के बाद प्लग की तरह काम करता है और थनों से दूध टपकना बंद हो जाता है। अतः इस अवस्था में पशु को अडर-एच गोल्ड अवश्य पिलाना चाहिए।

जब पशु के अयन पर गहरे रंग के चकते बन जाएः प्रसव से 21 दिन पहले व 21 दिन बाद पशु में थनैला रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। थनैला रोग कई प्रकार का होता है। जिसमें से एक है कैलिफोरम मैस्टाइटिस। जिसके कारण अयन पर गहरे रंग के दाग दिखाई देने लगते हैं। जब अयन पर इस तरह के धब्बे दिखाई देने लग जाए तो अडर-एच गोल्ड का अवश्य इस्तेमाल करना चहिए।

जब पशु की लेवटी शिथिल पड़ जाएः कई बार पशु को प्रर्याप्त ड्राई पिरियड न मिल पाने के कारण या अयन के विभाजन व स्थिरता के लिए आवश्यक लिगामैंटस टूट जाने के कारण पशु का अयन शिथिल पड़ जाता है। अतः अयन को पुनः लचीला व सुगठित बनाने के लिए अडर-एच गोल्ड का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए।

जब पशु के बालों व त्वचा में खुरदुरापन आ जाए या मशीन द्वारा दूध निकालने के कारण थनों के रंग में परिवर्तन आ जाए तो अडर-एच गोल्ड का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए।

खुराक :

- बड़े पशुओं में : 10 एम०एल० रोजाना
- छोटे पशुओं में : 2-5 एम०एल० रोजाना

उपलब्धता : 500 एम०एल० व 1 लीटर

अडर-एच गोल्ड - ट्रेस मिनरलस युक्त प्रभावशाली विटामिन सप्लीमेन्ट।

मिनफरलिव

(रक्त की मात्रा बढ़ाने व लिवर को सुरक्षित रखने के लिए)

पशुपालक मित्रों, स्वस्थ बछड़े व बछड़ियाँ भविष्य में लाभ प्राप्त करने की कुंजी होते हैं परन्तु जब छोटे बच्चों कि जरूरत के अनुसार देखभाल नहीं होती है तो वे कमजोर रह जाते हैं। दूसरा, छोटे बच्चे लगभग एक महीने तक तो केवल दूध पर ही निर्भर रहते हैं। दूध को वैज्ञानिक सम्पूर्ण आहार कहते हैं। लेकिन दूध से आयरन नहीं मिलता इसलिए दूध पर निर्भर रहने के कारण छोटे बच्चों में आयरन की कमी हो जाती है। आमतौर पर 1½ महीने से 3 महीने तक की आयु में छोटे बच्चे आयरन और विटामिन सी (एस्कोंबिक एसिड) के सहयोग से रक्त का निर्माण करते हैं लेकिन 3 महीने की आयु तक आते-आते शरीर में संचित सारा आयरन रक्त बनाने में इस्तेमाल हो जाता है जिसके परिणामस्वरुप छोटे बच्चों में आयरन की कमी हो जाती है। आयरन हिमोग्लोबिन बनाने व रक्त की मात्रा को बढ़ाने के लिए आवश्यक होता है। आयरन की कमी के कारण बछड़े/बछड़ियों में एनिमिया हो जाने पर निम्नलिखित लक्षण दिखाई देगें:-

- रक्त की कमी होना
- आँखों में झिल्ली व पेशाब में पीलापन
- थकावट व कमजोरी
- लगातार दस्त लगना

आहार में आयरन की कमी के अलावा लिवर संबंधित विकारों के कारण भी एनिमिया हो सकता है क्योंकि लिवर आयरन के अवशोषण व संग्रहण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। छोटे बछड़े/बछड़ियों का लिवर 1-3 महीने तक पुर्णतः विकसित नहीं हो पाता है जिसकी वजह से शरीर मे आयरन का होमियोस्टेसिस नियंत्रित नहीं हो पाता है। जिसके परिणामस्वरुप बछड़ें/बछड़ियों में रक्त की कमी हो जाती है और पशु एनिमिया का शिकार हो जाता है। छोटे बच्चों में आयरन की पूर्ति व लिवर की देखभाल के लिए मिनफरलिव का इस्तेमाल करना चाहिए।

मिनफरलिव मिनरलस, आयरन व लिवर कोशिकाओं के पुनर्निर्माण करने वाली हर्ब्स का अनोखा मिश्रण है। मिनफरलिव आयरन टॉनिक के साथ-साथ लिवर टॉनिक का भी काम करता है। यह शरीर में रक्त की मात्रा व लिवर की सामर्थ्यता को बढ़ाकर पशु को एनिमिया से बचाता है। अतः छोटे बछड़े/बछड़ियों में आयरन की कमी हो जाने के कारण होने वाली असामयिक मृत्यु दर को घटाने के लिए मिनफरलिव का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए।

मिनफरलिव के प्रत्येक 100 एम०एल० में मिलता है।

आयरन अमाइनो एसिड चिलेट्स	500 मिलीग्राम
कॉपर अमाइनो एसिड चिलेट्स	400 मिलीग्राम
कोबाल्ट अमाइनो एसिड चिलेट्स	200 मिलीग्राम
फोलिक एसिड	1 मिलीग्राम
फाइलैंथस एमबेलिका (आंवला)	500 मिलीग्राम
सिट्रस सिनेसिस (संतरा)	200 मिलीग्राम
बीटा वल्गैरिस (चुकंदर)	200 मिलीग्राम
सिनेमोमम तमाला (तेजपत्ता)	100 मिलीग्राम

निम्नलिखित परिस्थितियों में मिनफरलिव का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए:

एनिमिया: जब छोटे बच्चों में पूरक आहार की आपूर्ति न होने पाए या बछड़ा/बछड़ी केवल दूध के सेवन पर निर्भर हो तो इस अवस्था में बछड़े/बछड़ियाँ एनिमिया का शिकार हो जाते हैं। अतः पशु को एनिमिया से बचाने के लिए मिनफरलिव का इस्तेमाल करना चाहिए।

जब पशु कमजोर व सुस्त रहने लग जाए: जब पशु लंबे समय तक बिमार हो जाता है तो पशु के शरीर में कमजोरी आना स्वाभाविक है जिसके कारण पशु सुस्त रहने लग जाता है। अतः पशु को लंबी बिमारी से ठीक होने के तुरंत बाद मिनफरलिव का इस्तेमाल करना चाहिए ताकि पशु के शरीर से कमजोरी दूर हो जाए।

जब पशु की आँखो के नीचे गहरे रंग के धब्बे बन जाएँ: जब पशु के लिवर में कोई विकार हो जाता है तो हिमोग्लोबिन का निर्माण सुचारु रुप से नहीं हो पाता जिसके परिणामस्वरूप रक्त कोशिकाओं के टूटने से बनने वाले व्यर्थ पदार्थ विभिन्न रास्तों से बाहर निकलने लगते है जैसे की गोबर के रास्ते, पेशाब के रास्ते व आँसुओं के रास्ते। जब ये लाल रंग के व्यर्थ पदार्थ आँसुओं के द्वारा बाहर निकलते है तो आँखों के नीचे गहरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। जब ऐसा कोई लक्षण दिखाई दे तो तुरन्त पशु को मिनफरलिव पिलाएँ जिससे लिवर सुचारु रूप से काम करने लग जाए व हिमोग्लोबिन का निर्माण सामान्य रूप से होने लग जाए।

जब पशु के शरीर में दुर्घटना या आप्रेशन के कारण खून की कमी हो जाए: जब पशु किसी आकस्मिक दुर्घटना का शिकार हो जाए या पशु की सर्जरी की गई हो तो इस अवस्था में रक्त बह जाने के कारण पशु के शरीर में रक्त की भारी कमी हो जाती है। अतः रक्त की कमी को दूर करने के लिए मिनफरलिव का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए।

जब पशु को कोई लिवर संबंधित विकार हो जाएः जब पशु को फैटी लिवर व लिवर सिरोसिस (लिवर की कोशिकाओं पर घाव हो जाना) जैसी समस्या आ जाए तो मिनफरलिव का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए। मिनफरलिव, लिवर कोशिकाओं के पुनर्निर्माण व लिवर की कार्यप्रणाली को सामान्य बनाने में सहायता करता है।

जब पशु को चिचड़िया बुखार आ जाएः जब पशु को चिचड़िया बुखार यानि की बोवाइन एनिमिया हो जाता है तो पशु के शरीर में रक्त की कमी हो जाती है। अतः पशु को रक्त की कमी से उबारने के लिए मिनफरलिव का अवश्य इस्तेमाल करें।

जब छोटे बच्चों को लम्बें समय से दस्त रहनें लग जाएः बछड़े/बछड़ियों में दस्त लगना सामान्य बात है परन्तु कई बार सारे प्रयास कर लेने के बाद भी दस्त की रोकथाम नहीं हो पाती है। इसका सीधा मतलब है कि पशु में खून की कमी हो गई है। जिसके कारण लगातार दस्त लग रहें हैं अतः ऐसी अवस्था में मिनफरलिव का अवश्य इस्तेमाल करना चाहिए।

जब पशु का दूध न बढ़ने पायेः कई बार हम देखते हैं कि पशु की लेवटी तो अच्छी-खासी है परन्तु तमाम प्रयासों के बाद भी पशु का दूध नही बढ़ रहा है तो इसका कारण है पशु के शरीर में रक्त की कमी। 1 लीटर दूध के उत्पादन के लिए 500-600 लीटर रक्त को अयन से गुजरना पड़ता है। जब एक गाय 20 लीटर दूध देती है तो 10,000 से 12,000 लीटर रक्त को अयन से गुजरना पड़ता है। परन्तु जब पशु के शरीर में रक्त की कमी होती है तो रक्त का प्रवाह आवश्यकतानुसार नहीं हो पाता है जिसके परिणामस्वरुप पशु का दूध नहीं बढ़ता है। अतः दुधारु पशु में रक्त की मात्रा पूरी करने व दूध बढ़ाने के लिए मिनफरलिव का अवश्य इस्तेमाल करता चाहिए।

जब पशु लाल पेशाब करने लग जाएः जब पशु लाल पेशाब करने लग जाए तो सबसे पहले उसे 50 ग्राम गोल्डफोस ग्रेन्यूल्स सुबह-शाम खिलाएँ ताकि पशु सामान्य पेशाब करने लग जाए। लाल पेशाब करने के कारण पशु के शरीर में जो रक्त की कमी हो गई है उसे जल्दी पूरा करने के लिए मिनफरलिव पिलाएँ ताकि पशु में जल्द से जल्द रक्त की कमी दूर हो जाए।

जब पशु चाट खाना बंद कर देः देहात में पशुपालकों की यह धारणा है की पशु को जितना ज्यादा चाट, खल या बिनोले खिलाएंगे पशु उतना ही ज्यादा दूध देगा। इसी धारणा के चलते पशुपालक पशु को सामान्य से अधिक चाट खिलाना शुरू कर देता है। चाट में प्रचुर मात्रा में फैट होती है और जब सामान्य मात्रा में पशु को चाट खिलाई जाती है तो पशु का लीवर इस फैट को साथ के साथ ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है। परंतु जब चाट की मात्रा सामान्य से अधिक खिलाई जाती है तो उसमे से फैट भी ज्यादा निकलती है और लीवर इस फैट

को साथ के साथ ऊर्जा में परिवर्तित नहीं कर पाता क्योंकि लीवर की भी काम करने की एक क्षमता होती है। जब लीवर अधिक फैट को ऊर्जा में परिवर्तित नहीं कर पाता तो फैट लीवर पर जमा होने लगती है और पशु फैटी लीवर का शिकार हो जाता है। अतः जब भी पशु चाट, खल या बिनोले खाना छोड़ दे तो पशु को तुरंत मिनफरलिव पिलाएं ताकि पशु फिर से चाट, खल और बिनोले खाना शुरू कर दे।

पशुओं के छोटे बच्चों की मृत्यु दर कम करने के लिएः पशु के छोटे बच्चे आहार के तौर पर पूर्णतः दूध पर निर्भर रहते हैं। दूध में आयरन की मात्रा बहुत कम होती है जिससे पशुओं के छोटे बच्चों में आयरन की कमी हो जाती है और उनकी विकास दर रुक जाती है। इसके अलावा 3 महीने की आयु तक छोटे बच्चों का लीवर भी पूर्णतः विकसित नहीं होता और परिणामस्वरूप पशुओं में रक्त व आवश्यक पोषक तत्वों की कमी हो जाती है और उनका सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता। अतः पशुओं के छोटे बच्चों को 3 महीने तक की आयु तक मिनफरलिव अवश्य पिलाएं ताकि उनमें आयरन की जो कमी है वो पूरी हो जाए।

खुराकः-
छोटे पशुओं मेंः 15-20 मि०लि० दिन में 1 बार
बड़े पशुओं मेंः 40-50 मि०लि० दिन में 1 बार

उपलब्धताः 500 मि०लि०, 1 लिटर व 5 लिटर

मिनफरलिव : पशुओं में रक्त की मात्रा बढ़ाने व लिवर को सुरक्षित रखने के लिए

पशुओं के छोटे बच्चों की देखभाल करने का तरीका

किसी भी डेयरी फार्म की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस फार्म पर छोटे बच्चों की देखभाल सफलतापूर्वक की जाती है या नहीं क्योंकि छोटे बच्चे ही डेयरी फार्म का भविष्य होते हैं। अगर किसी फार्म पर छोटे बच्चों की मृत्यु दर ज्यादा है तो इस बात की पूरी सम्भावना है कि वह डेयरी फार्म नुकसान में ही चल रहा होगा। छोटे बच्चों की जन्म के तुरन्त बाद देखभाल करना आवश्यक है। इसके लिए आपको निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए:

1. छोटे बच्चों का जन्म स्थान सुखा, स्वच्छ और आरामदायक होना चाहिए। बच्चों को अधिक गर्मी व सर्दी से बचाकर साफ जगह पर रखना चाहिए।
2. जन्म के तुरन्त बाद नवजात बच्चों में संक्रमण का खतरा बहुत ज्यादा होता है इसलिए बच्चों को दूषित पदार्थो के संपर्क में आने से बचाना चाहिए। जन्म के 1-2 घण्टे के अंदर ही बच्चों को खीस अवश्य पिलाना चाहिए। इसके लिए जेर गिरने का इंतजार बिल्कुल नहीं करना चाहिए। 1-2 घण्टे के अंदर पिलाया हुआ खीस बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास करता है। बच्चों को उनके वजन का 10 प्रतिशत दूध अवश्य पिलाना चाहिए। उदाहरण के लिए आमतौर पर एक नवजात बच्चा 30 किलोग्राम का तो होता ही है। वजन के अनुसार उन्हें 3 किलोग्राम दूध (1.5 किलोग्राम सुबह व 1.5 किलोग्राम शाम) पिलाना चाहिए। इस बात का ध्यान जरुर रखना चाहिए की पहला दूध पीने के बाद बच्चा लगभग दो घण्टे के अंदर मल त्याग अवश्य कर दें।
3. जन्म के ठीक बाद बच्चों के नाक-मुंह अैर शरीर के ऊपर की जेर या झिल्ली हटा देनी चाहिए।
4. आमतौर पर जच्चा पशु बच्चे को जन्म देते ही उसे जीभ से चाटने लगती है। इससे बच्चे के शरीर को सूखने में आसानी होती है, जिससे बच्चे का तापमान नहीं गिरता, त्वचा साफ हो जाती है और श्वसन तथा रक्त संचार सुचारू रुप से चलने लगता है। इससे माँ और बच्चे का बंधन पनपता है तथा माँ को कुछ लवण और प्रोटीन की भी प्राप्ति हो जाती है।
5. बच्चे की नाभि को शरीर से तीन-चार अंगुली नीचे (2-5 से.मी.) पास-पास दो स्थानों पर सावधानी से मजबूत धागे से बांधे। अब नये ब्लेड या साफ कैंची से दोनों बन्धी हुई जगहों के बीच (शरीर से 1 से.मी. नीचे) नाभि को काट दें। इसके बाद कटी हुई नाभि पर टिंचर आयोडीन या बोरिक एसिड अथवा कोई भी अन्य एंटिबायोटिक अवश्य लगा देना चाहिए।

6. बच्चों के वजन का ब्योरा रखना चाहिए।
7. छोटे बच्चों को जन्म के दसवें दिन 10 एम. एल. मिनवर्म और इसके 21 दिन बाद 20 एम. एल. मिनवर्म पिलाकर उनके पेट के कीड़ों का सम्पूर्ण सफ़ाया कर देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर:-

1, 2, 3	छोटे बच्चों को केवल खीस पिलायें।
4, 5, 6, 7, 8, 9	छोटे बच्चों को केवल दूध पिलायें।
10	→ दसवें दिन 10 एम.एल. मिनवर्म पिलाकर पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें।
11, 12, 13, 14 30	ग्यारहवें दिन से लेकर तीसवें दिन तक 20 एम. एल. माइक्रोटोन प्रतिदिन पिलायें।
31	→ 20 एम.एल. मिनवर्म पिलाकर पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें।
32 45	50 एम.एल. मिनफरलिव प्रतिदिन पिलायें।

मुर्राह भैंस

- स्याह काला रंग।
- सींग छोटे और अधिक मुड़े (रुण्डे) होते हैं।
- पूंछ लम्बी होती है जो टखनों तक लटकती रहती है जिसके निचले हिस्से के कुछ बाल सफेद हो सकते हैं।
- इस नस्ल की भैंसों की लेवटी व थन अच्छी तरह से विकसित होते हैं। पिछले थन सामान्यता आगे वाले थनों से बड़े होते है।
- भैंसों का शरीर भारी भरकम होता है। गर्दन व सिर अपेक्षाकृत हल्के और कूल्हे चौड़े होते हैं।
- शरीर के किसी भी हिस्से पर सफेद रंग के धब्बे नहीं होते।

साहिवाल गाय

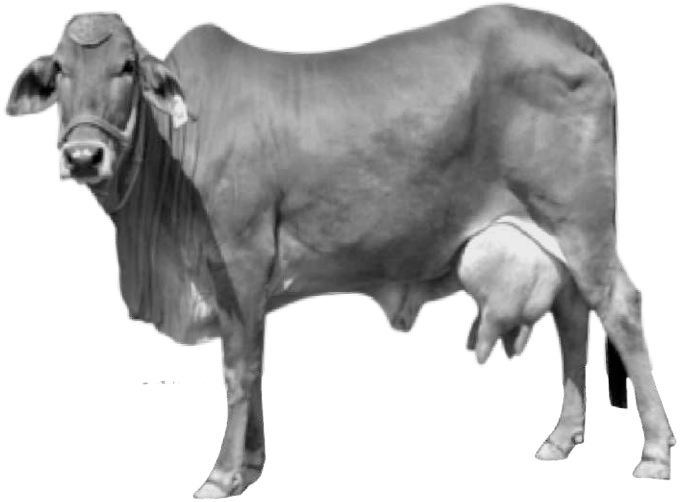

- लाल और गहरा भूरा रंग।
- साहिवाल गाय का सिर चौड़ा सींग छोटी और मोटी तथा माथा मझोला होता है।
- साहिवाल गाय का शरीर लम्बा और मासंल होता है तथा इनकी टाँगे छोटी होती है।
- साहिवाल गाय की पूंछ पतली और छोटी होती है।
- कभी-कभी साहिवाल गाय के शरीर पर सफेद चमकदार धब्बे हो सकते है।

होली के आस-पास पशुओं को हीट में लाने का तरीका

हर पशुपालक चाहता है कि होली से एक महीना पहले या होली के एक महीना बाद उसका पशु नए दूध हो जाए, ताकि उसका पशु अगले साल पूरी गर्मी दूध दे। गर्मियों के मौसम में दूध की कमी महसूस की जाती है। गर्मी शुरु होने से पहले अगर किसी पशु का ब्याँत बनता है तो फिर उस पशु के मुँह मांगे दाम पशु मालिक को मिलते है।

फाल्गुण मास से निवाए दिन शुरु हो जाते हैं। होली का त्यौहार फाल्गुण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। फाल्गुण मास के बाद चैत्र मास आता है। जैसा कि हमारे लोक गीतों में गाया जाता है: **''लाग्या चैत डुलण्डी आई''** चैत्र मास में न ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी। चैत्र के दिन बड़े सुनहरे होते है। प्रभु श्रीराम जी का प्राकट्य भी चैत्र मास में हुआ था। श्री गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखते है:

नौमी तिथि मधु मास पुनीता । सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ।।
मध्यदिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोक विश्रामा ।।

चैत्र के बाद बैसाख मास आता है और बैसाख में अच्छी खासी गर्मी शुरु हो जाती है। इस वजह से पशुओं के हीट में आने का प्रतिशत भी कम हो जाता है। क्योंकि पशुओं की ज्यादातर ऊर्जा रखरखाव में ही खर्च हो जाती है। शरीर की अन्य गतिविधियों के लिए ऊर्जा बचती ही नहीं है। चैत्र के बाद ज्येष्ठ मास आता है। ज्येष्ठ मास में तो गर्मी अपने पूरे यौवन पर होती है इसलिए ज्येष्ठ मास में बहुत कम पशु ही हीट में आते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे- जैसे गर्मी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे पशुओं के हीट में आने की सम्भावना घटती जाती है। यही कारण है कि जो पशु बैसाख तक हीट में नहीं आते, वे फिर चौमासा के साथ ही हीट में आते हैं।

पहला कदम:

पशु के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करना: सबसे पहले मिनफ्लुक-डीएस बोलस देकर अपने पशु के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें। मिनफ्लुक-डीएस की एक बोलस 400 किलोग्राम भार वाले पशु के लिए होती है। अगर आपके पशु का वज़न 400 किलोग्राम से ज्यादा है तो फिर आप अपने पशु को मिनफ्लुक-डीएस बोलस की 1½ या 2 बोलस भी दे सकते हैं। मिनफ्लुक-डीएस बोलस देने के बाद पशु दो दिन तक पतला गोबर करता है। अतः पतला गोबर देखकर आपको घबराना नहीं है। तीसरे दिन से पशु अपने आप सामान्य गोबर करने लगता है।

दूसरा कदम:

चौथे दिन से यूट्राविन एक लीटर की चार खुराक बनाकर रोज़ाना 250 एम० एल० पिलायें। यूट्राविन पशु के जनन अंगो को हीट में आने के लिए तैयार करती है।

तीसरा कदम:

चार प्रोडक्टस को मिलाकर खिलाना: 2.4 किलोग्राम बायोबीऑन गोल्ड में एक किलोग्राम गोल्डफोस, एक किलोग्राम जस्टाप्रोजन पॉउडर तथा इस्ट्रोहर्ब-एम की 12 बोलस कूटकर मिलाएँ और इस मिश्रण का 250 ग्राम सुबह-शाम आठवें दिन से लेकर सोलहवें दिन तक खिलायें। इसके बाद 10 से 12 दिन तक पशु के हीट में आने का इन्तजार करें।

अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने का तरीका

(जब पशु का गर्भपात हो जाए)

जब पशु गर्भावस्था के 42 वें दिन से लेकर 260 वें दिन तक मरा हुआ बच्चा पैदा करता है तो इसे पशु का गर्भपात होना कहते हैं। जब पशु का गर्भपात हो जाता है तो पशु मालिक को बच्चे व दूध दोनों का नुकसान होता है। बच्चा खत्म हो जाने के कारण पशु मालिक को जो नुकसान हुआ है उसको तो नहीं बचाया जा सकता लेकिन दूध के नुकसान की भरपाई की जा सकती है। जब पशु का गर्भपात छठें, सातवें या आठवें महीने में हो जाए तो भी पशु को दूध पर लाया जा सकता है। गाय का गर्भकाल 9 महीने ±9 दिन और भैंस का गर्भकाल 10 महीने ± 10 दिन होता है। अगर पशु का गर्भपात आठवें महीने में होता है तो उसे दूध पर लाना आसान है जबकि अगर पशु का गर्भपात छठें महीने में होता है तो उसे दूध पर लाना अपेक्षाकृत कठिन हो जाता है।

जब पशु का गर्भपात हो जाए तो सबसे पहले यह देखना चाहिए कि पशु का ब्याँत कौन सा है? पहली बार ब्याने वाले पशु को दूध पर लाने के लिए ज्यादा जोर लगाना पड़ता है क्योंकि अभी दूध बनाने वाली ग्रन्थियों में हलचल शुरु हुई ही थी कि पशु का गर्भपात हो गया। वहीं दूसरी या इससे ज्यादा बार ब्याने वाले पशु कि दूध ग्रन्थियों ने पहले दूध बनाया हुआ होता है इसलिए पशु को दूध पर लाने के लिए कुछ कम मेहनत करनी पड़ती है। जब पशु का गर्भपात छठें या सातवें महीने में हो जाए तो हमें दूध निकालने की कोशिश अवश्य करनी चाहिए। कई बार दूध ना आकर पानी जैसा तरल पदार्थ निकलता है। चाहे पानी आए या दूध, पशु को खाली अवश्य करना चाहिए। अतः जब पशु का गर्भपात हो जाए तो नीचे लिखे गए तरीके को अपनाना चाहिए ताकि पशु धीरे-धीरे पूरे दूध पर आ जाए।

पहला कदमः

आमतौर पर पशु के गर्भपात होने का कारण संक्रमण (बीमारी) होता है। अतः जब तक यह संक्रमण ठीक नहीं होगा तब तक पशु दूध से नहीं चलेगा। इसलिए गर्भपात के बाद सबसे पहले यूट्राविन-ओजेड 100-100 एम.एल. तीन दिन तक बच्चेदानी में रखवानी चाहिए ताकि पशु की बच्चेदानी का संक्रमण ठीक हो जाए।

दूसरा कदमः

बच्चेदानी में यूट्राविन-ओजेड रखवाने के साथ-साथ 500 ग्राम एनरबूस्ट पॉउडर सुबह-शाम और सिमलेज हर्ब्स की चार बोलस सुबह-शाम दूध निकालने से 30-45 मिनट पहले केवल दो दिन तक खिलाएँ। एनरबूस्ट पॉउडर पशु को दूध के निर्माण के लिए ऊर्जा प्रदान करता है और सिमलेज हर्ब्स दूध बनाने वाली ग्रन्थियों की वृद्धि और उत्थान करती है जिससे धीरे-धीरे पशु दूध बनाने लगता है।

तीसरा कदमः

तीसरे दिन से 250 ग्राम एनरबूस्ट पॉउडर और सिमलेज हर्ब्स की दो बोलस दूध निकालने से 30-45 मिनट पहले सुबह-शाम पाँच दिनों तक खिलाएँ।

चौथा कदमः

आठवें दिन से 100 ग्राम एनरबूस्ट पॉउडर सुबह-शाम, सिमलेज एक बोलस और डाइजामैक्स फोर्ट दो बोलस सुबह-शाम दस दिनों तक खिलाएँ।

पशु पालन में रखी जाने वाली सावधानियाँ

- पशुओं को, जहाँ तक हो सके, नाल से दवा नहीं देनी चाहिए।
- दूध मुट्ठी से निकालना चाहिए।
- पशुओं को ऑयोडीन युक्त नमक अवश्य खिलाना चाहिए।
- थनैला रोग होने पर तुरन्त नजदीक के डॉक्टर साहब से सम्पर्क करना चाहिए।
- पशुओं को हर तीन महीने बाद पेट के कीड़ों की दवा अवश्य देनी चाहिए।
- नस्ल सुधार के लिए कृत्रिम गर्भाधान का प्रयोग करना चाहिए।
- कोई भी पॉउडर खिलाने से पहले अगर हम पशुओं के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करेंगे तो उस पॉउडर का ज्यादा लाभ मिलता है।
- सम्भव हो तो पशुओं के दूध का रिकार्ड रखना चाहिए। दूध का रिकार्ड रखने का तरीका इस पुस्तिका में बताया गया है।
- कैल्शियम में विटामिन की छोटी शीशी मिलाकर नहीं रखनी चाहिए।
- प्रत्येक महीने पशुओं को खनिज मिश्रण अवश्य खिलाना चाहिए।

अधिक मात्रा में दूध प्राप्त करने का तरीका

(ब्याने से पहले की तैयारी द्वारा)

पशुओं का दूध दो तरीके से बढ़ाया जा सकता है। एक तो जब हमें पता है कि हमारा पशु गाभिन है और ब्याने में एक-दो महीने का समय रह गया है। दूसरा पशु का प्रसव हो चुका है और हम दूध बढ़ाना चाहते हैं। जब पहले से यह ज्ञात हो कि पशु के प्रसव में अभी एक दो महीने का समय है तो हम योजनाबद्ध तरीके से दूध बढ़ा सकते हैं।

पहला कदमः

जब पशु के प्रसव का लगभग एक-दो महीना रह जाए तब आप उसे 10-15 एम.एल. अडर-एच रोज़ाना रोटी पर चुपड़कर प्रसव के समय तक खिलाएँ ताकि उसकी ओहंडी में अगर कोई विकार हो तो वह ठीक हो जाए। अगर कोई विकार न हो तो उसकी बड़ी अच्छी ओहंडी (लेवटी, गादी, अयन, जड़) बन जाए। जब पशु को प्रसव का लगभग 15-20 दिन रह जाएं तब उसे 100 ग्राम रोज़ाना एनरबूस्ट पॉउडर अवश्य खिलाएँ ताकि पशु को बच्चे के विकास के लिए तथा अगले ब्यॉंत में ज्यादा दूध देने के लिए भरपूर ऊर्जा मिल जाए और प्रसव बाद पशु आसानी से जेर डालने में सफल हो जाए।

दूसरा कदमः

प्रसव वाले दिन से आप पशु को 100 एम.एल. यूट्राविन 10 दिनों तक अवश्य पिलायें ताकि पशु पूरी जेर डाल दे और बच्चेदानी की बढ़िया सफाई हो जाए। प्रसव वाले दिन से एक सप्ताह तक एनरबूस्ट पॉउडर 100 ग्राम सुबह-शाम अवश्य खिलाएँ।

तीसरा कदमः

प्रसव के सात दिन बाद मिनफ्लुक-डीएस बोलस से पशु के पेट के कीड़ों का सफ़ाया करें तथा एनरबूस्ट पॉउडर 100 ग्राम प्रतिदिन तीन सप्ताह तक खिलाएँ।

चौथा कदमः

प्रसव के ग्यारहवें दिन से आप पशु को डाइजामैक्स फोर्ट बोलस 2 सुबह 2 शाम तथा सिमलेज बोलस एक सुबह एक शाम दस दिनों तक खिलाएँ ताकि पशु दूध के उच्चतम स्तर पर असानी से पहुँच जाए।

पाँचवा कदमः

प्रसव के एक महीना बाद से बायोबीऑन गोल्ड पॉउडर 50 ग्राम रोज़ाना खिलाएँ ताकि आपका पशु दूध के उच्चतम स्तर को बनाए रखे और समय से हीट में आ जाए।